रांची
सोमवार, 6 जुलाई, 2026
आषाढ, कृष्ण पक्ष, षष्ठी, संवत् 2083
स्थापित: 1991, संस्थापक : बलबीर दत्त
वर्ष: 35, अंक: 230, मूल्य: ₹3
पृष्ठ: 1, कुल पृष्ठ: 12

देश प्राण

सच की ताकत
ESTD. 1991
सत्यस्य शक्तिः सर्वोपरि
contact@deshpran.in | Desh Pran | Desh Pran | Desh Pran | @deshpran | @deshpran | Desh Pran | www.deshpran.com

सुविचार

अगर हर आदमी अपना-अपना सुधार कर ले तो, सारा संसार सुधर सकता है; क्योंकि एक-एक के जोड़ से ही संसार बनता है।

इतिहास के पन्नों में

6 जुलाई

स्मृति दिवस

धीरूभाई अंबानी

जन्म: 28 दिसम्बर, 1932 ई.
मृत्यु: 6 जुलाई, 2002 ई.

धीरजलाल हीराचंद अंबानी भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति थे, जिन्होंने रिलायंस इंडस्ट्रीज की स्थापना की। उन्होंने मात्र दसवीं तक की शिक्षा ग्रहण की थी, पर अपने दृढ-संकल्प के बूते उन्होंने स्वयं का विशाल व्यापारिक और औद्योगिक साम्राज्य स्थापित किया। सिर्फ तीन दशकों में ही उन्होंने अपने छोटे से कारोबार को एक विशाल औद्योगिक कंपनी में बदल डाला। धीरुभाई ने मुख्य रूप से पेट्रो रसायन, दूरसंचार, सूचना प्रोद्योगिकी, ऊर्जा, बिजली, फुटकर, कपड़ा/टेक्सटाइल, मूलभूत सुविधाओं की सेवा, पूंजी बाजार और प्रचालन-तंत्र के क्षेत्रों में कम्पनी का विस्तार किया। धीरुभाई को इक्विटी कल्ट को भारत में प्रारम्भ करने का श्रेय भी जाता है। जब 1977 में रिलायंस ने आईपीओ जारी किया तब 58,000 से ज्यादा निवेशकों ने उसमें निवेश किया था।

बाबा बैद्यनाथ मंदिर में पूर्व की भांति जारी रहेगी स्पर्श पूजा : सभा

देवघर : बाबा बैद्यनाथ मंदिर में स्पर्श पूजा को लेकर चल रही चचाओं के बीच पंडा धर्मरक्षिणी सभा ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा है कि मंदिर में पूर्व की भांति ही स्पर्श पूजा जारी रहेगी और पूजा-पद्धति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया गया है। पंडा धर्मरक्षिणी सभा के वरीय उपाध्यक्ष चंद्र शेखर खबाड़े ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि हाल ही में पंडा धर्मरक्षिणी सभा और जिला प्रशासन के बीच हुई बैठक में श्रावणी मेला की व्यवस्थाओं सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। इनमें बाबा मंदिर में जलार्पण के लिए बाह्य अर्घा की व्यवस्था प्रमुख मुद्दा रही। उन्होंने स्पष्ट किया कि बाह्य अर्घा की व्यवस्था केवल उन श्रद्धालुओं के लिए की जा रही है, जो शारीरिक रूप से असमर्थ हैं, शीघ्र दर्शनम कूपन का खर्च वहन करने में सक्षम नहीं हैं या फिर बुजुर्ग, बीमार, महिलाएं और बच्चे हैं, जिनका उद्देश्य केवल बाबा पर जल अर्पित करना है। खबाड़े ने कहा कि मंदिर की पारंपरिक पूजा-पद्धति, स्पर्श पूजा या अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन, छेड़छाड़ या प्रतिबंध नहीं लगाया गया है।

झारखंड में औद्योगिक विकास को नई रफ्तार

निवेश एवं टेक्सटाइल नीति 2026 का ड्राफ्ट हुआ जारी, मांगे गए सुझाव

8 और 9 जुलाई 2026 को नई दिल्ली में सम्मेलन

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : झारखंड में औद्योगिक विकास को नई गति देने और निवेश के अनुकूल माहौल तैयार करने की दिशा में राज्य सरकार ने अहम पहल की है। उद्योग निदेशालय ने झारखंड टेक्सटाइल, परिधान एवं फुटवियर नीति-2026 तथा झारखंड औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन नीति-2026 का प्रारूप (ड्राफ्ट) सार्वजनिक कर दिया है। सरकार ने दोनों प्रस्तावित नीतियों पर उद्योग जगत, विशेषज्ञों, निवेशकों और आम नागरिकों से सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं आमंत्रित की हैं, ताकि व्यापक परामर्श के बाद इन्हें अंतिम रूप दिया जा सके।

दोनों नीतियों के विस्तृत प्रारूप झारखंड सिंगल विंडो पोर्टल पर उपलब्ध कराए गए हैं। सरकार का उद्देश्य नीति निर्माण की प्रक्रिया में सभी संबंधित पक्षों की भागीदारी सुनिश्चित करना तथा प्राप्त सुझावों के आधार पर नीतियों को अधिक प्रभावी और व्यावहारिक बनाना है। प्रस्तावित नीतियों के माध्यम से घरेलू एवं वैश्विक निवेश आकर्षित करने, औद्योगिक आधार को मजबूत करने, रोजगार के अवसर सृजित करने तथा विशेष रूप से टेक्सटाइल, परिधान और फुटवियर उद्योगों को प्रोत्साहन देने पर जोर दिया गया है।

इसी क्रम में आठ और नौ जुलाई को नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर का हितधारक परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। दो दिवसीय इस कार्यक्रम में देशभर के उद्योगपति, निवेशक, विनिर्माण क्षेत्र के प्रतिनिधि, टेक्सटाइल विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री और विभिन्न औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रस्तावित नीतियों पर विस्तृत चर्चा कर व्यवहारिक सुझाव प्राप्त करना और उद्योग जगत की अपेक्षाओं को समझना है।

नौ जुलाई को आयोजित विशेष फीडबैक सत्र की अध्यक्षता मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन करेंगे। इस दौरान उद्योग जगत के प्रतिनिधियों के साथ राज्य में निवेश की संभावनाओं, औद्योगिक चुनौतियों और प्रस्तावित नीतियों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होगी। सरकार को उम्मीद है कि कार्यक्रम के दौरान कई महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर होंगे, जिससे राज्य में औद्योगिक निवेश को बढ़ावा मिलेगा।

सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि ड्राफ्ट नीतियों को सार्वजनिक करना सरकार की पारदर्शी एवं सहभागी नीति निर्माण प्रक्रिया का हिस्सा है। इससे अंतिम कैबिनेट मंजूरी से पहले विभिन्न हितधारकों के सुझावों को शामिल कर नीतियों को और अधिक प्रभावी तथा निवेशक-अनुकूल बनाया जा सकेगा।

उद्योग निदेशालय के अनुसार, प्रस्तावित नीतियां झारखंड में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहित करने, विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत करने तथा राज्य को औद्योगिक विकास के नए अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं।

आफत की बारिश

महाराष्ट्र के वाटरफॉल में फंसे 100 टूरिस्टों का रेस्क्यू

मुंबई : देश के बड़े हिस्से में मानसून पूरी रफ्तार पकड़ चुका है, जो आज पूरे देश को कवर कर सकता है. उत्तर से लेकर पश्चिम भारत तक मूसलाधार बारिश ने भारी तबाही मचाई है। महाराष्ट्र, गुजरात और बिहार में बाढ़ और जलभराव के चलते जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है।

महाराष्ट्र में रविवार को मानसून का रौद्र रूप देखने को मिला, जहां पर्यटन स्थलों से लेकर शहरों तक सिर्फ पानी का कब्जा नजर आया। रायगढ़ जिले के जेनिथ वाटरफॉल में अचानक जलस्तर बढ़ जाने से करीब 100 टूरिस्ट वहां फंस गए। स्थानीय प्रशासन और रेस्क्यू टीमों ने बेहद सूझबूझ से रस्सी के सहारे सभी 100 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। मुंबई में अलग-अलग इलाकों में आंधी-बारिश से 64 पेड़ धराशायी हो गए और 8 मकानों की दीवारें ढह गईं। कुर्ला वेस्ट में एक दुकान पर पेड़ गिरने से 63 वर्षीय यूनुस कुंडावाला की मौत हो गई। वहीं, आरे कॉलोनी में बाइक पर पेड़ की टहनी गिरने से 18 वर्षीय हसन रजा की जान चली गई।

नवी मुंबई के सीबीडी बेलापुर में मेट्रो पिलर के पास भूस्खलन (लैंडस्लाइड) होने से सड़क पर मलबा आ गया, जिससे ट्रैफिक डायवर्ट करना पड़ा। खराब मौसम के कारण छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर विमानों का संचालन करीब एक घंटे रोकना पड़ा, जिसके चलते इंडिगो की 4 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं और 13 फ्लाइट्स को डायवर्ट किया गया। पुणे के कात्रज इलाके में एक सोसाइटी की चहारदीवारी पार्किंग शेड पर गिर गई, जिससे उसके नीचे 7 कारें और 7 बाइक दब गईं, जबकि एक अन्य घटना में दीवार गिरने से 2 मजदूर घायल हो गए।

उत्तर कोरिया ने नए डिस्ट्रॉयर 'कांग कोन' से रणनीतिक क्रूज मिसाइल का किया परीक्षण

सियोल/प्योंगयांग, 05 जुलाई (हि.स.) : उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग-उन ने नए 5,000 टन वजनी व 140 मीटर लंबे बहुउद्देशीय नौसैनिक डिस्ट्रॉयर 'कांग कोन' से रणनीतिक क्रूज मिसाइल और अन्य हथियार प्रणालियों के परीक्षण का निरीक्षण किया। राष्ट्रपति ने युद्धपोत को दो महीने के भीतर नौसेना में शामिल करने का निर्देश दिया है। साथ ही 10,000 टन क्लास वाले नए स्ट्रेटेजिक युद्धपोतों को भी जल्द लॉन्च करने का वादा किया है।

दक्षिण कोरिया की सरकारी समाचार योनहाप न्यूज व ईरान की सरकारी समाचार प्रेस टीवी की रिपोर्ट के मुताबिक, शुक्रवार को हुए परीक्षणों में रणनीतिक क्रूज मिसाइल, नौसैनिक तोपें, ऑटोमैटिक गन और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध (इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर) प्रणालियों का सफल परीक्षण किया गया।

उत्तर कोरिया का कहना है कि इन परीक्षणों का उद्देश्य युद्ध की स्थिति में डिस्ट्रॉयर पर मौजूद विभिन्न हथियार प्रणालियों के संचालन और उनकी प्रभावशीलता की पुष्टि करना था।

किम जोंग-उन ने देश की युद्ध निरोधक क्षमता और सैन्य ताकत को और मजबूत करने पर जोर देते हुए कहा कि उत्तर कोरिया अपनी राजनीतिक इच्छाशक्ति और सैन्य शक्ति का प्रदर्शन और अधिक स्पष्ट कार्रवाइयों के जरिए करेगा।

वहीं, दक्षिण कोरियाई सेना ने रविवार को कहा कि उसने शुक्रवार को उत्तर कोरिया द्वारा ईस्ट सी (जापान सागर) की दिशा में क्रूज मिसाइल परीक्षण का पता लगाया था। सियोल और वाशिंगटन के सैन्य विशेषज्ञ इन परीक्षणों से जुड़े तकनीकी पहलुओं का विश्लेषण कर रहे हैं। उत्तर कोरिया के सरकारी टीवी द्वारा जारी फुटेज में कई क्रूज मिसाइलों को क्रमवार लॉन्च होते हुए दिखाया गया। 'कांग कोन' डिस्ट्रॉयर को पिछले वर्ष लॉन्च किया गया था। शुरूआती लॉन्चिंग प्रयास के दौरान युद्धपोत पलट गया था, जिसके बाद उसमें सुधार कर दोबारा सफल परीक्षण किए गए।

लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के दो शूटर बहादुरगढ़ में पुलिस मुठभेड़ में ढेर

नई दिल्ली/ बहादुरगढ़ (हरियाणा), 05 जुलाई (हि.स.) : लॉरेंस बिश्नोई-हरिराम उर्फ हैरी बॉक्सर-अनिल पंडित गिरोह के दो इनामी शूटर आज सुबह यहां पुलिस मुठभेड़ में मारे गए। इनकी पहचान प्रवेश और हिमांशु के रूप में हुई है। दोनों हांसी में जिम संचालक कपिल की हत्या में शामिल थे। दोनों पर हरियाणा पुलिस ने एक-एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया था। मुठभेड़ के दौरान स्पेशल सेल का एक सिपाही भी गोली लगने से घायल हो गया। उसका इलाज चल रहा है। इसकी पुष्टि हरियाणा स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) के पुलिस अधीक्षक (एसपी) विक्रांत भूषण ने की। यह सफलता दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल और हरियाणा एसटीएफ के संयुक्त अभियान में मिली।

पुलिस अधिकारी भूषण ने बताया कि हांसी में पिछले महीने जिम संचालक कपिल की दो अज्ञात लोगों ने हत्या कर दी थी। जांच में खुलासा हुआ कि इस हत्याकांड में लॉरेंस बिश्नोई के करीबी शूटर प्रवेश और हिमांशु शामिल हैं।

दिल्ली पुलिस के अनुसार, स्पेशल सेल की काउंटर इंटेलिजेंस टीम को सूचना मिली थी कि एक मामले में वांछित हिसार निवासी प्रवेश और हिमांशु हरियाणा में मौजूद हैं। दोनों हिसार के जिम ट्रेनर कपिल हत्याकांड के आरोपित भी हैं। इस सूचना के आधार पर स्पेशल सेल और हरियाणा एसटीएफ ने संयुक्त अभियान चलाया।

एसपी भूषण ने बताया, पुलिस टीमों ने सबसे पहले इलाके को घेरा। इसके बाद टीमें दोनों को पकड़ने के लिए आगे बढ़ीं। यह देख प्रवेश और हिमांशु ने गोलीबारी शुरू कर दी। आत्मरक्षा में पुलिस टीमों को भी जवाबी फायरिंग करनी पड़ी। भूषण ने कहा, मुठभेड़ के दौरान एक सिपाही के पैर में गोली लगी और चार अन्य अधिकारियों की बुलेटप्रूफ जैकेट पर गोलियां लगीं। दोनों शूटर भी घायल हो गए।

झारखंड में वज्रपात व तेज हवा की चेतावनी, येलो अलर्ट जारी

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : झारखंड की राजधानी रांची सहित राज्य के विभिन्न जिलों में नौ जुलाई तक बारिश, आकाशीय बिजली गिरने और तेज हवा चलने की संभावना है। मौसम विभाग ने इसे देखते हुए येलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने की भी संभावना जताई गई है। मौसम विभाग के अनुसार, राज्य में एक जून से पांच जुलाई तक सामान्य 236.1 मिलीमीटर वर्षा के मुकाबले 129 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है। यह सामान्य से लगभग 45 प्रतिशत कम है। पिछले 24 घंटों के दौरान पश्चिमी सिंहभूम जिले के जगन्नाथपुर में सबसे अधिक 50.4 मिलीमीटर वर्षा रिकॉर्ड की गई। इसी अवधि में राज्य का सर्वाधिक अधिकतम तापमान डाल्टनगंज में 35.5 डिग्री सेल्सियस, जबकि सबसे कम तापमान रांची के नामकुम में 22 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रविवार सुबह रांची और आसपास के क्षेत्रों में हल्की बारिश हुई, जिससे मौसम सुहावना हो गया और लोगों को उमस से राहत मिली।

रविवार को रांची का अधिकतम तापमान 30 डिग्री और न्यूनतम 23.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं जमशेदपुर में अधिकतम 34 डिग्री और न्यूनतम 27.4 डिग्री, डाल्टनगंज में अधिकतम 35.5 डिग्री और न्यूनतम 27.3 डिग्री, बोकारो में अधिकतम 35.1 डिग्री और न्यूनतम 27.1 डिग्री तथा चाईबासा में अधिकतम 31.4 डिग्री और न्यूनतम 24.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

यूक्रेन का रूस पर फिर बड़ा ड्रोन हमला

सेंट पीटर्सबर्ग में तेल रिफाइनरी व सैन्य ठिकानों को बनाया निशाना

मॉस्को/कीव, 05 जुलाई (हि.स.) : यूक्रेन ने बीती रात रूस पर एक और बड़ा ड्रोन हमला किया। एक साथ सैकड़ों ड्रोन छोड़े। यूक्रेन ने सेंट पीटर्सबर्ग के पास तेल रिफाइनरी और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया । रूस के रक्षा मंत्रालय ने माना कि इस हमले में करीब 500 ड्रोन शामिल रहे। यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की ने एक्स पर इस हमले का एक वीडियो भी जारी किया। इसमें सेंट पीटर्सबर्ग के बंदरगाह पर मौजूद एक तेल सुविधा केंद्र से धुएं का बड़ा गुबार उठता दिखाई दे रहा है।

अमेरिकी चैनल एबीसी न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन ने सेंट पीटर्सबर्ग बंदरगाह पर तेल सुविधा केंद्र के साथ-साथ क्रोनस्टेड नौसैनिक अड्डे के आसपास सैन्य ठिकानों पर सफलतापूर्वक हमला किया है। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस हमले में लगभग लंबी दूरी के 500 ड्रोन शामिल रहे। मॉस्को के मेयर ने कहा कि 200 ड्रोन ने रूस की राजधानी को निशाना बनाया। यूक्रेन अब रूस के अंदर तक तेल रिफाइनरी और इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ रक्षा उद्योग केंद्रों पर लगभग रोजाना सफलतापूर्वक हमले कर रहा है। हमलों में वह लंबी दूरी के ड्रोन का प्रयोग कर रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, यूक्रेन के हमलों के बाद रूस के कई इलाकों में ईंधन की कमी हो गई है। लोग गैस स्टेशनों पर लंबी लाइनों में इंतजार करते हुए खुद के वीडियो बना रहे हैं। साथ ही, युद्ध के मैदान में रूस की मुश्किलें बढ़ती हुई दिख रही हैं। मध्यम दूरी के ड्रोन का इस्तेमाल करके यूक्रेन का तेजी से असरदार होता अभियान रूस के लॉजिस्टिक्स को निशाना बना रहा है और कब्जे वाले क्रीमिया में आपूर्ति लाइनों को बाधित करने की कोशिश कर रहा है। क्रीमिया में अधिकारियों ने ईंधन की कमी के कारण इमरजेंसी की स्थिति घोषित कर दी है और यूक्रेनी हमलों के कारण बिजली कटौती के बीच कर्फ्यू लगा दिया है।

इस बीच, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने रात में वर्दी पहनकर एक सैन्य ठिकाने का दौरा किया। रूस की सेना ने शनिवार को दावा किया कि उसने यूक्रेन के पूर्वी डोनबास क्षेत्र में एक अहम रक्षा केंद्र कोस्टियान्टिनिव्का शहर पर कब्जा कर लिया है। अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का कहना है कि अगर यह दावा सच है तो इसे रूस के लिए बड़ी सफलता कहा जा सकता है। यह इस साल मॉस्को की युद्ध के मैदान में पहली बड़ी सफलता होगी।

मतदाता पुनरीक्षण अभियान की समीक्षा को लेकर प्रदेश कांग्रेस की कार्यशाला का आयोजन

एसआईआर प्रक्रिया में पार्टी पदाधिकारी मतदाता पुनरीक्षण फार्म भरवाने का करें कार्य : के राजू

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान की प्रगति और मतदान केंद्रों पर चल रहे कार्यों की समीक्षा के लिए झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने रविवार को रांची स्थित कांग्रेस भवन में प्रदेश स्तरीय समीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया।

जिसमें पार्टी नेताओं ने बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय करने, पात्र मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में सुनिश्चित कराने तथा अभियान की नियमित निगरानी पर विशेष जोर दिया। कार्यशाला की अध्यक्षता प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने की। इसमें झारखंड प्रभारी के. राजू मुख्य अतिथि, जबकि सह-प्रभारी डॉ. श्रीबेला प्रसाद और भूपेंद्र मरावी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। इसके अलावा विधानसभा में विधायक दल के नेता प्रदीप यादव, विधायक दल के उपनेता राजेश कच्छप, विधायक विक्सल कोंगाड़ी, भूषण बाड़ा, सुरेश बैठा, ममता देवी, डॉ. प्रदीप कुमार बालमुचू, बंधु तिर्की सहित कई विधायक, पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यशाला को संबोधित करते हुए झारखंड प्रभारी के. राजू ने कहा कि एसआईआर अभियान को सफल बनाने के लिए पार्टी के सभी पदाधिकारियों और कार्यकताओं को बूथ स्तर तक सक्रिय भूमिका निभानी होगी। उन्होंने जिला कांग्रेस कमेटियों, विधानसभा प्रभारियों, बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) और बीएलए-2 के समन्वय से घर-घर जाकर मतदाता पुनरीक्षण प्रपत्र भरवाने का अभियान तेज करने का आह्वान किया। उन्होंने अभियान के दौरान आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय बनाए रखने और कार्यों की नियमित ऑनलाइन रिपोर्ट प्रदेश नेतृत्व को उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए।

सह-प्रभारी डॉ. श्रीबेला प्रसाद ने कहा कि जिला से लेकर बूथ स्तर तक सभी पदाधिकारियों को अपने दायित्वों का गंभीरता से निर्वहन करना होगा। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची से वंचित न रहे और किसी योग्य मतदाता का नाम अनावश्यक रूप से न हटे। सह-प्रभारी भूपेंद्र मरावी ने कहा कि लोकसभा क्षेत्रों में आयोजित समीक्षा बैठकों में संबंधित सभी पदाधिकारियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने कार्यकताओं से केंद्र सरकार की नीतियों से जुड़े मुद्दों को गांव-गांव तक पहुंचाने और संगठन को मजबूत करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने जिला प्रभारियों और जिलाध्यक्षों को एसआईआर अभियान को पूरी गंभीरता से संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक माह की 15 तारीख को ग्राम पंचायत स्तर पर समीक्षा बैठक आयोजित की जाए तथा प्रदेश नेतृत्व द्वारा जारी दिशा-निदेशों का पूरी निष्ठा के साथ पालन सुनिश्चित किया जाए।

खलारी में विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान तेज, घर-घर पहुंचकर बांटे गए स्व-गणना प्रपत्र

देश प्राण संवाददाता

खलारी/डकरा, 05 जुलाई : खलारी प्रखंड में रविवार को विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत सभी मतदान केंद्र क्षेत्रों में घर-घर जाकर मतदाताओं के बीच स्व-गणना प्रपत्र का वितरण एवं संग्रहण किया गया।

अभियान के दौरान प्राप्त प्रपत्रों का डिजिटाइजेशन भी किया गया। प्रखंड प्रशासन के अनुसार अभियान में बीएलओ, बीएलओ पर्यवेक्षक, बीएलए-2 तथा वालंटियर (शिक्षक) सुबह छह बजे से ही क्षेत्र में सक्रिय रहे। टीमों ने मतदाताओं के घर पहुंचकर स्व-गणना प्रपत्र वितरित किए, भरे हुए प्रपत्र प्राप्त किए तथा उनका डिजिटाइजेशन कराया। इस दौरान 65 कांके विधानसभा क्षेत्र के सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सह खलारी प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रणव अंबष्ट ने विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कर मतदाताओं को विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के प्रति जागरूक किया।

उन्होंने अभियान में लगे कर्मियों को निर्धारित समय सीमा के भीतर त्रुटिरहित कार्य संपन्न कराने के निर्देश भी दिए। अभियान को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रखंड स्तर से रोजगार सेवकों एवं कंप्यूटर ऑपरेटरों की भी प्रतिनियुक्ति की गई, ताकि प्रपत्रों के वितरण, प्राप्ति एवं डिजिटाइजेशन का कार्य समयबद्ध और त्रुटिरहित ढंग से पूरा किया जा सके।

प्रेम प्रसंग में युवती की हत्या का खुलासा, प्रेमी हुआ गिरफ्तार

देश प्राण संवाददाता

बुंडू, 05 जुलाई : दशमफॉल थाना क्षेत्र में 23 जून को मिली अज्ञात युवती की हत्या के मामले का रांची पुलिस ने सफलतापूर्वक खुलासा करते हुए मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस जांच में सामने आया कि हत्या का कारण प्रेम प्रसंग में उत्पन्न ईर्ष्या थी। आरोपी ने युवती को किसी अन्य युवक के साथ देखने के बाद गुस्से में उसकी दुपट्टे से गला घोंटकर हत्या कर दी थी।

पुलिस के अनुसार 23 जून को दशमफॉल थाना क्षेत्र से एक अज्ञात युवती का शव बरामद हुआ था। इस संबंध में दशमफॉल थाना कांड संख्या 06/2026 के तहत भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 103(1), 238 एवं 3(5) के तहत मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए वरीय पुलिस अधीक्षक रांची के निर्देश पर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक के पर्यवेक्षण तथा बुंडू अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष जांच दल का गठन किया गया। टीम ने तकनीकी विश्लेषण, वैज्ञानिक अनुसंधान, गुप्त सूचना और मानवीय साक्ष्यों के आधार पर लगातार जांच करते हुए मामले का खुलासा किया। जांच के दौरान मृतका की पहचान हिरसी कुमारी (18 वर्ष), निवासी बिरबिड़ा, थाना अड़की, जिला खूंटी के रूप में हुई। इसके बाद पुलिस ने उसके संपर्कों और मोबाइल फोन की तकनीकी जांच की। जांच के आधार पर चेतन मुंडा (18 वर्ष), निवासी चापुटबेड़ी, थाना अड़की, जिला खूंटी की संलिप्तता सामने आई, जिसे 4 जुलाई को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि उसका मृतका के साथ प्रेम संबंध था।

भाजपा पिपरवार मंडल की बैठक में छह पंचायतों के लिए प्रभारी नियुक्त

देश प्राण संवाददाता

पिपरवार, 05 जुलाई : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पिपरवार मंडल की संगठनात्मक बैठक रविवार को बचरा पंचायत सचिवालय में मंडल अध्यक्ष रामलाल महतो की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचालन मंडल महामंत्री राजेंद्र प्रसाद ने किया। बैठक में संगठन को पंचायत स्तर तक मजबूत करने की रणनीति पर चर्चा की गयी।

बैठक में सर्वसम्मति से मंडल के अंतर्गत आने वाली छह पंचायतों के लिए प्रभारी नियुक्त किए गए। बेंती पंचायत के लिए लक्ष्मण कुमार मंडल व अरुण उरांव, बहेरा के लिए धनराज भोक्ता व रामप्रसाद महतो, कल्याणपुर के लिए दिलीप अंबष्ट व माधुरी देवी, किचटो के लिए संजय कुमार भोक्ता व राजेंद्र प्रसाद, बचरा उत्तरी के लिए सुखी गंझू व संजय कुमार ठाकुर तथा बचरा दक्षिणी के लिए अनिल पांडे व मुन्ना यादव को जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में सभी पंचायत प्रभारियों को एक सप्ताह के भीतर बूथ समितियों का गठन कर उसकी सूची मंडल को सौंपने का निर्देश दिया गया। साथ ही पंचायतों में ग्रामीणों से संपर्क कर उनकी समस्याओं का सर्वेक्षण करने तथा उसका प्रतिवेदन मंडल को उपलब्ध कराने को कहा गया। बैठक में आगामी 6 जुलाई को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाने का भी निर्णय लिया गया। मौके पर मंडल उपाध्यक्ष सह सांसद प्रतिनिधि लक्ष्मण कुमार मंडल, मंडल उपाध्यक्ष संजय ठाकुर, मंडल कोषाध्यक्ष रामप्रसाद महतो, सांसद प्रतिनिधि धनराज भोक्ता, दिलीप अंबष्ट, रविंद्र सिंह, महामंत्री राजेंद्र प्रसाद, आर्यन कुमार, नीरज गंझू, वासुदेव गंझू, जगदीश महतो आदि मौजूद थे।

बुकबुका और हुटाप में स्वास्थ्य उपकेंद्र निर्माण का शिलान्यास, ग्रामीणों को मिलेगी स्वास्थ्य सुविधा

देश प्राण संवाददाता

खलारी/डकरा, 05 जुलाई : खलारी प्रखंड की बुकबुका और हुटाप पंचायत में ग्रामीण स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत 15वें वित्त आयोग स्वास्थ्य प्रक्षेत्र योजना से बनने वाले नए स्वास्थ्य उपकेंद्र भवनों का शिलान्यास रविवार को कांके विधायक सुरेश बैठा ने किया। इस दौरान जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकताओं और बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

शिलान्यास के बाद विधायक सुरेश बैठा ने कहा कि सरकार का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना है, ताकि लोगों को सामान्य उपचार के लिए दूर-दराज के अस्पतालों पर निर्भर नहीं रहना पड़े। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य उपकेंद्र बनने से गर्भवती महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों तथा अन्य मरीजों को स्थानीय स्तर पर ही प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी, जिससे समय और आर्थिक दोनों की बचत होगी। विधायक ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष बल देते हुए संवेदक को निर्धारित मानकों के अनुरूप पारदर्शिता के साथ कार्य करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं की सफलता गुणवत्तापूर्ण निर्माण पर निर्भर करती है। मजबूत एवं टिकाऊ भवन बनने से क्षेत्र की जनता को लंबे समय तक इसका लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य, शिक्षा और सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं का विकास उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है तथा क्षेत्र के समग्र विकास के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। मौके पर विधायक प्रतिनिधि मंतोष कुमार रजक, जिला परिषद सदस्य सरस्वती देवी, गौरव पांडे, बुकबुका पंचायत के मुखिया पारस उरांव आदि उपस्थित थे।

परिसीमन, लोस-विस की सीटों को बढ़ाने को लेकर पीएम-राहुल गांधी को राजेंद्र प्रसाद ने लिखा पत्र

परिसीमन का विरोध का मतलब पिछड़े, दलित व मुस्लिम-संविधान का विरोध : राजेंद्र प्रसाद

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : मूलवासी सदान के केंद्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद ने आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी को एक पत्र मेल के माध्यम से भेजा है।

पत्र में राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है- झारखण्ड के लोकसभा की सीटों को 14 से बढाकर 28 एवं विधानसभा की सीटों को 81 से 160 किया जाए। अपने पत्र में लिखा है, देश के साथ-साथ झारखण्ड में भी परिसीमन होने जा रहा है, झारखण्ड में 74% गैर जनजाति हैं । जिसमें झारखण्ड के ही 64% मूलवासी सदान हैं। इसमें पिछड़े वर्गों की आबादी लगभग 55 % है, दलित 12 %हैं और बाकी समान्य वर्ग से आते हैं। वर्तमान में झारखण्ड में लोकसभा की 14 सीटें हैं, एवं विधानसभा की 81 सीटें हैं। इसमें विधानसभा कि 28 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। संयुक्त बिहार में अनुसूचित जनजाति आबादी 8.5% थी।

संयुक्त बिहार में विधानसभा की 324 सीटे थी। इस हिसाब से 28 सीटे अनुसूचित जनजाति के लिए झारखण्ड में आरक्षित कर दी गई है।जब वर्ष 2005 परिसीमन आयोग बना, परिसीमन आयोग ने 2001 के जनगणना के अनुसार में पाया कि अनुसूचित जनजातियों कि कुल आबादी 26 प्रतिशत है। इसी के तहत झारखण्ड में विधानसभा की 28 सीटें आरक्षित करने का अनुमोदन केंद्र सरकार से किया, गया है।लेकिन तत्कालीन मनमोहन सिंह की सरकार को झारखण्ड के कुछ नेता ने विधि-व्यवस्था के नाम पर गुमराह किया और परिसीमन लागू होने नहीं दिया। संविधान में संशोधन कर के 2026 तक रोक लगा दिया गया। राजेन्द्र प्रसाद ने बताया है कि परिसिमन लागू नहीं होने से झारखण्ड में रहने वाले पिछड़े, वर्गों एवं दलित और समान्य वर्ग को काफी नुकसान हुआ है ।इसको देखते हुए झारखण्ड के लोकसभा की सीटों को 14 से बढाकर 28 एवं विधानसभा के सीटों को 81 से बढ़ाकर 160 करने का आग्रह प्रधानमंत्री और प्रतिपक्ष की नेता राहुल गांधी से की है। जिससे वैसे समुदायों को भी लोकसभा और विधानसभा में प्रतिनिधित्व करने मौका मिल सके जो आजादी के बाद कभी भी लोकसभा और विधानसभा में प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएं हैं।

उत्साहपूर्वक मना राष्ट्रीय जनता दल का 30 वां स्थापना दिवस

रांची, 05 जुलाई : राष्ट्रीय जनता दल के 30 वें स्थापना दिवस के अवसर पर रविवार को प्रदेश कार्यालय, रांची में राजद के रांची जिलाध्यक्ष धर्मेन्द्र महतो की अध्यक्षता में उत्साहपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पार्टी के प्रदेश पदाधिकारियों, वरिष्ठ नेताओं, कार्यकताओं और समर्थकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय जनता दल की 30 वर्षों की संघर्षपूर्ण यात्रा, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, संविधान की रक्षा और वंचित समाज के अधिकारों के लिए पार्टी के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। वक्ताओं ने कहा कि लालू प्रसाद यादव ने सामाजिक न्याय की जिस विचारधारा को देशभर में नई पहचान दी, उसे तेजस्वी यादव जनसरोकारों और विकास की नई सोच के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। राष्ट्रीय जनता दल हमेशा जनता की आवाज रहा है और आगे भी सामाजिक न्याय और समानता के मूल्यों की रक्षा के लिए संघर्ष करता रहेगा।

शहीद रमेश सिंह मुंडा की पुण्यतिथि पर हॉकी प्रतियोगिता शुरू पहुंचे झामुमो प्रवक्ता सह विधायक प्रतिनिधि मनोज मंडल

देश प्राण संवाददाता

अड़की, 05 जुलाई : अड़की प्रखंड अंतर्गत बोहंडा पंचायत स्थित बोहंडा मैदान में शहीद रमेश सिंह मुंडा की पुण्यतिथि के अवसर पर रविवार से पारंपरिक हॉकी खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। क्षेत्र में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और शहीद रमेश सिंह मुंडा की स्मृति को जीवंत बनाए रखने के उद्देश्य से आयोजित इस प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में खिलाड़ी, खेल प्रेमी एवं ग्रामीण मौजूद रहे।

प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि झामुमो प्रवक्ता सह विधायक प्रतिनिधि मनोज मंडल शामिल हुए। उन्होंने हॉकी स्टिक से गोल कर प्रतियोगिता का विधिवत शुभारंभ किया। इसके बाद खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया और खेल भावना के साथ बेहतर प्रदर्शन करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि खेल युवाओं को अनुशासन, संघर्ष और टीम भावना का पाठ पढ़ाता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए इस प्रकार के आयोजनों का विशेष महत्व है। उद्घाटन मैच कुलट्टा और इचाहातू की टीमों के बीच खेला गया। दोनों टीमों के बीच मुकाबला काफी रोमांचक रहा, लेकिन कुलट्टा की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए इचाहातू को 1-0 से पराजित कर प्रतियोगिता में विजयी शुरूआत की। मैच के दौरान खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर दर्शकों ने तालियों के साथ उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में झामुमो अड़की प्रखंड कोषाध्यक्ष जगदीश मुंडा, प्रखंड सदस्य बुधु मुंडा, पंचायत अध्यक्ष रतन मुंडा, अब्राहम सोए, जिसवन हेंब्रम, सान्दू हेंब्रम, पांडू मुंडा, मंगरा मुंडा, संजय पाहन, सिंगा हेंब्रम सहित कई जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे। आयोजकों ने बताया कि तमाड़ विधायक विकास सिंह मुंडा के सहयोग से पिछले लगभग 20 वर्षों से शहीद रमेश सिंह मुंडा की पुण्यतिथि पर इस हॉकी प्रतियोगिता का लगातार आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर विधायक विकास सिंह मुंडा ने अपने संदेश में कहा कि दक्षिण अड़की क्षेत्र अभी भी अपेक्षित विकास से वंचित है। उन्होंने कहा कि उनका संकल्प दक्षिण अड़की को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है। सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल और बुनियादी सुविधाओं के क्षेत्र में तेजी से कार्य कर क्षेत्र का समग्र विकास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दक्षिण अड़की को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाकर ही उनके पिता शहीद रमेश सिंह मुंडा का सपना साकार होगा।

खबरकोना

झारखंड के पारंपरिक वाद्ययंत्र धीरे-धीरे हो रहे लुप्त

पिस्का नगड़ी, 05 जुलाई : शादी विवाह,मरनी जीनी, पूजा पाठ में बजने वाले झारखंड के पारंपरिक वाद्ययंत्र अब शनै शनै विलुप्त होते जा रहें और अब इनका स्थान आधुनिक वाद्ययंत्र(बैंड और ताशा) ले रहे हैं। अब से लगभग तीस - पैंतीस वर्ष वर्ष पहले झारखंडी वाद्ययंत्र (नगाड़ा,ढोल, शहनाई,भेईर, नरसिंहा) की आवश्यकता घर के विवाह, पूजा सहित अन्य मांगलिक कार्यो में इन पड़तीं थी इनके बिना कार्यक्रम अधुरा माना जाता था। अभी भी पुराने लोग अपने घर के मांगलिक कार्यों में इस टीम को जरूर बुलाते हैं,जब किसी मांगलिक काम से ये धर पहुंचते हैं महिलाएं इनके ढांक नगाड़ा का पूजा अरिपण और सिंदुर से करती हैं।हालांकि अभी बहुत मुश्किल से ये मिलते हैं। बहुत लोग इस पेशे को छोड़ चुके हैं कुछ पुराने लोग ही इससे जुडे हुए हैं।हाल में एक विवाह कार्यक्रम में इस टीम के एक सदस्य राम महली से भेंट हुई, बातचीत दौरान राम महली ने बताया कि हरही गांव में अभी कुल तीन टीमें इस पेशे में लगे हुए हैं, उन्होंने बताया कि वे इस कला को अपने पिताजी और दादाजी जी से सीखे हैं।जब वे शुरू शुरू में बजाना सीखा (लगभग पचास वर्ष पहले)उस समय वैवाहिक कार्यक्रम में टीम का फीस साठ रुपए थे अभी इस टीम का फीस तेरह हजार रुपए दहै।राम महली ढांक बजाते हैं जब कि इनके जुड़वां भाई लक्ष्मण महली ढोल बजाते हैं, इनके टीम में जेठु मसली है जो शहनाई बजाते हैं। टीम के लोग कहते हैं कि हमलोग शायद इस कला के अंतिम पीढ़ी है जो इस कला को बचा कर रखें हुए हैं। महिलाओं का भी कुछ टीम तैयार हो रही हैं। हमारे बच्चे इस लाइन में आना नहीं चाहते हैं उनका ध्यान केवल पढ़ाई में है वे पढ़-लिख कर नौकरी में जाना चाहते हैं। रांची के पश्चिमी क्षेत्र में इस विधा के कलाकार इस पेशे को अपना रहे हैं।इस विधा को अक्षुण्ण रखने और आगे बढ़ाने में सरकार की सहभागिता भी आवश्यक है।

ओझासाइम-मुरुपीरी गांव में नए ट्रांसफार्मर का उद्घाटन

बुढ़मू, 05 जुलाई : प्रखंड के ओझासाड़म में 100 केबीए एवं मुरुपीरी गांव में 63 केबीए का नए ट्रांसफार्मर का उद्घाटन रविवार को मुख्य अतिथि कांके विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि गोपाल तिवारी, प्रखंड विधायक प्रतिनिधि बबलू उरांव, समाज सेवी बलराम यादव सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। इस अवसर पर कांके विधानसभा के विधायक प्रतिनिधि गोपाल तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीणों की सूचना पर कांके विधायक सुरेश कुमार बैठा के पहल पर खराब ट्रांसफार्मर को बदलकर नए ट्रांसफार्मर लगाया गया है, उन्होंने कहा कि कांके विधायक सुरेश बैठा के निर्देश पर आज मैं यहां आकर नए ट्रांसफार्मर का उद्घाटन किया हूं। विधायक प्रतिनिधि गोपाल तिवारी ने बताया कि कांके विधायक सुरेश कुमार बैठा ने कहा है कि विधानसभा क्षेत्र में कहीं पर खराब ट्रांसफार्मर होने की सूचना मिलने पर 24 घंटे में खराब ट्रांसफार्मर को बदलकर नया ट्रांसफार्मर लगाया जाएगा। उद्घाटन के मौके पर अरविंद यादव, चंदन कुमार सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

दशमफॉल में युवती की हत्या का आरोपित खूंटी से गिरफ्तार

रांची, 05 जुलाई : रांची के दशमफॉल इलाके में 23 जून को मिले अज्ञात युवती के शव की गुत्थी पुलिस ने सुलझा ली है। पुलिस ने हत्या के आरोप में खूंटी जिले के एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि प्रेम प्रसंग और ईर्ष्या के कारण आरोपित ने युवती की हत्या कर शव को दशमफॉल क्षेत्र में फेंक दिया था। पुलिस ने आरोपित की निशानदेही पर मृतका और आरोपित के मोबाइल फोन भी बरामद कर लिए हैं। ग्रामीण पुलिस अधीक्षक गौरव गोस्वामी ने रविवार को बताया कि 23 जून 2026 को दशमफॉल इलाके से एक अज्ञात युवती का शव बरामद हुआ था। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने विशेष जांच शुरू की और तकनीकी साक्ष्यों तथा अन्य सुरागों के आधार पर मृतका की पहचान खूंटी जिले के बरिगड़ा गांव निवासी 18 वर्षीय हिस्सी कुमारी के रूप में की। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि हत्या के पीछे प्रेम प्रसंग का मामला था। अनुसंधान में सामने आया कि चेतन मुंडा (18) नामक युवक ने युवती को किसी अन्य युवक के साथ देखकर ईर्ष्या और गुस्से में उसकी हत्या कर दी। हत्या के बाद आरोपित शव को रांची के दशमफॉल इलाके में ले गया और पहचान छिपाने के उद्देश्य से वहां फेंककर फरार हो गया। पुलिस ने तकनीकी जांच और साक्ष्यों के आधार पर आरोपित चेतन मुंडा को खूंटी से गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान उसकी निशानदेही पर पुलिस ने मृतका का मोबाइल फोन तथा आरोपित का मोबाइल फोन भी बरामद कर लिया।

देश प्राण
स्वतंत्र हिन्दी दैनिक
4, तारा टावर, रेडियम रोड, कचहरी चौक, रांची-834001, फोन : 0651-2361181/82
contact@deshpran.in | www.deshpran.com | www.deshpran.in
Desh Pran | Desh Pran | Desh Pran
@deshpran | @deshpran | Desh Pran

सुनी-सुनाई नहीं
केवल प्रामाणिक खबर

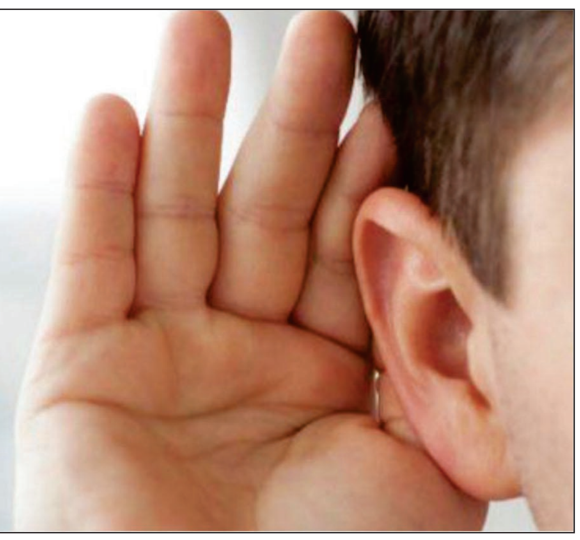

जगन्नाथपुर रथ मेला की तैयारियां तेज

सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन को लेकर पुलिस-प्रशासन ने बनाई व्यापक रणनीति

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : रांची के ऐतिहासिक जगन्नाथपुर रथ मेला की तैयारियां तेज हो गई हैं। श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुचारु यातायात व्यवस्था और भीड़ प्रबंधन को लेकर रविवार को नीलांदरी भवन में पुलिस-प्रशासन की समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें रथ यात्रा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

बैठक में अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) मनोज कौशिक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राकेश रंजन, नगर पुलिस अधीक्षक (सिटी एसपी) पारस राणा, ग्रामीण पुलिस अधीक्षक (रूरल एसपी) गौरव गोस्वामी, यातायात पुलिस अधीक्षक (ट्रैफिक एसपी) राकेश सिंह सहित अन्य पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। एडीजी मनोज कौशिक ने बैठक के दौरान कहा कि पिछले वर्ष रथ मेले में स्वयंसेवकों की भूमिका काफी सराहनीय रही थी। इस बार भी बड़ी संख्या में प्रशिक्षित स्वयंसेवकों की तैनाती की जाएगी। उन्होंने निर्देश दिया कि स्वयंसेवकों की सूची पहले से तैयार कर उनकी जिम्मेदारियां स्पष्ट रूप से निर्धारित की जाएं, ताकि भीड़ नियंत्रण, श्रद्धालुओं के मार्गदर्शन और आपात स्थिति से निपटने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। एडीजी ने बताया कि रथ यात्रा शुरू होने से पहले ही पुलिस बल और स्वयंसेवकों को उनके निर्धारित ड्यूटी प्वाइंट पर तैनात कर दिया जाएगा। भगवान जगन्नाथ के रथ के पूरे मार्ग पर विशेष निगरानी रखी जाएगी। श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग कतारों की व्यवस्था भी की जाएगी। बैठक में प्रशासन ने मेला आयोजन समिति को पांच-पांच स्वयंसेवकों की टीम गठित करने तथा उनके लिए अलग-अलग नियंत्रण केंद्र स्थापित करने का निर्देश दिया। इन नियंत्रण केंद्रों के माध्यम से किसी भी आपात स्थिति में त्वरित समन्वय और राहत कार्य सुनिश्चित किया जाएगा। रथ मेले की सुरक्षा को और मजबूत बनाने के लिए पूरे मेला क्षेत्र में वॉच टावर स्थापित किए जाएंगे। इसके अलावा ड्रोन कैमरों के माध्यम से मेले और रथ यात्रा मार्ग की लगातार निगरानी की जाएगी। महिला श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए पर्याप्त संख्या में महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती की जाएगी, जबकि असामाजिक तत्वों और संदिग्ध गतिविधियों पर विशेष नजर रखने के निर्देश भी दिए गए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मेले की सुरक्षा व्यवस्था के लिए 300 से अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती की जाएगी। साथ ही मोबाइल चोरी और जेबतराशी जैसी घटनाओं पर रोक लगाने के लिए विशेष पुलिस टीम का गठन किया जा रहा है। यह टीम ऐसी घटनाओं पर तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपितों की पहचान और गिरफ्तारी सुनिश्चित करेगी।

गौ-सेवा कर अग्रवाल युवा सभा ने दिया सेवा और संस्कार का संदेश

रांची, 05 जुलाई : रांची अग्रवाल युवा सभा की ओर से रविवार को हरमू रोड स्थित रांची गौशाला (गोकुलधाम) में गौ सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान निर्बल और असहाय गायों को हरी सब्जियां, घास, रोटी और गुड़ खिलाकर उनकी सेवा की गई। इस अवसर पर गौ संरक्षण और गौ सेवा के महत्व को समाज तक पहुंचाने का संदेश भी दिया गया। सभा के प्रवक्ता अमित प्रकाश बजाज ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य सनातन संस्कृति में गौ सेवा की परंपरा और उसके महत्व के प्रति लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि समाज के अधिक से अधिक लोगों को सेवा कार्यों से जोड़ने और गौ संरक्षण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के दानदाता निखिल सुल्तानिया और अनूप टेकरीवाल रहे, जिनके सहयोग से आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

खबर कोना

गुरु नानक सेवक जत्था ने किया नगड़ी गांव की पांडु बस्ती में जरूरतमंद बच्चों के बीच रेनकोट का वितरण

रांची, 05 जुलाई : गुरु नानक सेवक जत्था ने आज पांच जुलाई रविवार को रांची जिला के नगड़ी गांव के अंतर्गत पांडु बस्ती में जरूरतमंद बच्चों के बीच रेनकोट का वितरण किया। जत्था के सदस्य चार पहिया वाहन में वितरण सामग्री लेकर दोपहर तीन बजे पांडु बस्ती पहुंचे और स्थानीय लोगों के सहयोग से जरुरतमंद बच्चों को एक जगह एकत्रित किया और उनके बीच रेनकोट का वितरण किया। बच्चों को जब रेनकोट मिलने की जानकारी मिली तो स्वयं अनुशासित तरीके से कतार लगाकर खड़े हो गए और संयम पूर्वक बारी बारी से जत्था के सदस्यों के हाथों से रेनकोट प्राप्त किया। रेनकोट मिलते ही उनके चेहरे खुशी से चमक उठे। बच्चों समेत स्थानीय लोगों ने जत्था के इस सेवा कार्य की प्रशंसा की और बच्चों ने उन्हें थैंक्यू कर विदा किया।इसमें स्थानीय लोगों का भी भरपूर सहयोग रहा। संस्था के मीडिया प्रभारी नरेश पपनेजा ने बताया कि जत्था द्वारा हर महीने सुदूर बस्तियों में जाकर जरूरतमंदों के बीच आवश्यक सामग्री का वितरण कई सालों से किया जा रहा है, जिसमें कॉपी किताब पेंसिल टिफिन-बॉक्स जूते चप्पल कपड़े कंबल छाता इत्यादि जैसे सामान का वितरण किया जाता है, इसके अलावा अनाथ आश्रम जाकर भी बच्चों की पसंद के व्यंजन उन्हें मुहैया कराए जाते हैं साथ ही समय-समय पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया जाता है। आज के कार्यक्रम में गुरु नानक सेवक जत्था के सूरज झंडई, करण अरोड़ा,पीयूष मिड्ढा,विशेष काठपाल, इनिश काठपाल,वंश डावरा,रूद्र गिरधर,कष मिड्ढा,गीत सचदेवा, अमन डावरा, हर्ष सरदाना, गीतांशु तेहरी, विन्नी खत्री,राकेश घई, रितिक काठपाल, रॉनित मुंजाल,वरुण गेरा समेत अन्य शामिल थे।

अध्यक्ष द्वारा बुलाई गई एसएमसी बैठक को अवैध बताया, विधिक कार्रवाई की चेतावनी

रांची, 05 जुलाई : संत अरविंदो एकेडमी, रांची में एसएमसी बैठक को लेकर विवाद गहरा गया है। अरविंदो एजुकेशन सोसायटी के सचिव-सह-कोषाध्यक्ष एवं सीबीएसई अधिसूचित प्रबंधक राजकुमार साहू ने एसएमसी अध्यक्ष अनुज कुमार साहू को विधिक नोटिस भेजकर 5 जुलाई की प्रस्तावित बैठक को अधिकारातीत, अवैध एवं प्रारंभ से शून्य बताते हुए तत्काल वापस लेने की मांग की है। नोटिस में कहा गया है कि सोसायटी के उपनियमों के अनुसार बैठक बुलाने का अधिकार केवल सचिव को है। साथ ही प्राचार्य की नियुक्ति या पदच्युति का अधिकार भी केवल प्रबंधक को प्राप्त है, इसलिए बैठक के एजेंडे को नियमों के विरुद्ध बताया गया है। राजकुमार साहू ने 24 घंटे के भीतर बैठक रद्द करने, प्राचार्या का कार्यालय खोलने, प्रशासनिक बाधाएं हटाने तथा विद्यालय के अभिलेखों से छेड़छाड़ रोकने की मांग की है। मांगें पूरी नहीं होने पर सीबीएसई, रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटीज, स्थानीय थाना और सक्षम न्यायालय में कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

रांची सिटीजन फोरम ने 47 वार्ड पार्षदों से की मुलाकात

रांची, 05 जुलाई : रांची सिटीजन फोरम ने नगर निगम क्षेत्र की समस्याओं और विकास कार्यों की स्थिति जानने के उद्देश्य से चलाए जा रहे ह्यवार्ड पार्षद मुलाकात अभियानह्ल के तहत रविवार तक नगर निगम के 53 में से 47 वार्ड पार्षदों से उनके-अपने वार्डों में मुलाकात की। फोरम के अध्यक्ष दीपेश निराला के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने पार्षदों को अंगवस्त्र भेंट कर निर्वाचित होने की शुभकामनाएं दीं तथा विभिन्न नागरिक समस्याओं से संबंधित ज्ञापन भी सौंपा। अभियान के दौरान वार्ड पार्षदों ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि चुनाव परिणाम घोषित होने के तीन महीने से अधिक समय बीत जाने के बावजूद उन्हें अब तक मानदेय का भुगतान नहीं किया गया है।

संत अरविंदो अकादमी में एसएमसी का पुनर्गठन, राखी बनी प्रधानाचार्या

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : संत अरविंदो अकादमी में विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) के पुनर्गठन को लेकर रविवार को पूर्व समिति सदस्यों, अभिभावकों और शिक्षकों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से पुरानी विद्यालय प्रबंधन समिति को तत्काल प्रभाव से भंग कर नई एसएमसी का गठन किया गया। इसके बाद सभी सदस्यों की सहमति से राखी मिश्रा को विद्यालय की नई प्रधानाचार्या नियुक्त किया गया।

नई प्रधानाचार्या के चयन के साथ ही विद्यालय के प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यों को नई दिशा देने की उम्मीद जताई गई। विद्यालय प्रबंधन का मानना है कि नए नेतृत्व में शिक्षा की गुणवत्ता, अनुशासन और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को और अधिक मजबूती मिलेगी। विद्यालय के अध्यक्ष अनुज कुमार साहू ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर राखी मिश्रा को नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं।

२२उन्होंने कहा कि विद्यालय हमेशा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। उन्हें विश्वास है कि नई प्रधानाचार्या के नेतृत्व में विद्यालय नई उपलब्धियां हासिल करेगा तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए प्रभावी पहल की जाएगी। बैठक में उपस्थित अभिभावकों, शिक्षकों और नवगठित विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों ने भी राखी मिश्रा का स्वागत करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं।

नवनियुक्त सूचना आयुक्त अनुज कुमार सिन्हा का रांची प्रेस क्लब में अभिनंदन, 'सूचना के अधिकार' पर हुआ संवाद

देश प्राण संवाददाता

रांची, 5 जुलाई : झारखंड के नवनियुक्त सूचना आयुक्त एवं वरिष्ठ पत्रकार अनुज कुमार सिन्हा का रांची प्रेस क्लब की ओर से रविवार को अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर 'सूचना का अधिकार : पारदर्शिता, जवाबदेही और पत्रकारिता' विषय पर संवाद का आयोजन किया गया, जिसमें सूचना के अधिकार कानून की उपयोगिता, पारदर्शिता और लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर विस्तार से चर्चा हुई।

समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ संपादक एवं पद्मश्री सम्मानित बलबीर दत्त ने की। उन्होंने कहा कि सूचना का अधिकार शासन-प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्वीडन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वहां पिछले लगभग 250 वर्षों से सूचना तक पहुंच की व्यवस्था और परंपरा रही है, जिसके कारण वह दुनिया के सबसे पारदर्शी और न्यूनतम भ्रष्टाचार वाले देशों में गिना जाता है।उन्होंने कहा कि अनुज कुमार सिन्हा के पास पत्रकारिता का लंबा और समृद्ध अनुभव है। ऐसे में उनसे अपेक्षा है कि वे सूचना आयुक्त के रूप में अपने दायित्वों और चुनौतियों का सफलतापूर्वक निर्वहन करेंगे।

पूर्व सूचना आयुक्त बैजनाथ मिश्र ने सूचना का अधिकार अधिनियम की विभिन्न धाराओं और उसकी व्यावहारिक उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस कानून के प्रति केवल पत्रकारों ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों में भी व्यापक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में सूचना का अधिकार नागरिकों को सशक्त बनाता है और प्रशासन को अधिक जवाबदेह एवं पारदर्शी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अपने संबोधन में सूचना आयुक्त अनुज कुमार सिन्हा ने कहा कि उन्हें मिली नई जिम्मेदारी केवल उनका व्यक्तिगत नहीं, बल्कि पूरी पत्रकार बिरादरी का सम्मान है। उन्होंने कहा कि सूचना के अधिकार कानून की मूल भावना के अनुरूप पारदर्शिता, जवाबदेही और जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन करने का उनका प्रयास रहेगा। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार रजत गुप्ता, किसलय, प्रकाश सहाय, प्रमोद झा और अजय कुकरेती सहित बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे। रांची प्रेस क्लब की ओर से अध्यक्ष शंभु नाथ चौधरी, सचिव अभिषेक सिन्हा, सह सचिव चंदन भट्टाचार्य, कोषाध्यक्ष कुबेर सिंह, कार्यकारिणी सदस्य संतोष कुमार सिन्हा, राजन बॉबी, प्रतिमा कुमारी, चंदन वर्मा और सौरभ शुक्ला ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके अलावा प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र सोरेन, पूर्व सचिव अमरकांत, पूर्व सचिव अखिलेश सिंह, पूर्व उपाध्यक्ष पिंटू दुबे आदि उपस्थित रहे।

सेवा भारती झारखंड प्रदेश की उच्च स्तरीय बैठक संपन्न, गुरु शरण प्रसाद बोले

मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा

छात्राओं को बांटे गए प्रमाण पत्र, वार्षिकोत्सव की तैयारी शुरू

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई :सेवा भारती, झारखंड प्रदेश के आयाम प्रमुखों की एक महत्वपूर्ण और उच्च स्तरीय बैठक संस्था के न्यासी (ट्रस्टी) गुरुशरण प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में संगठन के विभिन्न सामाजिक और सेवा कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई, साथ ही आगामी योजनाओं का खाका तैयार किया गया।

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य न्यासी गुरुशरण प्रसाद ने 'नर सेवा को नारायण सेवा' का मूल मंत्र दिया। उन्होंने कहा कि मानव सेवा ही वास्तव में ईश्वर की सच्ची आराधना है। संगठन का परम लक्ष्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक मदद पहुंचाना होना चाहिए। इस मौके पर उपस्थित न्यासी चंद्रकांत रायपत ने भी आयाम प्रमुखों का मार्गदर्शन किया और जमीनी स्तर पर सेवा कार्यों को और अधिक प्रभावी व परिणामकारक बनाने पर जोर दिया। प्रांतीय सचिव ऋषि पाण्डेय ने बैठक का कुशल संचालन करते हुए सभी आयामों की प्रगति की समीक्षा की और जरूरी दिशा-निर्देश जारी किए।

इन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित रहेगी भावी रणनीति : बैठक में सेवा भारती के सभी प्रमुख आयामों के प्रदेश प्रमुख उपस्थित रहे, जिन्होंने निम्नलिखित क्षेत्रों में तेजी से कार्य करने का संकल्प लिया:शिक्षा एवं स्वास्थ्यः वंचित और पिछड़े वर्ग के बच्चों की शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ किया जाएगा। स्वावलंबन एवं कौशल विकासः युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नए प्रशिक्षण केंद्रों का विस्तार होगा।वैभवश्री व सुपोषणः महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और समाज को कुपोषण मुक्त बनाने के प्रयास तेज होंगे। किशोरी विकास व सामाजिक संस्कारः किशोरियों के सर्वांगीण विकास के साथ समाज में नैतिक मूल्यों का सिंचन किया जाएगा।आपदा प्रबंधन व प्रचारः आपातकालीन स्थितियों से निपटने की तैयारी और सेवा कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने की रणनीति बनी। प्रमाण पत्र वितरण और वार्षिकोत्सव की तैयारी ' इसके साथ ही सेवा भारती (भाग 4) की ओर से आयोजित एक अन्य विशेष कार्यक्रम में सिलाई प्रशिक्षण केंद्र की सफल छात्राओं को प्रमाण पत्र (डी१३ॢ३१२) देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आगामी वार्षिकोत्सव की तैयारियों को लेकर एक विशेष कार्य समिति का गठन भी किया गया।

इस सत्र की अध्यक्षता उमाशंकर शर्मा ने की। कार्यक्रम के दौरान सचिव विनय लाल समेत सभी शिक्षिकाएं और निरीक्षक मुख्य रूप से मौजूद रहे। बैठक का समापन राष्ट्र की उन्नति और सेवा कार्यों को नई गति देने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

श्री राधा-कृष्ण प्रणामी मंदिर में 273वें अन्नपूर्णा महाप्रसाद का आयोजन

भजन-जागरण में खूब झूमे श्रद्धालु

देश प्राण संवाददाता

रांची, 05 जुलाई : रांची के पुंदाग स्थित एमआरएस श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री कृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवाधाम श्रीराधा-कृष्ण प्रणामी मंदिर में डॉ. संत शिरोमणि स्वामी सदानंद महाराज जी के सानिध्य में 273 वां श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा सेवा महाप्रसाद का श्रद्धापूर्वक आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर भगवान श्री राधा-कृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर मंदिर में श्री राधा रानी जी का दिव्य एवं अलौकिक श्रृंगार आकर्षक आभूषणों एवं मनोहारी पुष्पों से किया गया, दोपहर 12 बजे मंदिर के पुजारी अरविंद कुमार पांडेय द्वारा विधिवत पूजा-अर्चना एवं मंत्रोच्चार के साथ महाप्रसाद का भोग लगाया गया। इसके पश्चात महाप्रसाद में मसालेदार वेजिटेबल खिचड़ी, छाछ, लीची जूस, एवं आलू चिप्स का पैकेट का वितरण श्रद्धालुओं के बीच किया गया। मंदिर परिसर में उपस्थित लगभग 1500 से अधिक श्रद्धालुओं ने श्रद्धापूर्वक महाप्रसाद ग्रहण किया। भक्ति रस से ओत-प्रोत भजन संध्या कार्यक्रम में ट्रस्ट के भजन गायकों द्वारा सुमधुर एवं मनमोहक भजनों की प्रस्तुति देकर उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। भजनों पर श्रद्धालु खूब झूमे तथा पूरा मंदिर परिसर राधे-कृष्ण एवं श्याम के जयकारों से कृष्णमय एवं भक्तिमय हो गया। तत्पश्चात सामूहिक रूप से महाआरती का आयोजन किया गया, ट्रस्ट के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने बताया कि मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा तथा लगभग 4 हजार से अधिक भक्तों ने भगवान के दर्शन किए। उन्होंने बताया कि मंदिर में प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक वेजिटेबल खिचड़ी महाप्रसाद का वितरण किया जाता है, कार्यक्रम को सफल बनाने में- ट्रस्ट के अध्यक्ष डूंगरमल अग्रवाल,उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल,शिव भगवान अग्रवाल, पूरणमल सर्राफ, विशाल जालान, आशुतोष कुमार मिश्रा,पवन पोद्दार, ज्ञान चंद्र शर्मा, अमिता जालान, सिद्धि जालान, सीमा कक्कड़, निमा कक्कड़, अनिल मस्करा, सुनीता मस्करा, सायरा मस्करा, विशाखा जालान,वंदना जालान, अविकल मस्करा सहित अनेक श्रद्धालुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

संक्षिप्त समाचार

रेलवे के भरोसे टला चक्का जाम, मांगें पूरी नहीं हुईं तो होगा आंदोलन

हैदरनगर (पलामू): रेलवे की उपेक्षा के खिलाफ रेल उपभोक्ता समिति ने रविवार को हैदरनगर रेलवे स्टेशन पर धरना दिया। बड़ी संख्या में लोगों ने स्टेशन पर यात्री सुविधाओं की कमी और प्रमुख ट्रेनों के ठहराव नहीं होने पर नाराजगी जताई। आंदोलन के दौरान समिति ने एलसी-50 और एलसी-51 के बीच बाईपास सड़क या ओवरब्रिज निर्माण, गरीब रथ सहित प्रमुख ट्रेनों का ठहराव, ट्रेनों का समय पर संचालन, अतिरिक्त जनरल कोच, गया-रांची रेल सेवा विस्तार, पलामू रेल मंडल की स्थापना और जपला रेल अस्पताल को नियमित करने समेत 15 मांगें रखीं। रेलवे अधिकारियों के साथ वार्ता के बाद धरना समाप्त हुआ। अधिकारियों ने मांगों पर सकारात्मक पहल का आश्वासन देते हुए बारिश के बाद बाईपास सड़क निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने की बात कही।

एंटी क्राइम चेकिंग के दौरान अवैध हथियार के साथ तीन व्यक्ति गिरफ्तार, भेजा गया जेल

✦ तलाशी के क्रम में एक व्यक्ति की कमर से छह राउंड का देसी सिक्सर मिला

देश प्राण संवाददाता

मेदिनीनगर, 05 जुलाई : सदर थाना पुलिस पुलिस ने अवैध हथियार के साथ तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है! इस संबंध में सदर थाना प्रभारी अफजल अंसारी ने बताया कि दिनांक 4 जुलाई दिन शनिवार को समय करीब 7:40 बजे रात्रि में चेक पोस्ट पर नियमित एंटी क्राइम चेकिंग किया जा रहा था।

उसी दौरान दुबीयाखांड के तरफ से एक मोटर साइकिल से संग्धित अवस्था में तीन व्यक्ति सवार होकर आ रहे थें। जिन्हें रुकने का इशारा किया गया, तब वे लोग भागने का प्रयास करने लगें। जिन्हें चेक पोस्ट पर तैनात पदाधिकारी व जवान द्वारा मुस्तैदी एवं सजगता से पकड़ा गया। उन लोगों से भागने का कारण पूछा गया तब वे लोग कुछ नहीं बोलें तब वहां मौजूद जवानों ने तीनों का बारी बारी से तलाशी लिया। तलाशी के क्रम में एक व्यक्ति के कमर से छः राउंड का देसी सिक्सर मिला।

जिसका कागजात की मांग करने पर कोई वैध कागजात प्रस्तुत नहीं किया गया। उसके बाद तीनों का नाम व पता पूछने के बाद उक्त रिवॉल्वर को विधिवत जब्त करते हुए तीनों को गिरफ्तार कर थाना लाया गया। जिसपर सदर थाना कांड संख्या-72/26, दिनांक 4,7,2026 धारा -25(1-बी)(ए)/26/35 आर्म्स एक्ट दर्ज किया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों में (1) प्रकाश कुमार सिंह उम्र 28 वर्ष पिता, स्वर्गीय जवाहिर सिंह, पता ग्राम चियांकी टोला कुसुमटांड़, थाना सदर जिला पलामू, रवि प्रजापति उम्र 23 वर्ष पिता शिवशंकर प्रजापति पता ग्राम चियांकी टोला कुसुमटांड़ थाना सदर जिला पलामू,सुदर्शन सिंह उम्र करीब 50 वर्ष पिता स्वर्गीय देवनन्दन सिंह पता ग्राम चियांकी डीएवी चौक थाना सदर जिला पलामू का नाम शामिल है।

पकड़े गए व्यक्तियों के पास से बरामद हथियार व अन्य सामग्री देसी रिवॉल्वर छः राउंड (सिक्सर), होंडा साइन मोटर साइकल जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर जेएच 03 एजी 3128 हैं। छापामारी दल में शामिल अधिकारी एवं जवान एएसआई बसंत कुमार दुबे, पुलिस जवान श्रवण कुमार मेहता, संजय राम, मनीष कुमार दुबे, शैलेश कुमार शुक्ला सहित अन्य जवान मुख्य रूप से शामिल थे।

खबर कोना

लोजपा ने मनाई रामविलास पासवान की जयंती

मेदिनीनगर (पलामू): लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के कार्यकताओं ने रविवार को पार्टी के संस्थापक और पद्म भूषण स्वर्गीय रामविलास पासवान की जयंती श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई। कार्यक्रम का आयोजन पलामू जिला कार्यालय में किया गया, जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह ने की।कार्यक्रम में नेताओं और कार्यकताओं ने रामविलास पासवान के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उनके जीवन, संघर्ष और सामाजिक न्याय के लिए किए गए कार्यों को याद किया गया। साथ ही पार्टी को गांव-गांव तक मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया। जिला अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह ने कहा कि रामविलास पासवान गरीबों, दलितों और वंचितों की आवाज थे। उनके बताए रास्ते पर चलकर ही समाज और संगठन को मजबूत बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र प्रधान के निर्देश पर पूरे पलामू जिले में जयंती कार्यक्रम आयोजित किए गए।इस मौके पर प्रदेश पदाधिकारी उमेश पासवान, जिला महासचिव मुन्नालाल पासवान, सचिव रामप्रवेश पासवान, दीपक पासवान, रंजीत पासवान, मनीष नंदन मिश्रा, डब्लू पासवान, समीर करण, चंदन सिंघानिया, उदय प्रजापति, विजय सिंह समेत बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

देवरी ओपी पुलिस ने 400 किलो अवैध जावा महुआ किया विनष्ट, शराब बनाने के उपकरण भी किए नष्ट

हुसैनाबाद(पलामू) : हुसैनाबाद अनुमंडल के देवरी ओपी क्षेत्र में अवैध शराब निर्माण के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की। देवरी ओपी प्रभारी राजू गुप्ता के नेतृत्व में पुलिस टीम ने सोन नदी किनारे विभिन्न स्थानों पर छापेमारी अभियान चलाकर करीब 400 किलोग्राम अवैध जावा महुआ बरामद किया, जिसे मौके पर ही विनष्ट कर दिया गया। साथ ही शराब बनाने में प्रयुक्त उपकरणों को भी नष्ट कर दिया गया। देवरी ओपी प्रभारी राजू गुप्ता ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने सोन नदी के किनारे अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी की। कार्रवाई के दौरान बड़ी मात्रा में जावा महुआ और शराब निर्माण में इस्तेमाल होने वाले उपकरण मिले, जिन्हें मौके पर ही नष्ट कर दिया गया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में अवैध शराब निर्माण एवं कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस का अभियान लगातार जारी रहेगा। अवैध गतिविधियों में संलिप्त लोगों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

गोला प्रखंड क्षेत्र में दो योजनाओं का विधायक ने किया शिलान्यास

गोला: विधायक ममता देवी और सांसद प्रतिनिधि ने शनिवार को गोला प्रखंड क्षेत्र में डीएमएफटी मद से दो योजनाओं का शिलान्यास किया। इस दौरान चोकाद स्थित उत्क्रमित उच्च विद्यालय में चार अतिरिक्त कमरा निर्माण कार्य और चक्रवाली उच्च विद्यालय में अतिरिक्त क्लासरूम निर्माण कार्य का विधिवत शिलान्यास किया गया। विधायक ममता देवी ने कहा कि क्षेत्र का विकास हमारी प्राथमिकता है। गांव-गांव में लोगों की सुविधा और समस्याओं को देखते हुए विकास का कार्य किया जा रहा है। इससे पूर्व ग्रामीणों ने फूल माला पहनाकर अतिथियों का स्वागत किया। मौके पर राजीव जायसवाल, कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष संतोष सोनी, विधायक प्रतिनिधि जाकिर अख्तर, मंडल सांसद प्रतिनिधि मंशु बेदिया, भाजपा मंडल अध्यक्ष महेंद्र प्रसाद, मुखिया नुरुल्लाह अंसारी, मगनपुर पंचायत उपमुखिया अकबर अंसारी, गौरी शंकर, विनीत प्रभाकर, मो मसूद इकबाल सहित कई मौजूद थे।

सुतरी गांव में विधायक ममता देवी ने किया नवस्थापित विद्युत ट्रांसफॉर्मर का उद्घाटन

देश प्राण संवाददाता

गोला, 05 जुलाई : गोला प्रखंड के सुतरी गांव में स्थानीय विधायक ममता देवी ने नवस्थापित विद्युत ट्रांसफार्मर का फीता काटकर उद्घाटन किया।

इस मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। ट्रांसफार्मर चालू होने से गांव में बेहतर और सुचारु बिजली आपूर्ति की उम्मीद जताई जा रही है। इससे लो-वोल्टेज की समस्या कम होगी तथा घरेलू उपभोक्ताओं, किसानों, विद्यार्थियों और छोटे व्यवसायियों को राहत मिलने की संभावना है।

उद्घाटन समारोह के दौरान ग्रामीणों ने क्षेत्र में लगातार हो रही बिजली कटौती का मुद्दा भी विधायक के समक्ष उठाया।

उनका कहना था कि ट्रांसफार्मर लगने के बावजूद अनियमित बिजली आपूर्ति से लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। ग्रामीणों ने बताया कि हल्की हवा या मामूली बारिश के बाद भी कई घंटे तक बिजली गुल रहती है और शिकायतों के बावजूद समय पर समाधान नहीं होता।

खतियानी जमीन पर अवैध कब्जा, लगायी गयी न्याय की गुहार

पांकी (पलामू) : पलामू के पांकी थाना क्षेत्र के महुगांई गांव निवासी सुनैन राम ने अपनी पैतृक खतियानी जमीन पर अवैध कब्जा, फर्जी खरीद-बिक्री और जातिसूचक टिप्पणी कर प्रताड़ित किए जाने का आरोप लगाते हुए उपायुक्त पुलिस अधीक्षक समेत वरीय अधिकारियों से न्याय की गुहार लगाई है। आवेदन में उन्होंने कहा कि उनके परदादा स्वर्गीय धुपई भुइयां के नाम दर्ज खाता संख्या 102, प्लॉट संख्या 960 और 961 की खतियानी जमीन पर उनके परिवार का वर्षों पुराना मकान है। आरोप है कि गांव की स्वर्गीय धान कुंवर देवी और उनके पुत्र दामोदर मिश्रा ने निरक्षरता का लाभ उठाकर जमीन की रजिस्ट्री कराई, बाद में अवैध कब्जा कर लिया तथा गलत चौहद्दी दिखाकर जमीन लोगों को बेच दी। पीड़ित ने बेदखली की धमकी, जातिसूचक गाली और फर्जी दस्तावेजों के आधार पर अन्य प्लॉटों पर भी कब्जे का आरोप लगाया है।

नवनिर्मित नहर पुल में दरार, गुणवत्ता के जांच की मांग तेज

देश प्राण संवाददाता

हुसैनाबाद (पलामू),05 जुलाई: उत्तर कोयल सिंचाई परियोजना के तहत हुसैनाबाद प्रखंड की दरुआ बेनी पंचायत स्थित मुख्य नहर (आरडी-84.846) पर निमार्णाधीन पुल-सह-सुपर पैसेज में निर्माण के महज 30 दिनों के भीतर दरारें आने का मामला सामने आया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद ग्रामीणों ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठाते हुए उच्चस्तरीय तकनीकी जांच की मांग की है।ग्रामीणों का आरोप है कि पुल का निर्माण हाल ही में पूरा हुआ था। उनका कहना है कि निर्माण के दौरान सेंट्रिंग के नीचे मिट्टी भरकर कार्य किया गया था। बाद में मिट्टी हटाए जाने के कुछ ही घंटों के भीतर पुल के एक हिस्से में दरारें दिखाई देने लगीं। ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि तकनीकी खामियों को दूर करने के बजाय केवल मरम्मत कर मामले को दबाने का प्रयास किया जा रहा है।ग्रामीणों ने कहा कि उत्तर कोयल सिंचाई परियोजना लाखों किसानों की उम्मीदों से जुड़ी महत्वाकांक्षी योजना है। यदि निर्माण कार्य में गुणवत्ता से समझौता किया गया है तो भविष्य में बड़ा हादसा हो सकता है और सरकारी धन की भी भारी क्षति होगी। उन्होंने दोषी अधिकारियों और संवेदक की जवाबदेही तय करते हुए निष्पक्ष जांच और आवश्यक कार्रवाई की मांग की है।

महुअरी में सड़क विवाद खत्म, मुकदमा वापस लेने पर बनी सहमति

हुसैनाबाद (पलामू): हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के महुअरी गांव में कच्ची सड़क निर्माण को लेकर एक ही परिवार के दो पक्षों के बीच चला आ रहा विवाद ग्रामसभा की पहल से समाप्त हो गया। दोनों पक्षों ने आपसी सहमति से विवाद खत्म करने और दर्ज मुकदमे वापस लेने पर सहमति जताई। ग्रामसभा का लिखित निर्णय हुसैनाबाद थाना को भी सौंप दिया गया है। राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, महुअरी में आयोजित ग्रामसभा की बैठक में निर्णय लिया गया कि प्लॉट संख्या 411, खाता संख्या 181 की उत्तर दिशा में 14 फीट चौड़ी मिट्टी-मोरम सड़क का निर्माण कराया जाएगा। साथ ही जल निकासी की समस्या दूर करने के लिए पाइप लगाकर सोख्ता के पानी की निकासी की व्यवस्था की जाएगी। गौरतलब है कि 26 जून को सड़क निर्माण के दौरान दोनों पक्षों के बीच विवाद हुआ था, जिसके बाद मारपीट, फायरिंग और कार्य बाधित करने के आरोप में हुसैनाबाद थाना कांड संख्या 144/26 एवं 145/26 दर्ज किए गए थे। अब ग्रामसभा की पहल पर दोनों पक्षों ने आपसी मतभेद भुलाकर गांव के विकास को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया।

हाईवा की चपेट में आकर बाइक सवार की मौत, सड़क जाम

देश प्राण संवाददाता

रामगढ़, 05 जुलाई : गिद्दी वाशरी कॉलोनी के समीप रविवार की सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे में हाइवा की चपेट में आने से बाइक सवार एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के विरोध में आक्रोशित ग्रामीणों ने मुआवजे की मांग को लेकर सड़क जाम कर दिया। जानकारी के अनुसार मिश्रा इनमोढ़ा के चूल्हाबेड़ा निवासी सोहन बेदिया और देवनारायण बेदिया बाइक (जेएच 24 ई 9328) से काम करने के लिए बिहार फाउंड्री रांची रोड जा रहे थे। इसी दौरान गिद्दी सी वाशरी कॉलोनी के पास एक हाइवा (जेएच 02बीक्यू 5854) ने उनकी बाइक को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में सोहन बेदिया बाइक सहित हाइवा के चक्के के नीचे फंस गया। स्थानीय लोगों ने काफी मशक्कत के बाद उन्हें बाहर निकाला, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। वहीं गंभीर रूप से घायल देवनारायण बेदिया को गिद्दी में प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रामगढ़ सदर अस्पताल रेफर किया गया। घटना से आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर मृतक के आश्रितों को उचित मुआवजा देने तथा घायल के समुचित इलाज की व्यवस्था करने की मांग की। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझाने का प्रयास किया।

पेंशन शुरू होने के इंतजार में समुचित इलाज नहीं हो सका, सेवानिवृत्त शिक्षक की मौत

देश प्राण संवाददाता

भवनाथपुर (गढ़वा),05 जुलाई: गंभीर बीमारी से जूझ रहे भवनाथपुर के झगराखाड़ निवासी सेवानिवृत्त शिक्षक अखिलेश पाठक की समुचित इलाज के अभाव में शुक्रवार को मृत्यु हो गई। शांत, सौम्य और मृदुभाषी अखिलेश पाठक की असमय मृत्यु से आहत उनकी बेटी कोमल कुमारी ने अपने पिता की मौत का ठीकरा शिक्षा विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों पर फोड़ा है।

कोमल कुमारी ने रोते हुए बताया कि मेरे पिताजी लगभग दो तीन साल से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। परन्तु संवेदनहीन और निर्दयी अधिकारी उन्हें अपना इलाज कराने के लिए भी छुट्टी नहीं देते थे। मेरे पिताजी अपने विद्यालय के एकलौते शिक्षक थे।

उनके स्कूल में किसी अन्य शिक्षक को पढ़ाने के लिए नहीं

भेजा गया था। इस कारण पढ़ाने के अलावा स्कूल का अन्य सारा काम उन्हें अकेले करना पड़ता था। कोमल ने बताया कि लगभग 22 वर्षों तक शिक्षा विभाग में सेवा देने और बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के बावजूद भी सेवानिवृत्ति के अवसर पर शिक्षा विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने उन्हें सम्मानपूर्वक विदाई भी नहीं दिया।

कोमल ने अपने पिता के दर्द को बताते हुए बताई कि सितंबर 2025 में सेवानिवृत्त के बाद नौ महीने बीत जाने के बावजूद भी उनका पेंशन शुरू नहीं हुआ है। जबकि पेंशन का फाइल आगे बढ़ाने के लिए संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपने अपने हिसाब से घूस भी लिया था।

उसके बावजूद भी शिक्षा विभाग के भ्रष्ट, घूसखोर और निर्दयी लोगों को कारण पिताजी का पेंशन शुरू नहीं हो सका। कोमल ने बताया कि डाक्टरों ने उन्हें दिल्ली के एम्स में ईलाज कराने का सलाह दिया था। परन्तु पेंशन शुरू नहीं होने के कारण पैसा के अभाव में उनका समुचित इलाज नहीं हो सका।

अगर समय से मेरे पिताजी का पेंशन शुरू हो जाता तो उनका सही ढंग से इलाज होता और आज वे जिंदा होते। उसने कहा कि प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी और अन्य संबंधित लोगों के कारण मैं अनाथ हो गई। कोमल ने जिले के उपायुक्त पशुपतिनाथ मिश्रा से पेंशन शुरू कराने और भ्रष्ट एवं घूसखोर अधिकारियों, कर्मचारियों के विरुद्ध समुचित कार्रवाई करने का अनुरोध की है।

ऋत्विज समाज के तहत हुआ शकुंतला देवी मेमोरियल छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम

देश प्राण संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू),05 जुलाई : पलामू ऋत्विज समाज के तत्वावधान में स्थानीय निवार्णा होटल में रविवार को आयोजित स्व लक्ष्मण शुक्ला- स्व शिव कुमारी देवी, स्व आरएपी चौबे- स्व सकुंतला देवी मेमोरियल छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी 19 छात्र -छात्राओं के बीच छात्रवृत्ति वितरण किया गया। छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मेदिनीनगर सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय पाण्डेय उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ऋत्विज समाज के अध्यक्ष रजनीकांत पांडेय व संचालन राजीव रंजन पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मेदिनीनगर सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय पाण्डेय ने कहा कि बहुत खुशी है कि ऋतिक समाज आर्थिक रूप से कमजोर व मेधावी छात्र- छात्राओं की पढ़ाई करने में आर्थिक सहायता छात्रवृत्ति के रूप में दे रही है। कहा कि माता पिता के ही पुण्य से बच्चे आगे बढ़ते हैं। हर मनुष्य को अपने जन्म लेने का उद्देश्य होना चाहिए। जीवन में कुछ कर गुजरने का जज्बा नहीं है तो वह जीवन बेकार है।

मौके पर ऋत्विज समाज के मुख्य संरक्षक डॉ अरुण शुक्ला ने कहा कि ऋत्विक समाज को बढ़ाने के लिए समाज के सभी लोग आगे आएं। मंदिरों में केवल दान करने से समाज का विकास नहीं होगा। आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग ऋत्विज समाज के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को सहायता करें। कार्यक्रम में ऋत्विज समाज के अध्यक्ष रजनीकांत पाण्डेय व सचिव मणिकांत उपाध्याय ने कहा कि ऋत्विक समाज आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्र- छात्राओं को जो छात्रवृत्ति दे रही है।

उसका श्रेया डॉ अरुण शुक्ला को जाता है। उन्हीं को मार्गदर्शन में ऋत्विक समाज आगे बढ़-चढ़कर कार्य कर रही है। ऋत्विज समाज ज्यादा से ज्यादा छात्रवृत्ति देने के लिए कृतसंकल्प व प्रयासरत है।

मौके पर सेवानिवृत्त अंचलाधिकारी संतोष शुक्ला, दीनानाथ तिवारी, ऋत्विक समाज के सचिव मणिकांत उपाध्याय, ब्रजेश शुक्ला, विभाकर पाण्डेय, देवेन्द्र तिवारी, सुनील तिवारी, बलराम पाण्डेय, बलराम तिवारी, दीपक तिवारी, नवनीत कुमार सुंदरम, कृष्ण उपाध्याय, धीरेंद्र नारायण उपाध्याय सहित बड़ी संख्या में ऋत्विक समाज के लोग उपस्थित थे।

विधायक ने भरा गणना प्रपत्र समय पर जमा करने की अपील

देश प्राण संवाददाता

मेदिनीगर (पलामू), 05 जुलाई : विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत रविवार को चैनपुर प्रखंड के मझिगांवां गांव में आयोजित कार्यक्रम में सदर एसडीओ सह निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी संजय पांडेय की मौजूदगी में स्थानीय विधायक आलोक कुमार चौरसिया ने अपना गणना प्रपत्र भरकर जमा किया।

जिला परिषद सदस्य रामलव चौरसिया ने भी प्रपत्र भरकर जमा किया, जिसके बाद उसका तत्काल डिजिटाइजेशन किया गया। एसडीओ संजय पांडेय ने बताया कि अभियान का उद्देश्य मतदाता सूची को त्रुटिरहित और अद्यतन बनाना है। उन्होंने सभी पात्र मतदाताओं से समय पर गणना प्रपत्र भरकर संबंधित बीएलओ के पास जमा करने तथा अभियान में सहयोग करने की अपील की। विधायक आलोक कुमार चौरसिया ने भी मतदाताओं से स्वयं प्रपत्र भरकर हाथों-हाथ बीएलओ को सौंपने का आग्रह किया, ताकि मतदाता सूची का शुद्धीकरण समय पर पूरा हो सके। कार्यक्रम में अंचल पदाधिकारी सत्यम कुमार, बीएलओ रूबी कुमारी, कंप्यूटर ऑपरेटर नीरज तिवारी, चितरंजन दुबे आदि उपस्थित रहे।

➡ पलामू हॉस्पिटल ने किया फ्री मेडिकल कैंप का आयोजन

200 से अधिक मरीजों की निःशुल्क जांच की गई

देश प्राण संवाददाता

छतरपुर, 05 जुलाई : छतरपुर में पलामू हॉस्पिटल के द्वारा हर रविवार की तरह इस रविवार को भी फ्री मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया।

जिसमें करीब 200 से अधिक मरीजों का जांच किया गया। इस फ्री मेडिकल कैंप में मुख्य चिकित्सक के रूप में हड्डी एवं नस रोग विशेषज्ञ डॉक्टर एस के रवि तथा अन्य चिकित्सकों में डॉ. संतोष कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. मिथिलेश कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

डॉक्टर मिथिलेश कुमार ने बताया कि इस फ्री मेडिकल कैंप के आयोजन से सुदूरवर्ती इलाके में रहने वाले लोगों के साथ-साथ गरीब असहाय लोगों को भी लाभ मिलता है।

उन्होंने बताया कि मानव सेवा ही असली मानव धर्म है। अब हर रविवार को पलामू हॉस्पिटल के द्वारा फ्री मेडिकल कैंप का आयोजन किया जा रहा है और आगे भी यह फ्री मेडिकल कैंप का आयोजन चलता रहेगा।

बताया कि अगले रविवार को होने वाला स्वास्थ्य शिविर में नाक,कान, गला रोग विशेषज्ञ डॉ. उज्जवल दुबे मुख्य चिकित्सा के रूप में उपस्थित रहेंगे। मौके पर अस्पताल के डायरेक्टर रवि राज उर्फ दीपक ने बताया कि फ्री मेडिकल कैंप का सिलसिला हर रविवार को चलता रहेगा।

चतरा उपायुक्त ने बिरहोर कॉलोनी और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण

✦ लावालौंग में एसआईआर-2026 के गणना कार्य का लिया जायजा

देश प्राण संवाददाता

चतरा, 05 जुलाई : उपायुक्त रवि आनंद ने शनिवार को लावालौंग प्रखंड का दौरा कर भारत निर्वाचन आयोग के निदेशानुसार चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)-2026 के तहत 30 जून से 29 जुलाई तक संचालित गणना कार्य का निरीक्षण किया।

उन्होंने पांकी रोड स्थित बिरहोर कॉलोनी पहुंचकर बीएलओ द्वारा किए जा रहे प्रपत्र संकलन और गणना कार्य का जायजा लिया तथा शत-प्रतिशत शुद्धता, पारदर्शिता और समयबद्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने बिरहोर समुदाय के लोगों से संवाद कर सरकारी योजनाओं के लाभ और कॉलोनी की आधारभूत सुविधाओं की जानकारी ली। ग्रामीणों द्वारा आंगनबाड़ी केंद्र के जर्जर भवन की मरम्मत की मांग पर उन्होंने प्रखंड विकास पदाधिकारी को स्थल का आकलन कर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

इसके बाद उपायुक्त ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, लावालौंग का निरीक्षण कर साफ-सफाई, पेयजल, दवा भंडारण, महिला वार्ड, प्रसव कक्ष और चिकित्सकों की उपस्थिति की समीक्षा की। उन्होंने मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने और अस्पताल की व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित चिकित्सकों पर कार्रवाई के लिए सिविल सर्जन को निर्देशित किया।उपायुक्त ने कहा कि निर्वाचन कार्यों के साथ जनहित से जुड़ी सेवाओं की गुणवत्ता पर भी प्रशासन लगातार निगरानी रख रहा है।

संक्षिप्त समाचार

ग्रामसभा में एमनबीएस अभियान की जानकारी दी गई

लातेहार : सदर प्रखंड के जालिमखुर्द पंचायत के ग्राम उदयपुरा में मुखिया सुनीता देवी की अध्यक्षता में ग्राम सभा का आयोजन किया गया। ग्राम सभा में आगामी नाइट ब्लड सर्वे (एनबीएस) अभियान को सफल बनाने के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया गया। ग्राम सभा के दौरान उपस्थित ग्रामीणों को नाइट ब्लड सर्वे के उद्देश्य एवं महत्व की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। फाइलेरिया एवं मलेरिया जैसी बीमारियों से बचाव, समय पर जांच एवं उपचार कराने तथा सर्वेक्षण के दौरान स्वास्थ्यकर्मियों का सहयोग करने की अपील की गई. ग्रामीणों से अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने का भी आग्रह किया गया।

टाटीझरिया में जल्द बहाल होगी 108 एम्बुलेंस सेवा

✦ सांसद मनीष जायसवाल ने लिया संज्ञान

✦ मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी ने डिस्ट्रिक्ट को-ऑर्डिनेटर से की बात

देश प्राण संवाददाता

टाटीझरिया, 05 जुलाई : टाटीझरिया प्रखंड में पिछले करीब एक माह से तकनीकी खराबी के कारण बंद पड़ी 108 एम्बुलेंस सेवा जल्द बहाल होगी। एनएच-522 पर लगातार होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के मद्देनजर यह एम्बुलेंस स्थानीय लोगों और राहगीरों के लिए बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है।

पिछले वर्ष क्षेत्रवासियों की मांग पर हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल के प्रयास से तत्कालीन सिविल सर्जन डॉ. सरयू प्रसाद सिंह ने टाटीझरिया को 108 एम्बुलेंस उपलब्ध कराई थी।

सेवा बंद होने से मरीजों को हो रही परेशानी को देखते हुए सांसद मनीष जायसवाल ने मामले का संज्ञान लिया और अपने मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी को संबंधित अधिकारियों से बात कर शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इसके बाद रंजन चौधरी ने 108 एम्बुलेंस सेवा के हजारीबाग जिला समन्वयक रोहित कुमार से फोन पर बातचीत कर तकनीकी खराबी जल्द दूर करने का आग्रह किया। रोहित कुमार ने भरोसा दिलाया कि अगले एक-दो दिनों में एम्बुलेंस की मरम्मत पूरी कर सेवा पुनः शुरू कर दी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि फिलहाल वे अपने स्तर पर खर्च कर वाहन ठीक करा रहे हैं, जबकि संचालन व्यवस्था की मौजूदा स्थिति काफी चुनौतीपूर्ण बनी हुई है।

घर में घुसकर महिला पर जानलेवा हमला, गंभीर

देश प्राण संवाददाता

चौपारण, 05 जुलाई : थाना के दादपुर पंचायत के ग्राम हरपुर में एक महिला को लाठी डंडे से पिट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। गांव में पुरानी आपसी विवाद को लेकर घर में घुसकर 35 वर्षीय सिद्धि देवी, उनके पति राजकुमार सिंह तथा 85 वर्षीय बृद्ध महिला के साथ मारपीट किए जाने का मामला सामने आया हैं। घटना में सिद्धि देवी गंभीर रूप से घायल हो गईं।

प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बेहतर उपचार के लिए हजारीबाग रेफर किया गया हैं। घटना के संबंध में सिद्धि देवी के पति राजकुमार सिंह ने चौपारण थाना में लिखित आवेदन देकर आरोपियों के विरुद्ध उचित कानूनी कार्रवाई की मांग की हैं। आवेदन में आरोप लगाया गया हैं कि रविवार को अशोक सिंह, जगतपाल सिंह, बाबूलाल सिंह, टुनटुन देवी, मंजू देवी सहित अन्य लोग लाठी, कुल्हाड़ी और लोहे की रॉड लेकर उनके घर पहुंचे तथा गाली-गलौज करते हुए हमला कर दिया। आवेदन के अनुसार, आरोपियों ने सिद्धि देवी के साथ बेरहमी से मारपीट की। आरोप हैं कि उनके साथ अभद्रता और छेड़खानी की गई, गला दबाने का प्रयास किया गया, पेट पर वार किए गए तथा उनके कपड़े फाड़ दिए गए। बचाव के लिए पहुंचीं करीब 85 वर्षीय बृद्ध महिला के साथ भी मारपीट की गई, जिससे वह भी घायल हो गईं। पीड़ित पक्ष का आरोप हैं कि मारपीट के दौरान सिद्धि देवी के गले से सोने की चेन भी छीन ली गई। शोर सुनकर पहुंचे ग्रामीणों ने किसी तरह सभी को बचाया और उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया।

चिकित्सकों ने सिद्धि देवी की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें हजारीबाग रेफर कर दिया। राजकुमार सिंह ने आवेदन में यह भी आरोप लगाया हैं कि घटना के बाद आरोपी लगातार जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। उन्होंने चौपारण थाना पुलिस से सभी आरोपियों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर कड़ी कानूनी कार्रवाई करने और परिवार को सुरक्षा प्रदान करने की मांग की हैं। इसमामले की जांच पुलिस द्वारा की जा रही है।

विद्यालयों के सुदृढ़ संचालन पर किया गया विचार-विमर्श

देश प्राण संवाददाता

हजारीबाग, 05 जुलाईः सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, मालवीय मार्ग, हजारीबाग में रविवार को विद्या भारती द्वारा एक दिवसीय विभाग स्तरीय समिति सदस्य सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। सम्मेलन में विद्यालयों के प्रभावी संचालन, शैक्षणिक गुणवत्ता में निरंतर सुधार तथा प्रबंधन समितियों की भूमिका को और अधिक सशक्त बनाने पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्या विकास समिति के माननीय अध्यक्ष रामावतार नरसरिया, उपाध्यक्ष ब्रजेश कुमार सिंह, प्रदेश सचिव नकुल शर्मा, प्रांत शारीरिक प्रमुख कुणाल, विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष नवल किशोर कर्ण, सचिव ज्ञानचंद प्रसाद मेहता, सह सचिव सौरभ अग्रवाल तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अजय कुमार पाठक ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर, भारत माता एवं मां सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन के साथ किया। अतिथियों का परिचय, विषय प्रवेश एवं मंच संचालन हजारीबाग विभाग के विभाग प्रमुख श्री ब्रजेश कुमार सिंह ने किया। उन्होंने सम्मेलन की आवश्यकता एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्यालयों के समग्र विकास में प्रबंधन समितियों की सक्रिय सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। सम्मेलन में हजारीबाग विभाग के अंतर्गत विभिन्न संकुलों के संकुल प्रमुख, प्रधानाचार्य, विद्यालय प्रबंधन समितियों के अध्यक्ष, सचिव एवं अन्य समिति सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर संस्कारयुक्त शिक्षा तथा प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर गहन चिंतनमंथन किया गया।

हजारीबागः इनरव्हील क्लब ऑफ युवा ने चलाया सीड बम अभियान

✦ झील किनारे फेंके जामुन और आम के बीज

देश प्राण संवाददाता

हजारीबाग, 05 जुलाई : पर्यावरण संरक्षण एवं हरित भविष्य के संकल्प के साथ इनरव्हील क्लब ऑफ युवा द्वारा रविवार को शहर की झील के किनारे जामुन एवं आम के सीड बम (बीज बम) फेंककर विशेष अभियान चलाया गया। क्लब की ओर से प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी इस पर्यावरणीय पहल की शुरूआत की गई।

अभियान के दौरान क्लब की सदस्यों ने झील के आसपास ऐसे स्थानों पर सीड बम डाले, जहाँ सीधे पौधरोपण करना संभव नहीं है। उनका कहना था कि वर्षा ऋतु में अनुकूल वातावरण मिलने पर ये बीज अंकुरित होकर भविष्य में वृक्षों का रूप ले सकते हैं, जिससे हरित क्षेत्र का विस्तार होगा और जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। क्लब की अध्यक्ष सुधा वर्मा ने कहा कि प्रकृति की रक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

सीड बम अभियान हर व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने का एक सरल और प्रभावी माध्यम है। हमारा प्रयास है कि अधिक से अधिक स्थानों पर हरियाली विकसित हो और आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण मिल सके। उन्होंने बताया कि यह अभियान केवल एक दिन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आने वाले दिनों में भी शहर के विभिन्न क्षेत्रों में जामुन एवं आम के सीड बम फेंके जाएंगे, ताकि अधिक से अधिक वृक्ष विकसित हो सकें। अभियान में अध्यक्ष सुधा वर्मा, अन्नू अग्रवाल, नूतन प्रसाद, सुधा पसरिचा, गुरमीत, रेनू सहित क्लब की कई सदस्याएँ उपस्थित रहीं।

ललित कुमार बने झारखंड पुलिस अकादमी शाखा के अध्यक्ष

हजारीबाग : झारखंड पुलिस एसोसिएशन, झारखंड पुलिस अकादमी शाखा का चुनाव रविवार को मेस वन में संपन्न हुआ। इस चुनाव में पुलिस निरीक्षक ललित कुमार को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। कार्यकारिणी के अन्य पदों पर पुलिस अवर निरीक्षक द्वारकानाथ ठाकुर उपाध्यक्ष, सअनि राणा सिंह सचिव, सअनि बालेश्वर यादव कोषाध्यक्ष और महिला पुलिस अवर निरीक्षक राजेश कुमारी कुजूर को संयुक्त सचिव के रूप में मनोनीत किया गया। इस अवसर पर पर्यवेक्षक के रूप में केंद्रीय कार्यकारी सदस्य शाहिद रजा, क्षेत्रीय मंत्री देव थापा और संयुक्त सचिव रामदास राम मौजूद रहे। चुनाव परिणाम के बाद अकादमी के सदस्यों ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का फूल माला पहनाकर स्वागत किया।

हजारीबाग : दुकान में लगी भीषण आग, लाखों की संपत्ति जलकर राख

✦ दमकल की तत्परता से टला बड़ा हादसा, प्रारंभिक जांच में शॉर्ट सर्किट की आशंका

देश प्राण संवाददाता

हजारीबाग,05 जुलाई : शहर के हृदयस्थल अन्नदा चौक पर शनिवार देर रात एक दुकान में भीषण आग लगने से लाखों रुपये की संपत्ति जलकर राख हो गई। घटना के बाद पूरे इलाके में अफरातफरी मच गई।

आग की लपटें इतनी तेज थीं कि उन्हें दूर-दूर तक देखा जा सकता था। स्थानीय लोगों की सूचना पर दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। दमकलकर्मियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, जिससे आसपास की दुकानों और गुमटियों तक आग फैलने से रोक लिया गया। दुकान संचालिका शांति देवी ने बताया कि आग में दुकान में रखे गैस सिलेंडर, रिफिलिंग उपकरण तथा बड़ी मात्रा में जलावन कोयला पूरी तरह जलकर नष्ट हो गया। हालांकि इस घटना में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई, जिससे लोगों ने राहत की सांस ली।

प्राथमिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। वहीं, मौके पर पहुंची बिजली विभाग की टीम ने जांच के दौरान दुकान में बिना मीटर के अवैध विद्युत कनेक्शन होने की बात कही। प्रशासन पूरे मामले की विस्तृत जांच में जुट गया है। जांच रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

धार्मिक एवं सार्वजनिक स्थलों का विकास क्षेत्र की प्राथमिकताःविधायक

✦ सिलवार के श्री जगन्नाथ धाम में हाई मास्ट लाइट व सामुदायिक भवन का लोकार्पण

देश प्राण संवाददाता

हजारीबाग, 05 जुलाई : सदर प्रखंड के सिलवार स्थित श्री जगन्नाथ धाम परिसर में रविवार को विधायक निधि से निर्मित हाई मास्ट लाइट एवं सामुदायिक भवन का लोकार्पण हजारीबाग विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रदीप प्रसाद ने विधिवत किया।

इस दौरान बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीण, श्रद्धालु एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। लोकार्पण के अवसर पर विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि धार्मिक एवं सामाजिक स्थलों का विकास समाज की सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाने के साथ लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराता है। उन्होंने कहा कि हाई मास्ट लाइट लगने से श्रद्धालुओं एवं स्थानीय लोगों को रात्रि के समय आवागमन तथा धार्मिक आयोजनों में सुविधा मिलेगी, जबकि सामुदायिक भवन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक कार्यक्रमों के आयोजन का केंद्र बनेगा।

उन्होंने कहा कि हजारीबाग विधानसभा क्षेत्र के समग्र विकास के लिए उनकी प्रतिबद्धता लगातार जारी है। क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं के विस्तार के साथ धार्मिक एवं सार्वजनिक स्थलों का विकास भी उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने जनसहभागिता को विकास की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए सभी से सहयोग की अपील की कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि दिनेश कुशवाहा, कालेश्वर रजक, रामावतार शर्मा, बिरजू कुमार, भाजपा के वरिष्ठ नेता अनेश्वर महतो, सांसद प्रतिनिधि,नुनुलाल भुइयाँ एवं देवनारायण प्रसाद सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, ग्रामीण और श्रद्धालु मौजूद रहे।

अखिल भारतीय तैलिक साहू महासभा, जिला चतरा का संगठनात्मक चुनाव सम्पन्न

देश प्राण संवाददाता

चतरा, 05 जुलाई : अखिल भारतीय तैलिक साहू महासभा, जिला चतरा का जिला स्तरीय संगठनात्मक निर्वाचन कार्यक्रम के अंतर्गत महासभा के तीनों प्रकोष्ठों -मुख्य कमेटी, युवा कमेटी एवं महिला कमेटी का निर्वाचन लोकतांत्रिक एवं सर्वसम्मत तरीके से संपन्न हुआ।

रविवार को हुए इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला संरक्षण बनवारी साहु ने की एवं संचालन जिला सचिव विद्यासागर ने किया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष रिपुसुदन साहु उपस्थित थे।

निर्वाचन प्रक्रिया के उपरांत निम्न पदाधिकारियों को सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किया गया– मुख्य कमेटी-जिला अध्यक्ष सूरज साहु-जिला सचिव -कन्हैया प्रसाद साहु,जिला कोषाध्यक्ष झ आदित्य साहु। युवा कमेटी-जिला युवा अध्यक्ष झसंदीप कुमार साहु,जिला युवा सचिव-अमित कुमार। महिला कमेटी-महिला जिला अध्यक्ष- पूनम देवी,जिला महिला सचिव-राखी गुप्ता।

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने समाज के सर्वांगीण विकास, संगठन की मजबूती, सामाजिक एकता तथा युवा एवं महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।

आज के कार्यक्रम में महासभा के जिला संरक्षक देवनंदन साहु, नवीन कुमार साहु, धर्मेंद्र कुमार साहु, बनवारी साहु, बढ़न साहु, एवं कामेश्वर साहू विशेष रूप से उपस्थित थे और नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ प्रदान कीं। इसके अतिरिक्त जिले के विभिन्न प्रखंडों से आए प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी, समाज के गणमान्य सदस्य एवं समाजसेवी रमेश कुमार,चंद्रदेव कुमार, विनोद कुमार, महेंद्र नायक सहित बड़ी संख्या में समाज के बुद्धिजीवी, युवा एवं महिला प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन समाज की एकता, संगठन की मजबूती तथा सामाजिक उत्थान के संकल्प के साथ हुआ। उपस्थित जनसमुदाय ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

खबरकोना

स्व. इंद्रजीत पांडे की स्मृति में किया गया पौधरोपण

हजारीबाग : स्वर्गीय इंद्रजीत पांडे की पुण्य स्मृति में उनके पुत्र अभिमन्यु पांडे, रोहित पांडे एवं परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान परिवारजनों एवं उपस्थित लोगों ने पौधारोपण कर स्व. पांडे को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान सभी ने संकल्प लिया कि लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करेंगे तथा अधिक से अधिक पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण में अपना सक्रिय योगदान देंगे। परिजनों ने कहा कि स्व. इंद्रजीत पांडे की स्मृतियों को जीवंत बनाए रखने और समाज को सकारात्मक संदेश देने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अंत में उपस्थित लोगों ने स्व. इंद्रजीत पांडे के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की तथा उनके आदर्शों का अनुसरण करने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जागरूकता एवं सेवा का संदेश भी दिया गया।

थाना दिवस पर जमीन से सम्बंधित सैकड़ों आवेदन मिले

चौपारण : चौपारण थाना में थाना दिवस के अवसर पर सैकड़ों आवेदन पहुंचा रहा हैं थाना। जमीन से सम्बंधित अपनी समस्या ग्रामीणों अब आवेदन लेकर थाना पहुंच रहें हैं। ग्रामीणों में विश्वास हो गया हैं कि जमीन से संबंधित समस्या थाना और प्रशासन की सहायता से ही समस्याओं का समाधान किया जा सकता हैं। जमीन से संबंधित समस्याओं का समाधान त्वरित हो ताकि जनता में इसी तरह विश्वास बनी रहें जमीन से संबंधित समस्या वर्षो से लंबित रहता हैं और किसी-किसी की तो सारी उम्र इसी आशा और विश्वास में बीत जाता हैं कि अब न्याय मिलेगा और वह बुढा भी जाता हैं । जमीन की समस्या का समाधान करते-करते थक हार कर जीवन से निराश हो जाता हैं। इस कार्यक्रम में अंचलाधिकारी संजय कुमार यादव,थाना प्रभारी पंकज कुमार एवं सीआई के उपस्थित थे।

सड़क हादसे के पीड़ितों को दी गई सहयोग राशि

रजरप्पाः बारलौंग में विगत 25 जून को हुई भीषण सड़क दुर्घटना में मारंगमरचा गांव के छह लोगों की असामयिक मौत के बाद रविवार को झामुमो के केंद्रीय सदस्य चित्रगुप्त महतो ने शोकाकुल परिवारों से मुलाकात की। झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता तथा उत्पाद एवं मद्य निषेध मंत्री योगेंद्र प्रसाद के निर्देश पर पहुंचे चित्रगुप्त महतो ने प्रत्येक पीड़ित परिवार को सहयोग राशि प्रदान करते हुए गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शांति एवं शोकाकुल परिजनों को इस असहनीय पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। पीड़ित परिवारों से मुलाकात के दौरान चित्रगुप्त महतो ने कहा कि मंत्री योगेंद्र प्रसाद इस दुखद घटना से बेहद व्यथित हैं और उन्होंने पीड़ित परिवारों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार और झामुमो परिवार इस कठिन समय में प्रभावित परिवारों के साथ मजबूती से खड़ा है। सरकार की ओर से हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी और भविष्य में भी सहयोग जारी रहेगा। इस अवसर पर झामुमो के केंद्रीय सदस्य महेंद्र मुंडा, प्रखंड अध्यक्ष खुदीराम महतो, चंद्रदेव महतो, कृति करमाली, सुशांत पटेल, विनय मुन्ना, मुखिया प्रतिनिधि राकेश राजवार, विमल करमाली, सुभाष कुमार, मुमताज अंसारी, इम्तियाज अंसारी, अजय करमाली, राजन करमाली, जीतन महतो, दिनेश मुंडा, दिलीप महतो सहित कई कार्यकर्ता एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

मोटरसाइकिल लूटकांड में दो अपराधी गिरफ्तार

हजारीबाग : कटकमसांडी थाना क्षेत्र में हुई मोटरसाइकिल लूट की घटना का हजारीबाग पुलिस ने महज 5-6 घंटे के भीतर सफल उद्भेदन करते हुए दो शातिर अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उनके कब्जे से लूटी गई मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन, घटना में प्रयुक्त अपाचे बाइक और एक चाकू भी बरामद किया है। जानकारी के अनुसार, 4 जुलाई 2026 को कटकमसांडी थाना क्षेत्र में अज्ञात अपराधियों ने एक व्यक्ति से मोटरसाइकिल और मोबाइल फोन लूट लिया था। इस संबंध में कटकमसांडी थाना कांड संख्या-107/26 के तहत भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 309(6) में प्राथमिकी दर्ज की गई। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर विशेष छापामारी दल का गठन किया गया। तकनीकी साक्ष्यों और मानवीय सूचना के आधार पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए कांड दर्ज होने के 5-6 घंटे के भीतर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने लूटी गई पल्सर आरएस-200 मोटरसाइकिल, वीवो कंपनी का मोबाइल फोन, घटना में प्रयुक्त सिल्वर-ब्लैक रंग की अपाचे मोटरसाइकिल तथा एक चाकू बरामद किया।

चंद्र प्रकाश जैन ने किया प्रमाण सागर सभागार का उद्घाटन

हजारीबागः शहर के बॉटम बाजार रोड स्थित दिगंबर जैन मंदिर परिसर में रविवार को नवनिर्मित मुनि श्री 108 प्रमाण सागर सभागार का उद्घाटन चंद्र प्रकाश जैन ने फीता काटकर किया। यह कार्यक्रम पूज्य मुनिश्री 108 सुयश सागर जी महाराज एवं पूज्य मुनिश्री 108 कौशल्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में संपन्न हुआ। उद्घाटन के दौरान श्रद्धालुओं ने जयघोष कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष नागेंद्र जैन, महामंत्री संजय अजमेरा सहित समाज के पदाधिकारियों ने चंद्र प्रकाश जैन, उनकी धर्मपत्नी लता जैन तथा परिवार के सदस्यों का सम्मान किया। आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस सभागार में लगभग 800 से 1000 लोगों के बैठने की क्षमता है।

अस्तित्व का प्रश्न हैं वन

भारतीय संस्कृति में प्रकृति को सदैव पूजनीय माना गया है। हमारे पर्व और उत्सव केवल सामाजिक उल्लास के अवसर नहीं रहे बल्कि प्रकृति और मानव के सह अस्तित्व के प्रतीक भी रहे हैं। आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के क्षरण, प्रदूषण और जल संकट जैसी अभूतपूर्व चुनौतियों से जूझ रही है, तब भारत में 1 से 7 जुलाई तक मनाया जाने वाला 'वन महोत्सव' केवल वृक्षारोपण का अभियान नहीं, बल्कि पृथ्वी पर जीवन बचाने का राष्ट्रीय संकल्प बन चुका है। वास्तव में वर्तमान समय की आवश्यकताओं को देखा जाए तो वन महोत्सव से बड़ा कोई उत्सव नहीं हो सकता क्योंकि इसका संबंध केवल पर्यावरण से नहीं बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य से है।

भारतीय परंपरा में वनों को देवतुल्य माना गया है। वे केवल पेड़ों का समूह नहीं बल्कि पृथ्वी के फेफड़े, जैव विविधता के सबसे बड़े आश्रय, नदियों के संरक्षक, जलवायु संतुलन के प्रहरी तथा करोड़ों लोगों की आजीविका के आधार हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से ठीक पहले जुलाई 1947 में दिल्ली में चलाए गए व्यापक वृक्षारोपण अभियान ने वन महोत्सव की अवधारणा को जन्म दिया था, जिसे वर्ष 1950 में तत्कालीन केंद्रीय कृषि एवं खाद्य मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। जुलाई के प्रथम सप्ताह का चयन इसलिए किया गया क्योंकि दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान मिट्टी में पर्याप्त नमी होने से पौधों के जीवित रहने की संभावना सर्वाधिक रहती है। आज यह अभियान भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम' के दर्शन का जीवंत प्रतीक बन चुका है।

वनों की स्थिति विश्व स्तर पर चिंताजनक बनी हुई है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पृथ्वी का केवल लगभग 31 प्रतिशत भूभाग ही वनाच्छादित है जबकि प्रतिवर्ष लाखों हेक्टेयर वन क्षेत्र अवैध कटाई, औद्योगिकीकरण, खनन और अवसंरचनात्मक विकास की भेंट चढ़ रहा है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यदि यही प्रवृत्ति जारी रही तो आगामी दशकों में विश्व के अनेक वर्षावन गंभीर संकट में पड़ सकते हैं। ऐसे समय में भारत जैसे विशाल और जैव विविधता से समृद्ध देश की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत ने हाल के वर्षों में वन संरक्षण और वृक्षारोपण की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए हैं।

भारतीय वन सर्वेक्षण की भारत वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर) के अनुसार, देश का कुल वन एवं वृक्ष आवरण बढ़कर 8,27,357 वर्ग किलोमीटर हो गया है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 25.17 प्रतिशत है। इसमें 7,15,343 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र तथा 1,12,014 वर्ग किलोमीटर वृक्ष आवरण शामिल है। पिछले आकलन की तुलना में कुल हरित आवरण में 1,445 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि दर्ज हुई। क्षेत्रफल के आधार पर मध्य प्रदेश सबसे अधिक वन क्षेत्र वाला राज्य है जबकि अरुणाचल प्रदेश और छत्तीसगढ़ उसके बाद आते हैं। वहीं, वन घनत्व के अनुपात में मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय अग्रणी हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की ग्लोबल फॉरेस्ट रिसोर्सेज असेसमेंट रिपोर्ट में भारत को कुल वन क्षेत्र के आधार पर विश्व में नौवां स्थान तथा वार्षिक वन क्षेत्र वृद्धि के मामले में अग्रणी देशों में स्थान प्राप्त हुआ है।

हालांकि इन उपलब्धियों के साथ कुछ गंभीर चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि हरित आवरण में हुई वृद्धि का बड़ा हिस्सा प्राकृतिक सघन वनों के बजाय खुले वनों तथा व्यावसायिक वृक्षारोपण के कारण हुआ है। प्राकृतिक वन केवल पेड़ों का समूह नहीं होते, बल्कि हजारों वनस्पतियों, जीव-जंतुओं, सूक्ष्म जीवों और जल स्रोतों का जटिल पारिस्थितिकी तंत्र होते हैं। इनका स्थान कृत्रिम पौधरोपण कभी नहीं ले सकता। केवल पौधे लगा देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें वृक्ष बनने तक सुरक्षित रखना ही वास्तविक सफलता है।

भारत-पाक शांति वार्ता के लिए पत्र क्यों?

राजेश कुमार पासी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उरी हमले के बाद स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी थी कि आतंकवाद और वार्ता एक साथ नहीं चल सकते। जब तक पाकिस्तान आतंकवादियों पर लगाम नहीं लगाता, तब तक कोई बातचीत नहीं होगी। पाकिस्तान पर इसका कोई असर नहीं हुआ, इसलिए मोदी सरकार ने पाकिस्तान के साथ बातचीत का रास्ता बंद कर दिया। 2025 में पहलगाम में हुए बड़े आतंकवादी हमले के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा कर दी कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते। इस घोषणा के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ सिंधु जल समझौते को निलंबित कर दिया। मोदी ने कहा कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद बंद नहीं करता तब तक ये संधि लागू नहीं होगी। भारत ने पाकिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध खत्म कर दिए और कूटनीतिक संबंधों को भी कमतर कर दिया।

> **पाकिस्तानी सेना के बारे में कहा जाता है कि दुनिया में सब देशों के पास सेना है, लेकिन पाकिस्तानी सेना ऐसी है, जिसके पास एक देश है। पाकिस्तान में पता ही नहीं चलता कि किसके साथ बातचीत की जाए। राजनीतिक नेतृत्व के साथ जो बातचीत होती है उसे सैन्य नेतृत्व नहीं मानता और सेना के साथ सीधी बातचीत नहीं हो सकती।**

भारत के साथ व्यापारिक संबंधों के खत्म होने से पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ है, लेकिन पाकिस्तान कुछ समझने को तैयार नहीं है। सिंधु जल समझौते को लागू करवाने के लिए पाकिस्तान पूरी दुनिया में भटक रहा है, लेकिन भारत किसी की सुनने को तैयार नहीं है। पाकिस्तान समझ गया है कि भारत जैसी शक्ति को अंतरराष्ट्रीय दबाव डालकर झुकाया नहीं जा सकता और पाकिस्तान की इतनी हैसियत भी नहीं है कि वह बड़ा दबाव डाल सके। भारत ने इस समझौते को निलंबित करने के बाद ऐसे इंतजाम कर लिए हैं कि पाकिस्तान जाने वाले पानी को नियंत्रित किया जा सके। पाकिस्तान को इसका असर महसूस होने लगा है, इसलिए वह भारत से बातचीत के लिए गिड़गिड़ा रहा है। एक तरफ पाकिस्तान चाहता है कि भारत बातचीत करे तो दूसरी तरफ उसके नेता भारत को युद्ध की धमकी दे रहे हैं। जितनी अजीब बात है कि ऑपरेशन सिंदूर में जबरदस्त मार खाने के बाद भी पाकिस्तान युद्ध की धमकी से भारत को झुकाना चाहता है। इससे भी आगे बढ़कर भारत पर परमाणु हमला करने की धमकी दी जा रही है। पाकिस्तान भारत के साथ रिश्ते ठीक करने के लिए सब कुछ करने को तैयार है, लेकिन आतंकवाद छोड़ने को तैयार नहीं है। इसका मतलब है कि पाकिस्तान चाहता है कि उसके आतंकवादी भारत को जख्म देते रहे और भारत पाकिस्तान को दोस्त बना रहे। 2014 से पहले ये चलता रहा, लेकिन मोदी राज में ये होने वाला नहीं है। ऐसा नहीं है कि मोदी ने प्रधानमंत्री बनते ही पाकिस्तान से दुश्मनी शुरू कर दी थी, बल्कि उन्होंने पाकिस्तान को रिश्ते सुधारने का पूरा मौका दिया।

वास्तव में भारत के हर नेता ने पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने की कोशिश की है, लेकिन उसे भारी निराशा का सामना करना पड़ा है। 1971 में इंदिरा गांधी ने 90000 पाकिस्तानी सैनिकों को बंदी बनाने के बाद शिमला समझौता कर लिया और युद्ध में जीता हुआ सब कुछ वापस दे दिया। युद्ध में बुरी तरह से पराजित करने के बाद भी पाकिस्तान से शांति स्थापना के लिए ही समझौता किया गया था। इसके बदले हमें पंजाब और कश्मीर में पाकिस्तानी आतंकवाद का बड़ा बुरा दौर देखना पड़ा है। तब से पाकिस्तानी आतंकवाद का ऐसा दौर शुरू हुआ है जो अभी भी जारी है। भारत पर पाकिस्तानी हमले कम नहीं हुए हैं, बल्कि हमारी सुरक्षा एजेंसियां ज्यादा सतर्क हो गई हैं जिसके कारण पाकिस्तान कामयाब नहीं हो पा रहा है। अटल बिहारी वाजपेयी जब सत्ता में आये तो पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने के लिए वो लाहौर गए। उनकी इस कोशिश का प्रत्युत्तर पाकिस्तान ने कारगिल पर हमला करके दिया। इस हमले के बाद वाजपेयी पाकिस्तान से पूरी तरह निराश हो गए।

2015 में मोदी काबुल की यात्रा से लौटते हुए अचानक पाकिस्तान के दौरे पर चले गए और तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ बातचीत की। पाकिस्तान ने भारत की इस कोशिश का प्रत्युत्तर पठानकोट पर हमला करके दिया। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय नेतृत्व हमेशा पाकिस्तान से बातचीत करता रहा है, लेकिन इसका कभी अच्छा परिणाम हासिल नहीं हुआ। पाकिस्तान भारत का जन्मजात शत्रु है और वह किसी भी कीमत पर अपनी शत्रुता नहीं छोड़ सकता, क्योंकि ये शत्रुता उसकी जीवनदायिनी शक्ति है। पाकिस्तानी सेना भारत का डर दिखाकर ही पाकिस्तानी जनता को मूर्ख बना रही है और उसकी पूरी व्यवस्था को कब्जे में लिया हुआ है। पाकिस्तानी सेना के बारे में कहा जाता है कि दुनिया में सब देशों के पास सेना है, लेकिन पाकिस्तानी सेना ऐसी है, जिसके पास एक देश है। पाकिस्तान में पता ही नहीं चलता कि किसके साथ बातचीत की जाए। राजनीतिक नेतृत्व के साथ जो बातचीत होती है उसे सैन्य नेतृत्व नहीं मानता और सेना के साथ सीधी बातचीत नहीं हो सकती।

भारत और पाकिस्तान के 116 महत्वपूर्ण व्यक्तियों के एक समूह ने दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों को एक पत्र लिखा है जिसकी चर्चा आजकल मीडिया में हो रही है। दोनों देशों की सरकारों की तरफ से इस पत्र पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी है लेकिन कुछ नेता इस पर बयान दे रहे हैं। पत्र लिखने वालों ने दोनों देशों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए बातचीत करने का अनुरोध किया है। दोनों देशों के बीच अच्छे संबंध स्थापित होने का कौन विरोध कर सकता है। कम से कम भारत में कोई इसका विरोध नहीं करेगा। भारत शुरू से पाकिस्तान से अच्छे संबंध बनाने की कोशिश करता रहा है, इसके बावजूद दोनों देशों के बीच चार-चार युद्ध हो चुके हैं। भारत ने पाकिस्तान पर कभी हमला नहीं किया जबकि पाकिस्तान न केवल भारत पर सैन्य हमले करता रहा है, बल्कि 1971 के बाद लगातार आतंकवादी हमले कर रहा है। भारत को पाकिस्तानी सैन्य आक्रमण से ज्यादा नुकसान आतंकवादी हमलों ने पहुंचाया है।

सवाल यह है कि भारत और पाकिस्तान के खराब संबंधों के लिए क्या भारत भी दोषी है? अगर निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो भारत के हर नेतृत्व ने पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने की कोशिश की है, लेकिन उसे इस काम में कोई सफलता नहीं मिली है। पाकिस्तान ने कभी भी भारत के साथ अपने संबंधों को महत्व नहीं दिया है, बल्कि वह हमेशा भारत विरोधी शक्तियों के हाथ में कठपुतली बना रहा। पहले वह अमेरिका की गोद में बैठकर भारत को धमकाया करता था और अब वह चीन की गोद में बैठकर भारत को हड़काने की कोशिश करता है। अब भारत एक ग्लोबल पावर बन चुका है, जिस पर किसी की धमकी का कोई असर नहीं होता, इसलिए अब पाकिस्तान भारत के साथ बातचीत चाहता है।

पत्र लिखने वालों की मंशा पर सवाल नहीं उठाया जाए तो भी इसके पीछे पाकिस्तानी रणनीतिक चाल दिखाई देती है। इस पत्र में कहीं भी यह नहीं लिखा गया है कि पाकिस्तान को अपनी आतंकवाद की नीति को छोड़ देना चाहिए। क्या पत्र लिखने वाले नहीं जानते कि भारत और पाकिस्तान के रिश्ते आतंकवाद के कारण ही बिगड़ गए हैं? क्या ये लोग चाहते हैं कि भारत आतंकवाद को नजरअंदाज करके पाकिस्तान के साथ बातचीत शुरू कर दे । देखा जाए तो रिश्ते सुधरने के लिए बातचीत जरूरी है, लेकिन बातचीत शुरू करने के लिए भारत ने आतंकवाद रोकने की शर्त रखी हुई है। क्या भारत की सोच गलत है, इसका जवाब पत्र नहीं देता।

पत्र लिखने वाले चाहते हैं कि भारत और पाकिस्तान के संबंध पूरी तरह से सामान्य हो जाएं । पाकिस्तान की तरफ से पत्र लिखने वालों को छोड़ दिया जाए तो भारत से पत्र लिखने वाले आतंकवाद के मुद्दे पर चुप क्यों हैं? उन्हें अपने देश के हितों को देखना चाहिए था, इसके बाद इस पत्र पर हस्ताक्षर करने चाहिए थे। भारत के पक्ष को समझे बिना प्रधानमंत्री को पत्र लिखना क्या उचित है? दोनों देशों के बीच संबंध सामान्य हो जाते हैं तो दोनों देशों को फायदा होगा, लेकिन ज्यादा फायदा पाकिस्तान को होने वाला है। कितनी अजीब बात है कि जिसे बातचीत की ज्यादा जरूरत है, वही अपनी जिद पर अड़ा हुआ है। पहलगाम हमले से कुछ दिन पहले ही पाकिस्तानी जनरल मुनीर ने कहा था कि हिन्दू और मुस्लिम दो अलग राष्ट्र हैं और भारत हमारा शत्रु राष्ट्र है। आज पाकिस्तान में एक तरह से मुनीर का शासन चल रहा है, ऐसे में दोनों देशों के संबंध कैसे सुधर सकते हैं।

वास्तव में पत्र लिखने वाले समस्या का समाधान चाहते हैं, लेकिन समस्या क्या है उसे नहीं जानते। दूसरे शब्दों में कहें तो जानते सब कुछ हैं, लेकिन बोलना नहीं चाहते। जब तक पाकिस्तान की सच्चाई सामने नहीं लाई जाती, तब तक ऐसे पत्र लिखने का कोई फायदा नहीं है।

राम मंदिर दान में चोरी का कलंक धोना आसान नहीं होगा

राजेश श्रीवास्तव

2024 में जब राम मंदिर भक्तों के लिए खुल गया तो लगा कि बस इस अध्याय का अंत हो गया है, लेकिन मौजूदा घटना एक बार फिर राम मंदिर को सुर्खियों में ले आया और चंपत राय इन सुर्खियों के केंद्र में आ गये। करोड़ों की आस्था, लाखों का रोज दान और इस दान पर चोरों की नजर लग गई। राम मंदिर दान में चोरी पहले इनकार की जा रही थी, लेकिन अब साबित हो गई, पैसे बरामद हो गए, एफआईआर हो गई, इस्तीफे हो गए, लेकिन राम मंदिर दान की कहानी और किरदार अभी भी बहस का मुद्दा बने हुए हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम की सेवा में लगे लोगों पर चोरी का आरोप लगे तो करोड़ों लोगों की आस्था, भरोसा और इत्मिनान को धक्का लगना ही था। बात सिर्फ चोरी की नहीं थी। भगवान के घर चोरी की थी और वह भी तब जब मंदिर बनाने के लिए कुर्बानियां हर स्तर पर दी गईं। अब सवाल भी हर कोने से पूछे जा रहे हैं। सवाल चोरी करने वालों पर उठे। सवाल उन पर भी उठे जो इन चोरों को खजाने तक लाए थे। इन नामों में सबसे बड़ा नाम चंपत राय बंसल का है। राम मंदिर आंदोलन, राम मंदिर निर्माण और राम मंदिर ट्रस्ट के काम से जुड़े चंपत राय के बेहद करीबी लोग ही वे थे जो दान का पैसा चुरा रहे थे। उसे छुपा रहे थे, दान को खपा रहे थे, चंपत राय की नाक के नीचे ये काम हो रहा था। सबसे बड़ा और गहरा सवालिया निशान इसी चेहरे पर लगना लाजमी था। चंपत राय पर खुद पैसा चुराने का आरोप नहीं है, लेकिन उनके खास लोगों पर इसका आरोप है। उन्हें गिरफ्तार किया गया है तो उंगलियां उठीं। उंगलियां उठीं तो चंपत राय की बरसों की बनी साख जल कर खाक हो गई।

सवाल उठे कि चंपत राय की नाक के नीचे चोरी हुई या उनकी रजामंदी से, चंपत राय चालाकी से केस छुपाना चाहते थे या चोरी सामने आने पर उन्होंने लापरवाही की, क्योंकि एफआईआर जब तक हुई, तब तक राम भक्तों के दान में सेंध घर-घर की खबर और चिता बन चुका था। राम मंदिर में चोरी की क्रोनोलॉजी को समझिये। 7 जून को सपा नेता पवन पांडेय ने तो 8 जून को अखिलेश यादव ने इस मुद्दे को उछाला तो मामले ने गर्मी पकड़ी। राम मंदिर ट्रस्ट से जुड़े लोग बार-बार कह रहे थे कि कोई गड़बड़ी नहीं हुई है। चंपत राय ने भी यही कहा कि कोई भी ऐसी बात इंटरनल ऑडिट में सामने नहीं आई है, जिसे उल्लेखनीय समझा जा सके। बचाव में बीजेपी भी उतरी। लड़ाई सच झूठ से ज्यादा राजनैतिक स्कोर की होती नजर आई। बीजेपी ने आरोप लगाया कि अखिलेश यादव झूठ बोल रहे हैं जिसका खमियाजा 2027 के यूपी विधानसभा चुनाव में उन्हें उठाना होगा।

जब इस तरह की खबरें आने लगीं कि सब कुछ ठीक नहीं है तो यूपी सरकार ने 14 जून को तीन सदस्यीय विशेष जांच दल यानी एसआईटी बना दी, जो अगले ही दिन अयोध्या पहुंच गई और तीन दिन यानी 18 जून तक जांच करती रही। 23 जून को एसआईटी ने शुरुआती रिपोर्ट दी, जिसकी बुनियाद पर ही 25 जून चढ़ावा चोरी में एफआईआई दर्ज की गई, जिस चोरी को चंपत राय सिरे से नकार रहे थे। उसी चोरी में केस दर्ज हो गया। इसमें नाम ऐसे लोगों का था जिनसे चंपत घिरे रहते थे। राम शंकर यादव उर्फ टिन्नू चंपत राय का ड्राइवर था। इसके अलावा अनुकल्प मिश्रा, अविनाश शुक्ला, करुणेश पांडेय, लवकुश मिश्रा, रमा शंकर मिश्रा, सुभाष श्रीवास्तव और मनीष यादव हिरासत में हैं। इन सभी को सीधे या परोक्ष चंपत राय की सिफारिश पर ही राम मंदिर में नौकरी मिली थी। ये सब रामभक्तों से मिलने वाला चंदा गिनने का काम करते थे। चोरी यहीं की जाती थी। इसी के चलते चंपत राय विवादों में हैं। राम मंदिर में दान की चोरी, सिर्फ हाथ की सफाई थी या एक संगठित अपराध।

> **राम राज में करोड़ों की आस्था है। राम मंदिर में चोरी अपराध भी है और पाप भी। राम में लोगों की आस्था सदियों से अटूट है। भगवान राम या राम मंदिर पर आस्था ठोस है, लेकिन दान में चोरी का कलंक धोना आसान नहीं होगा।**

जांच और राजनीति इसी बात के इर्द-गिर्द है कि कैसे केमिस्ट्री का एक टीचर राम मंदिर केस का रिकॉर्ड कीपर बन गया। बिजनौर के धामपुर में आरएसएम डिग्री कॉलेज में केमिस्ट्री के प्रोफेसर चंपत राय बंसल को 1977 में गिरफ्तार किया गया था लेकिन तब इमरजेंसी के आंदोलन की वजह से। वह दूसरे संघ कार्यकर्ताओं की तरह 18 महीने जेल में रहे। जब चंपत इमरजेंसी के बाद रिहा हुए। विश्व हिदू परिषद में चले गए जहां वो वीएचपी के अध्यक्ष अशोक सिघल के करीब आ गए। चंपत को राम जन्मभूमि मंदिर आंदोलन के लिए अवध इलाके में युवाओं को तैयार करने का काम दिया गया। चंपत को अयोध्या की हर गली, हर दलील और तारीख मुंह जबानी याद थी और ये तब और अहम हो गया जब मामला तेज से अदालतों में चलने लगा। वकील तारीखों और डाटा के लिए चंपत राय की मदद लेने लगे। चंपत को नाम मिल गया, राम लला के रिकॉर्ड कीपर का।

बीजेपी ने जब राम मंदिर आंदोलन को अपने राजनीतिक एजेंडे में शामिल कर लिया तो चंपत बीजेपी की एक नहीं कई पीढ़ियों के नेताओं के करीब आ गए। विवादित ढांचा 6 दिसंबर, 1992 को गिरा तो चंपत का नाम साजिशकर्ताओं में शामिल किया गया, लेकिन सितंबर 2020 को सीबीआई अदालत ने उनके समेत सभी नेताओं को बरी कर दिया। चंपत अयोध्या के कार सेवकपुरम में ही रह कर ट्रस्ट का काम देख रहे थे। आरोप लगाया गया है कि इस दौरान उन्होंने मनमर्जी से लोगों को नौकरियां दीं जिनमें से कुछ लोगों ने लोगों के दान पर हाथ साफ कर दिया। चंपत ने शुरुआत में ही इस विवाद को दबाने की कोशिश की।

बीजेपी के विरोधियों को ये केस विधानसभा चुनाव से एक साल पहले किसी सुनहरे मौके जैसा लग रहा है। खासतौर पर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को, इन दोनों पार्टियों को राम मंदिर और हिंदू राजनीति के मुद्दों पर असहज ही होना पड़ता है, लेकिन अब जैसे उन्हें बीजेपी पर निशाना साधने का मौका मिल गया। बीजेपी के लिए राम मंदिर आजादी के बाद सबसे सफल आंदोलन रहा। बीजेपी के राजनीतिक सफर में इस आंदोलन से ही सत्ता के सफर की बुनियाद पड़ी थी। बार-बार सवाल उठना, लांछन लगना, जवाब ना मिलना, उन वोटरों के दिलों को कचोट रहा है जिन्होंने तन-मन और धन से बीजेपी को जिताने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अगर इन वोटरों के दिल में सवाल घर कर गए तो पार्टी को राजनीतिक नुकसान होने की आशंका है।

चंपत राय जिस विवाद में पूरी तरह घिर गए हैं। उसकी लपट राष्ट्रीय स्तर पर अखिलेश के सोशल मीडिया पोस्ट से ही शुरू हुई थी। इसी मुद्दे पर फिर आम आदमी पार्टी, कांग्रेस और बीएसपी भी आगे आए। राजनीतिक रूप से धीरे-धीरे ये एक अनौपचारिक गठबंधन जैसा लग रहा है जिससे सीधे लड़ना बीजेपी के लिए थोड़ा पेचीदा लग रहा है।

अगर अयोध्या में ही चोरी हो रही है तो क्या इस चोरी के सिरे दूर दूर तक हैं या ये सिर्फ कुछ स्थानीय बेईमानों का काम था। चोरी कुछ लाख की हो या करोड़ों की। सोने की शिलाओं की हो या चांदी के काक भुशुंडी की, चोरी तो चोरी है। राम राज में करोड़ों की आस्था है। राम मंदिर में चोरी अपराध भी है और पाप भी। राम में लोगों की आस्था सदियों से अटूट है। भगवान राम या राम मंदिर पर आस्था ठोस है, लेकिन दान में चोरी का कलंक धोना आसान नहीं होगा। चंपत जिदगी के सारे पड़ावों पर राम भक्त के तौर पर दिखे लेकिन जीवन के इस मोड़ पर उनके फैसले पुरानी हर मेहनत पर पानी फेर गए।

आत्मबोध

मौत के बाद कर्ज का हिसाब

कई लोग यह मान लेते हैं कि इनसान की जिंदगी खत्म होने के साथ उसके सारे हिसाब-किताब भी खत्म हो जाते हैं, लेकिन हिंदू धर्म के प्रमुख ग्रंथ 'गरुड़ पुराण' में इस विषय को बिल्कुल अलग नजरिए से देखा गया है। इसमें बताया गया है कि कर्ज केवल पैसों का लेन-देन नहीं, बल्कि एक ऐसा कर्म ऋण भी है, जिसका असर मृत्यु के बाद भी आत्मा पर पड़ सकता है। धार्मिक मान्यता है कि यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर किसी का धन लौटाए बिना इस दुनिया से चला जाता है, तो उसे परलोक में अपने कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ता है। यही वजह है कि शास्त्र जीवन में ईमानदारी से अपने दायित्व पूरे करने की सीख देते हैं।

गरुड़ पुराण के अनुसार किसी का धन लेकर उसे वापस न करना केवल आर्थिक गलती नहीं, बल्कि धार्मिक और नैतिक जिम्मेदारी से मुंह मोड़ना भी माना जाता है। यदि कोई व्यक्ति सक्षम होने के बावजूद जानबूझकर उधार नहीं लौटाता, तो उसका यह कर्म मृत्यु के बाद भी उसका पीछा नहीं छोड़ता। धर्मग्रंथों में कहा गया है कि हर इनसान अपने कर्मों का फल जरूर प्राप्त करता है और ऋण भी उसी कर्म का एक हिस्सा माना गया है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार मृत्यु के बाद यमदूत ऐसी आत्मा को यमलोक ले जाते हैं। यदि व्यक्ति ने दूसरों का धन दबाया हो और उसे लौटाने का प्रयास भी न किया हो, तो रास्ते में उसे अनेक प्रकार की यातनाएं सहनी पड़ती हैं। गरुड़ पुराण में वैतरणी नदी का भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि यह नदी अत्यंत भयावह होती है, जिसमें खून, मवाद और हड्डियों का वर्णन मिलता है। मान्यता है कि कर्ज न चुकाने वाली आत्मा को इस नदी को पार करते समय असहनीय पीड़ा सहनी पड़ती है। यह वर्णन लोगों को अपने कर्मों के प्रति सजग रहने का संदेश देता है।

अगले जन्म में भी चुकाना पड़ सकता है ऋण

गरुड़ पुराण में पुनर्जन्म की अवधारणा का भी जिक्र मिलता है। धार्मिक मान्यता है कि यदि किसी व्यक्ति का ऋण अधूरा रह जाता है, तो अगले जन्म में उसे उसका फल भोगना पड़ सकता है। **(जारी)**

साभार : बीबीसी

लो सुनो ...

अमेरिका ऐसा इसलिए नहीं समझ सकता क्योंकि उसके पास न तो कोई सभ्यता है, न इतिहास है और न ही सम्मान। लोगों को मारा जा सकता है, लेकिन उनके विचारों को नहीं। आपने अयातुल्ला खामेनेई की हत्या की, लेकिन असल में आपने इत्र की एक शीशी को तोड़ दिया है, जिसकी खुशबू अब हर तरफ फैल गई है।

(अर्मेनिया में ईरानी दूतावास)

कुछ खास ...

ऑफिस में भड़का रोबोट

सोशल मीडिया पर एक हैरान कर देने वाला वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। इसमें एक ह्यूमनॉइड रोबोट अचानक अपना संतुलन खो देता है और आसपास मौजूद लोगों पर लात-घूंसे चलाने लगता है। लोग उससे बचने की कोशिश करते हैं, जबकि कुछ उसे काबू में करने की कोशिश में जुटे दिखाई देते हैं। यह वीडियो लोगों को हंसा भी रहा है और रोबोट टेक्नोलॉजी को लेकर चिंता करने पर भी मजबूर कर रहा है। आज के दौर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ह्यूमनॉइड रोबोट्स तेजी से हमारी जिंदगी का हिस्सा बनते जा रहे हैं। दुनिया की कई कंपनियां ऐसे रोबोट बना रही हैं, जो इनसानों की तरह चल-फिर सकें, सामान उठा सकें और कई तरह के काम कर सकें। लेकिन जब यही मशीनें अचानक कंट्रोल से बाहर हो जाएं, तो नजारा कैसा होगा? सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक वीडियो ने यही सवाल लोगों के सामने खड़ा कर दिया है। वायरल क्लिप में एक ह्यूमनॉइड रोबोट अचानक अजीब हरकतें करने लगता है। कुछ ही सेकंड में वह अपने पैरों से तेजी-तेजी से किक मारने लगता है।

डिजिटल दुनिया

मेटा को यौन शोषण कंटेंट वाले एड रोकने का आदेश

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने मेटा को इंस्टाग्राम पर ऐसे विज्ञापनों को लेकर एक नोटिस जारी किया है, जिनमें बच्चों के यौन शोषण से जुड़े कंटेंट को बढ़ावा दिया जा रहा था।

सरकारी अधिकारी ने बताया कि नोटिस में सरकार ने इंस्टाग्राम को ऐसे सभी विज्ञापनों और कंटेंट को बंद करने का आदेश दिया, जो बच्चों के यौन शोषण और दुर्व्यवहार से जुड़े मटीरियल को बढ़ावा देते हैं या उन तक पहुंचने में मदद करते हैं।

सरकार ने मेटा को उन विज्ञापनों के बारे में विस्तार से जवाब देने के लिए 7 दिन का समय दिया, जिनके जरिए यूजर्स को ऐसे बाहरी प्लेटफॉर्म पर भेजा गया, जहां बच्चों के यौन शोषण से जुड़ा कंटेंट मौजूद था। अधिकारी ने बताया कि मंत्रालय यौन शोषण वाले कंटेंट को एल्गोरिदम के जरिए बढ़ावा दिए जाने के मामले को गंभीरता से ले रहा है और उसने मेटा को सुधारात्मक कदम उठाने का निर्देश दिया है।

सरकार का यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है, जब मेटा को अपने कंटेंट मॉडरेशन (सामग्री की निगरानी) के तरीकों को लेकर बढ़ती जांच-पड़ताल का सामना करना पड़ रहा है।

बीबीसी आई की एक जांच में भारत में बच्चों के यौन शोषण से जुड़े कंटेंट को बढ़ावा देने वाले लगभग 30 अलग-अलग विज्ञापनों की पहचान की गई। ब्रॉडकास्टर ने बताया कि उसने इन विज्ञापनों की जानकारी मेटा और भारतीय अधिकारियों दोनों को दी थी। रिपोर्ट के मुताबिक, इंस्टाग्राम पर 'रेप वीडियो' और 'चाइल्ड वीडियो' जैसे शब्दों वाले विज्ञापन दिखाए गए। कहा जा रहा है कि ये विज्ञापन यूजर्स को ऐसे टेलीग्राम चैनल्स पर भेजते थे, जहां बच्चों के यौन शोषण से जुड़ा कंटेंट बेचा जाता था।

पीआरजीआई/आरएनआई पंजीयन संख्या : 52413/1991 (टाइटल कोड : JHAHIN00860),पोस्टल रजिस्ट्रेशन संख्या : RN/260/2020-22. अध्यक्ष व प्रधान संपादकः बलबीर दत्त. दत्त आउटरीच प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक रोहित दत्त* द्वारा 4/A, तारा टावर, होटल महाराजा के सामने, रेडियम रोड, कचहरी चौक, रांची – 834001 से प्रकाशित तथा एसएच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, टेंडर बगीचा के समीप, काठीटांड़, रातू, रांची – 835222 से मुद्रित. फोन नंबरः 0651 2361181, 0651 2361182. ईमेलः contact@deshpran.in (*पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार).

स्वास्थ्यप्रदायक भी होती है कई भाषाओं की जानकारी

भाषा-ज्ञान

सीताराम गुप्ता

मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में और उसके बाद भी कई भाषाएँ सीखीं। मेरे मित्र प्रायः पूछते थे कि ये विभिन्न भाषाएँ सीखने से मुझे क्या लाभ हुआ या होगा? मैं स्वयं नहीं जानता था कि विभिन्न भाषाएँ सीखने से मुझे क्या लाभ होगा। मुझे तो केवल इतना पता है कि भाषाओं और साहित्य में मेरी रुचि रही है। क्योंकि इन भाषाओं के सीखने के पीछे मेरा कोई विशेष लक्ष्य अथवा प्रयोजन नहीं था अतः मैं इन सीखी हुई भाषाओं का विशेष उपयोग या प्रयोग भी नहीं कर पाया। कई बार खीझ-सी भी होती थी कि मैंने समझदारी से काम क्यों नहीं लिया। यदि भाषाओं में ही रुचि थी और सीखनी भी थीं तो उनमें अपना करियर क्यों नहीं बनाया?

लगभग चार दशकों के बाद आज भी कभी-कभार मन में आ ही जाता है कि कई भाषाओं के सीखने से आखिर क्या मिला? क्या लाभ हुआ? अंग्रेजी जैसी मात्र एक भाषा के बल पर लोग न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गए और मैं? लेकिन नितांत ऐसा भी नहीं है। हम विद्यार्थी जीवन में प्रारंभिक कक्षाओं से लेकर हायर प्रोफेशनल कोर्सेज तक में बहुत कुछ सीखते हैं लेकिन बाद में व्यावहारिक या प्रफेशन जीवन में लगता है कि बहुत-सी चीजें, बहुत-सी जानकारी अथवा ज्ञान कभी काम ही नहीं आता। यह मिथ्या धारणा है। वर्णों से शब्द और शब्दों से वाक्य बनते हैं। यदि हम वाक्य बोलना या लिखना सीख जाते हैं तो इसका ये अर्थ कदापि नहीं कि अब हमारे लिए शब्दों या वर्णों का महत्त्व नहीं रहा। बिना वर्णों व शब्दों के हम वाक्य सीख ही नहीं सकते।

भवन निर्माण में हर नई ईंट किसी पुरानी अथवा निचली ईंट पर ही लगाई जाती है जो उसका आधार अथवा नींव कहलाती है। नींव अर्थात् आधारभूत ज्ञान की उपेक्षा करने पर उसके ऊपर निर्मित नव अथवा उच्च ज्ञान रूपी इमारत का बनना और बन जाने पर धराशायी हो जाना अवश्यंभावी है। वास्तव में हमने जो भी सीखा होता है वह सभी हमारे मन रूपी कम्प्यूटर में फीड हो जाता है और वह हमारी नई जानकारी की आधारशिला बनता है। हम जब चाहें उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। नई जानकारी को इस्तेमाल करने का अर्थ है कि हम उसके आधार अर्थात् पुरानी जानकारी का इस्तेमाल भी अनायास कर ही रहे हैं। विभिन्न भाषाएँ भी इसका अपवाद नहीं हैं।

विभिन्न भाषाओं का उपयोग ही नहीं उनका सीखना भी कई प्रकार से अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। हर भाषा की एक विशेष संरचनात्मक व्यवस्था ही नहीं अपितु उसकी एक विशेष संस्कृति भी होती है। कोई भी भाषा मात्र किसी वर्णमाला विशेष के वर्णों, शब्दों और वाक्यों का समूह नहीं होती, अपितु उस भाषा में उसके बोलने वालों का जीवन धड़कता महसूस होता है। किसी भी भाषा के अध्ययन के दौरान हम उस भाषा क्षेत्र के भूगोल, जलवायु, इतिहास, कलाओं, जन-जीवन, रहन-सहन, सामाजिक जीवन आदि की कितनी यथार्थ जानकारी अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं। किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की कुछ विशिष्ट जानकारी हम केवल उनकी भाषा के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही कई भाषाओं के जानने वाले व्यक्ति कम भाषाओं के जानने वाले व्यक्तियों से अपेक्षाकृत अधिक उदार प्रकृति के भी होते हैं।

भाषाएँ सीखने का हमारे स्वास्थ्य से भी सीधा संबंध है। नई भाषाएँ सीखने के दौरान हमारी एकाग्रता का विकास होता है। हमारे प्रसुप्त ब्रेन सेल्स अथवा न्यूरॉन्स सक्रिय हो जाते हैं और हमारी याददाश्त को तेज करने में सहायता करते हैं। भाषाएँ मानसिक सक्रियता बढ़ा देती हैं। मानसिक सक्रियता से हमारी याददाश्त अच्छी बनी रहती है और बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। कई बीमारियों से भी बचे रहते हैं। अपनी याददाश्त को चुस्त-दुरुस्त तथा अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए दूसरी नई भाषाएँ सीखने से परहेज मत कीजिए। शौकिया ही सही जब भी मौका मिले किसी नई भाषा को लिखने-बोलने के प्रयास में जुट जाइए लाभ में रहेंगे।

नई वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि बचपन में सीखी गई कई भाषाएँ वृद्धावस्था में व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती हैं क्योंकि एक से अधिक भाषाएँ बोलने वाले व्यक्ति का दिमाग केवल एक भाषा जानने वाले व्यक्ति की तुलना में वृद्धावस्था में भी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय रहता है। अधिक भाषाओं की जानकारी व्यक्ति के दिमाग के अंदर ऐसे लिंक्स तैयार कर देती है जिनसे व्यक्ति की मानसिक सक्रियता बनी रहती है। यदि आप बचपन में अधिक भाषाएँ नहीं सीख पाए हैं तो कोई बात नहीं. आज ही किसी नई भाषा को सीखना प्रारंभ कर दीजिए।

स्मृति शेष

संजीव

पद्म विभूषण तीजन बाई

चोला माटी के हे राम,
एकर का भरोसा,
द्रोणा जइसे गुरू चले गे,
करन जइसे दानी,
बाली जइसे बीर चले गे,
रावन कस अभिमानी,
चोला माटी के हे राम!

छत्तीसगढ़ी लोक गीत-नाट्य कला पंडवानी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने वाली पद्म विभूषण तीजन बाई की आखिरी यात्रा के पार्श्व में इस छत्तीसगढ़ी गीत का गान किया गया। रविवार तड़के 69 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। पिछले कुछ समय से बीमार तीजन बाई रायपुर के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती थीं। आज सुबह 11 बजे उनका पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव गनियारी लाया गया, जहां राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।

छत्तीसगढ़ के अटारी गांव में 8 अगस्त, 1956 को जन्मीं तीजन बाई ने बालपन में ही पंडवानी गायन शुरू कर दिया था। कहते हैं कि जिस दिन उनका जन्म हुआ उस दिन लोकपर्व तीज था इसलिए माता-पिता ने उनका नाम तीजन रखा। आगे चलकर महाभारत की कथाओं को प्रभावी और अनूठे अंदाज में प्रस्तुत कर मंच पर कला का ऐसा सम्मोहक संसार रचा, जिसे देखने और उसका अनुभव करने के लिए दर्शक खिंचे चले आते थे। उनकी प्रस्तुति में खास किस्म की आवाज के साथ भाव-भंगिमा और तंबूरा का विशेष महत्व था। मंच पर ज्यों ही उनका प्रदर्शन आरंभ होता, उनका तंबूरा कभी दुःशासन की बांह, कभी अर्जुन का रथ, कभी भीम की गदा तो कभी द्रौपदी के बाल में बदल कर दर्शकों को इतिहास के उस काल में पहुंचा देता जहां वे जोश, क्रोध, दर्द, उत्साह, उमंग और छलकपट की ऐतिहासिक संवेदना महसूस करते। उनके प्रशंसित प्रदर्शनों में द्रौपदी चीरहरण, दुःशासन वध और भीष्म और अर्जुन के बीच महाभारत का युद्ध शामिल हैं।

उन्होंने 13 वर्ष की उम्र में अपना पहला मंच प्रदर्शन किया। उस समय महिला पंडवानी गायिकाएं केवल बैठकर गा सकती थीं, जिसे वेदमती शैली कहा जाता है। जबकि पुरुष गायक खड़े होकर कापालिक शैली में गाते थे। तीजनबाई पहली महिला थीं जिन्होंने कापालिक शैली में पंडवानी का प्रदर्शन किया। एक दिन प्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवीर ने उन्हें सुना और तीजनबाई का जीवन बदल गया।

तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से लेकर अनेक राष्ट्राध्यक्षों और अति विशिष्ट लोगों के सामने उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया। कला के क्षेत्र में उनके अप्रतिम योगदान के लिए उन्हें 1987 में पद्मश्री, 2003 में पद्म भूषण और 2019 में देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से नवाजा गया। उन्हें 1995 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा 2007 में नृत्य शिरोमणि से भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें जापान का प्रतिष्ठित फुकुओका कला पुरस्कार भी मिला था।

तीजनबाई को बिलासपुर विश्वविद्यालय द्वारा डीलिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। 1980 के दशक में शुरू होकर उन्होंने एक सांस्कृतिक राजदूत के रूप में दुनिया भर की यात्रा की, जिसमें इंग्लैंड, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, तुर्की, ट्यूनीशिया, माल्टा, साइप्रस, रोमानिया और मॉरीशस जैसे देश शामिल हैं।

बॉस के गाँव में

कहानी

राजेन्द्र कुमार सिंह

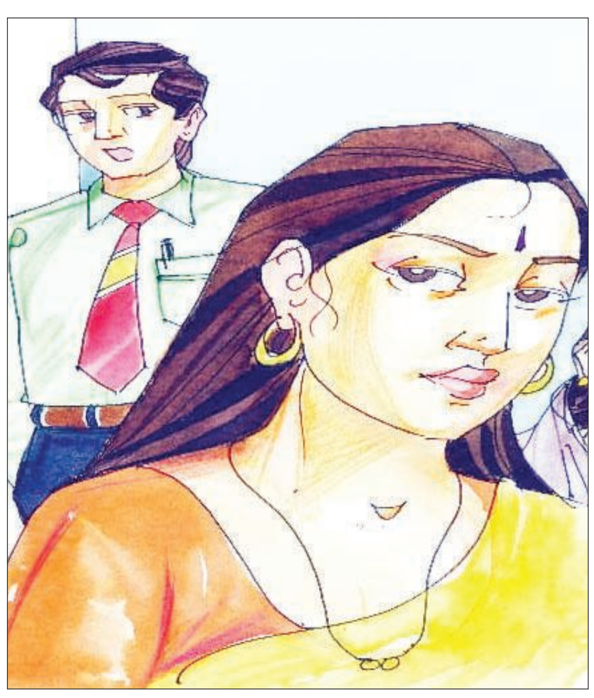

अंतस् का कोलाहल जैसे चीख उठा था। कमरे में सुबह की लालिमा धीरे-धीरे फैल रही थी। आशुतोष अब भी निश्चिंत होकर सो रहा था। उसकी पत्नी नमिता कई बार उसे जगा चुकी थी, पर वह आठ बजे से पहले बिस्तर छोड़ने वाला नहीं था।

जैसे ही घड़ी में आठ बजते और अलार्म बजता, उसका आधे घंटे का समय मानो दौड़ने लगता। नौ बजे तक वह अपनी दिनचर्या पूरी कर नाश्ते की मेज पर बैठ जाता और फिर सीधे ऑफिस के लिए निकल पड़ता।

आशुतोष आलसी नहीं था, बल्कि अत्यंत सक्रिय और स्फूर्तिवान व्यक्ति था। सुबह की उसकी आदत भले ही किसी को भ्रमित कर दे, पर काम के प्रति उसकी प्रतिबद्धता अद्वितीय थी। वह हर कार्य लक्ष्य के साथ करता था।यही कारण था किऑफिस में उसका बॉस उसे एक सिद्धान्तवादी और भरोसेमन्द अधिकारी मानता था।

'बॉस, टारगेट से पहले काम पूरा न हो तो कहिएगा।' वह आत्मविश्वास से कहता।

ऑफिस का माहौल सामान्य सरकारी दफ्तरों जैसा ही था-कुछ कर्मठ, कुछ कामचोर। कई कर्मचारी महीनों का काम लम्बित रखते और डाँट के आदी हो चुके थे।

इन्हीं के बीच एक अलग ही व्यक्तित्व था- बुलाकी सिंह।

बुलाकी सिंह के बारे में सहकर्मी अक्सर कहते- 'यार, कम से कम अपना काम तो खुद कर लिया कर।'

लेकिन बुलाकी मुस्कुरा देता।

असल में, बुलाकी एक विचित्र, किन्तु उदार स्वभाव का व्यक्ति था। उसका काम अक्सर दूसरे कर्मचारी कर देते थे, और इसके बदले वह उन्हें अपनी तनख्वाह का एक बड़ा हिस्सा दे देता था।

पहली नजर में यह व्यवस्था अटपटी लगती थी, पर धीरे-धीरे सब इसके अभ्यस्त हो गये थे। सहकर्मी ऊपर से भले ही उसकी आलोचना करते, पर भीतर से सन्तुष्ट रहते- क्योंकि अतिरिक्त आय का एक साधन बन चुका था।

बुलाकी आर्थिक रूप से बेहद संपन्न था। उसके दोनों बेटे अमेरिका में उच्च पदों पर कार्यरत थे। गाँव में खेती-बाड़ी, शहर में किराये की दुकानें और ब्याज की आय-सब मिलाकर उसे धन की कोई कमी नहीं थी।

वह अपने छोटे भाई को भी अपने हिस्से की आय का बड़ा भाग दे देता था। पैसे के प्रति उसका दृष्टिकोण अलग था- 'जरूरत भर रखो, बाकी समाज का है।'

समय के साथ उसने ऑफिस से एक तरह का मोहभंग महसूस करना शुरू कर दिया। काम में उसकी रुचि कम होने लगी, पर जीवन के प्रति उसकी ऊर्जा कहीं और दिशा तलाश रही थी।

आखिरकार, एक दिन उसने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने का निर्णय कर लिया।

सहकर्मियों ने समझाया-

'इतनी लंबी पारी खेल ली, अब कुछ साल और निकाल लो।'

पर बुलाकी ने मन बना लिया था।

विदाई के दिन ऑफिस में उत्सव जैसा माहौल था। सहकर्मी, अधिकारी, परिवार-सब मौजूद थे। आशुतोष स्वयं उसे विदा करने आया।

उस दिन बुलाकी के चेहरे पर एक अलग ही संतोष था- मानो वह किसी नये सफर की ओर बढ़ रहा हो।

अगले ही दिन से उसका जीवन बदल गया।

अब वह एक गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ) के माध्यम से सामाजिक कार्यों में जुट गया। गाँव-गाँव जाकर लोगों की समस्याएं सुनना, उन्हें समाधान की दिशा दिखाना- यही उसका नया उद्देश्य बन गया।

गर्मी का मौसम शुरू होते ही जल-संकट ने विकराल रूप ले लिया। कई गाँवों में पानी की भारी कमी थी।

इसी क्रम में एक गाँव में जल-टंकी निर्माण का बड़ा आयोजन रखा गया। विधायक, कलेक्टर और स्थानीय प्रतिनिधि मंच पर उपस्थित थे।

सभा में भारी भीड़ थी।

बुलाकी सिंह श्रोताओं की पहली पंक्ति में बैठा था। तभी किसी ने बताया

'यह गांव आशुतोष सर का है।'

कुछ ही देर में घोषणा हुई-

'इस परियोजना के मुख्य सहयोगी, समाजसेवी बुलाकी सिंह!'

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच बुलाकी मंच पर पहुँचा।

मंच से बोलते हुए उसकी नजर पीछे खड़े आशुतोष पर पड़ी। उसने मुस्कुराते हुए हाथ हिलाया और कहा-

'आज मेरे लिए यह क्षण बेहद खास है। अपने जीवन की पहली पारी मैंने जिनके अधीन काम करते हुए पूरी की, आज उसी बॉस के गाँव से अपनी दूसरी पारी शुरू कर रहा हूँ।'

सभा में सन्नाटा छा गया, फिर जोरदार तालियाँ गूँज उठीं।

आशुतोष मंच पर आ चुका था।

बुलाकी ने आगे कहा-

'नौकरी में रहते हुए मैं सीमाओं में बँधा था, पर आज मैं खुलकर समाज के लिए काम कर सकता हूँ। और इससे बड़ी खुशी क्या होगी कि इसकी शुरुआत अपने बॉस के गाँव से हो रही है।'

तालियों की गूंज दूर तक फैल गई।

उस दिन सिर्फ एक जल-टंकी की नींव नहीं रखी गई थी,
बल्कि एक नए जीवन की भी नींव रखी गई थी-
जहाँ 'नौकरी' समाप्त हुई,और 'सेवा' शुरू हुई।

कहानी

रवीन्द्र कुमार रतन

भ्रातृ-प्रेम और मोह

बैशाली, जिले के एक गाँव में नहछू और लहछू नामक दो भाई रहते थे। दोनों का अच्छा खासा परिवार था। इल्म, ईमान और इनसानियत में दोनों एक दूसरे से बढ़कर थे। गाँव के कुछेक लोगों को उनकी तरक्की देखी नहीं गई। अक्सर गाँव के लोग एक-दूसरे के दुःख से उतना दुःखित नही होते, जितना दूसरे के सुख से दुःखी होते हैं।

कैसे यह इतना सुखी है? इसके सुख के कारणों को ही मिटा दिया जाए। ऐसे लोगों को तबतक चैन होता भी नहीं, जब तक घर को जलाकर घुरा न ताप लें। इसी योजना के सफलीभूत के लिए दोनों को एक-दूसरे के खिलाफ भड़काने लगे। बस क्या था? बालू की भीत पर खड़ा यह सम्बन्ध आरी ड्रेर, खेती-बारी का झंझट होते-होते दोनो भाइयों में मुकदमा लेकर कचहरी तक का चक्कर आरम्भ हो गया।

दोनों भाई एक दूसरे के जानी दुश्मन बन गए। एक दूसरे के यहाँ आना-जाना, खाना-पीना, बोल-चाल सब बन्द हो गया। काफी लम्बी लड़ाई चली। खून को खून पहचान नहीं रहा था। घर टूट रहा था ग्वार लूट रहा था। स्थिति वद से बदतर होती जा रही थी। मानो उन दोनों ने नींव हिलाने का फैसला कर लिया हो।

समय बीतता गया, दिन, महीने बीतते गये। अचानक बड़े भाई नहछू की तबीयत खराब हुई। डाक्टर-वैद्य तो रोग की दवा है। परिणामतः काल के सामने उनकी एक न चली। नहछू वेचारा काल कलवित हो गया। अपने पीछे अपनी विधवा के साथ रोते बिलखते वच्चे और अविवाहित बच्चियों को छोड़ कर चल बसा। हाहाकार! मच गया।

आपसी विद्वेष की अग्नि में एक परिवार अपने भाग्य पर आठ-आठ आँसू बहाने के सिवाय कर ही क्या सकता है?

लहछू की पत्नी आँसू बहाकर भी प्रसन्न थी। अब तो उसका पौ बारह है। न रहा बाँस और न बजेगी बाँसुरी। अब तो उसका एक-छत्र राज होगा। मगर लहछू की स्थिति पंख कटे गिद्ध की-सी थी। मानो बड़े भाई की मृत्यु उसे समाज के सामने नंगा कर गयी हो। वह अपने समाज में अपने को मुँह दिखाने के काबिल नहीं समझता था। उसकी आत्मा उसे धिक्कारती...।

तो वह रोता और कहता-भैया जिन्दगी के खेल में तुम जीत गये, मैं हार गया। तुम्हारी जीत ने मेरे अभिमान को चूर-चूर कर दिया, मगर मेरा स्वाभिमान जग गया और मैं अपने अस्तित्व को पहचान गया।

समय के साथ-साथ दिन गुजरने लगा। लहछू की पत्नी उसके कान भरने लगी। लहछू बिगरा, और उसने अपनी भाभी और बच्चों को बुला कर कहा- देखो! जब मेरा जोड़ीदार ही नहीं रहा तो हमारी लड़ाई कैसी? चलकर सभी मुकदमे में समझौता लगा लो समझो कि भाई ने तुम्हें अकेला नहीं छोड़ा। मैं हूँ न! जब तक मैं जीवित हूं तुम्हे कोई चिन्ता-फिक्र नहीं करनी है। पिछली बातों को भुला दो और नयी जिन्दगी में हमें प्रायश्चित करने का मौका दो। न जाने स्वार्थ में पड़ कर हमने भैया को कितना दुःख दिया। आज उनकी आत्मा हमें कोस रही होगी।

भ्रातृ-प्रेम और मोह का इतना जीता-जागता अच्छा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलेगा ।

ओ राम जी तेरे भक्तन ने...!

व्यंग्य

रन्दी सत्यनारायण राव

रन्दी सत्यनारायण राव

मित्र, खिलण्दड़ जी को जब अपने साथ अलसुबह दौड़ लगाते हुए 'जय जय श्रीराम, जानकी राम.. सब को सम्मति दे भगवान्...' गीत गुनगुनाते सुना तो पूछ बैठा- 'भाया यह अचानक गाने का फितूर कैसे सवार हो गया..?' उसने ठिठक कर मेरी ओर ऐसे देखा, जैसे कोई पचास करोड़ का 'स्वान' देख लिया हो। फिर बोला- 'देश में हमेशा कहीं न कहीं चुनाव होते ही रहते हैं। सभी जगह 'राम जी' का ही नाम गूँजता रहता है। माहौल देख कर मेरा भी मन हुआ बस, यह गीत स्वमेव होंठों पर आ गया, लेकिन इससे आप के पेट में मरोड़ क्यों..?'

'राम नाम से आपको कोई आपत्ति नहीं, यह मेरे लिए किसी अचरज से कम नहीं..!'

उन्होंने कहा- 'ऐसा क्यों कह रहे हो भाया, क्या मुझे भी शान्ति दूत का प्रतिनिधि या मुहब्बत की दुकान खोल कर बैठने वाला साहूकार या फिर महामाया-ठगनी समझ लिया है...?'

मैंने उनसे रूष्ट होने का नाटक करते हुए सवाल किया।

मुआमले की गंभीरता को भाँपते हुए खिलण्दड़ जी तनिक निकट आकर बोले- 'वह क्या है कि इन दिनों ग्रीष्म-ऋतु में भी स्वहित नामा के कहीं मेघ-मल्हार तो कहीं ठण्डी झिलमिल स्वाति फुहार से वातावरण सुवासित हो रहा है। श्रीराम के मंदिर के 'अमानत में खयानत' का शोर यत्र-तत्र और सर्वत्र व्याप्त है। 'तू चोर है तो तू चोर' का राग-दरबार पूरे यौवन पर है। आज 'श्री राम', की आरती उतारने को ऐसे दल भी ताल ठोंक कर मैदान में आ गए हैं जो कल तक, श्रीराम के आस्तित्व को ही नकार रहे थे। यह राम जी की माया है या स्वार्थ की छाया कि उनके मुख से आज यह गीत सुनने को नसीब हो रहा है- 'ओ राम जी तेरे भक्तन ने बड़ा दुःख दीना..!' क्या पक्ष और क्या विपक्ष, सब स्वार्थवश डकैतों के पीछे खड़े हैं। किसी को सरकारी जाँच एजेंसियों पर विश्वास नहीं, लेकिन जाँच जारी है। यह दृश्य को देखने-सुनने के लिए, इस महान देश में जन्म लेना गर्व का ही तो विषय है, ऐसे में मेरे द्वारा यह गीत गाते जाना तो बनता है- 'राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट.. यदि आप में धन-बल, जन-बल, और माँसल सामर्थ्य है तो जी भर कर लूटें.. इस लूट की प्रक्रिया में अब श्रीराम मंदिर अछूता कैसे रहता? अलबत्ता राम जी के शयन-कक्ष में प्रवेश करते ही उनके भक्तों द्वारा उन्हें अर्पित-समर्पित दान को वहाँ तैनात अन्तरी-सन्तरी तक ने लूट लिया। आखिर दान के रुपयों की शक्ति के आगे, राम जी की भक्ति, और श्रद्धा हार गई।'

कहते-कहते रोष में आ खिलण्दड़ जी अपनी मुट्ठियाँ भींचने लगे। उनको तनिक शांत करने हेतु, दाल-भात में मूसरचन्द बन आए एक हैदराबादी नेता के कहे गए उद्गारों को कि- 'वहां किसी मुस्लिम को रखा गया होता तो अब तक उसका एंकाउण्टर हो चुका होता।'

मेरे मार्फत उनके विचारों को सुन खिलण्दड़ जी आपे से बाहर होने लगे- 'अजी उन्हें अपनी दुकान देखनी चाहिए। चन्दा-चोरी का हौव्वा बना दिया। अजी भारतीयों से यह मौलिक पेटेंट आविष्कार कौन छीन सकता है कि यहाँ ऊँचे लोग बैंकों की ऊँची राशि उड़ा कर पुष्पक विमान में सवार होकर छू मंतर हो जाते हैं, उन्हें पकड़ने वाला कोई रडार आविष्कृत हुआ ही नहीं, जब की नीचे के लोग 'राम नाम जपना पराया माल अपना' मान कर लूटने का सर्वाधिकार सुरक्षित किए पड़े होते हैं। इन्हें पकड़ने वाला अथवा मारने वाला प्रक्षेपास्त्र अब तक नाकाम इसलिए हुआ कि, नीची उड़ान भर कर अपना हित साधने वाले को रडार पकड़ ही नहीं पाता और प्रक्षेपास्त्र वार करने से पहले ही दम तोड़ देता है। यह सनातनियों की समस्या है तो वे ही निपटें. आगामी चुनाव को ध्यान में रख कर इसे 'हिन्दु-मुस्लिम'के खेल से रोटियाँ सेकने वाले दूर ही रहें तो अच्छा। उन्हें मैं एक रहस्य की बात बताना चाहता हूँ, जो वे जान कर भी स्वार्थ वश अनजान बने रहना चाहते हैं। जब कोई मस्जिद अथवा मंदिर बनवाने की बारी आती है तो चन्दा देने वाले धन कुबेरों की आवश्यकता होती है और धन कुबेरों का अभीष्ट होता है कि उस धन को सूद समेत प्राप्त करना। भगवान् इस कर्ज को किसी माध्यम से चुकाते हैं। जिस प्रकार इस्लाम में धर्म या मजहब को जीवित, पुष्पित-पल्लवित करने के निमित्त सोलह बच्चे पैदा कर अपने धर्म को उपकृत और धनी करना अभीष्ट होता हैं। उसी प्रकार मंदिर के भगवान् भी अपने भक्तों को धनी और सम्पन्न होने का अवसर प्रदान करते हैं तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ता है? उनको अपने मजहब की वृद्धि के लिए जन-बल की आवश्यकता है तो इनको अपने कर्ज के वापसी की जल्दी है? क्या दोनों स्वीकार योग्य हैं?'

पिनक में खिलण्दड़ जी की आँखें पुनः लाल और मुट्ठियाँ कसने लगी थीं। उनका रौद्र रूप देख मैं भी सकते में था। पहलवान आदमी है, कहीं सनक गया तो मेरा भी कहीं 'हरी-बोल', न कर दे। विचार का आना था कि 'राम जी सब का भला करें' कह चुपके से निकल लिया।

एम्स देवघर में मरीजों के परिजनों के लिए बनेगा अत्याधुनिक विश्राम गृह

देवघर, 05 जुलाई : देवघर स्थित एम्स में इलाज कराने आने वाले मरीजों के परिजनों को जल्द ही ठहरने की बेहतर सुविधा मिलेगी। इस महत्वाकांक्षी परियोजना की शुरूआत करते हुए विश्राम गृह निर्माण के लिए एमओयू (समझौता ज्ञापन) पर हस्ताक्षर किए गए। झारखंड के दूरदराज के जिलों के अलावा बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और अन्य राज्यों से बड़ी संख्या में मरीज इलाज के लिए एम्स देवघर पहुंचते हैं। ऐसे में मरीजों के साथ आने वाले परिजनों को ठहरने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी आवश्यकता को देखते हुए विश्राम गृह के निर्माण की योजना बनाई गई है। प्रस्तावित विश्राम गृह में 100 लोगों के लिए डॉरमेट्री, 20 आवासीय कमरे और भोजन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे मरीजों के परिजनों को कम खर्च में सुरक्षित और सुविधाजनक ठहरने का विकल्प मिल सकेगा। विश्राम गृह के निर्माण की पूरी लागत सेवादान आरोग्य फाउंडेशन ने अपनी कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) योजना के तहत वहन की जाएगी।

पुलिस ने वाहन चोर गिरोह के तीन सदस्यों को किया गिरफ्तार

देवघर, 05 जुलाई : देवघर पुलिस ने एक सक्रिय वाहन चोर गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपितों की निशानदेही पर चोरी की नौ मोटरसाइकिलें बरामद की गई हैं। पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों और वाहन चोरी के नेटवर्क की भी जांच कर रही है। दरअसल, पुलिस अधीक्षक प्रवीण पुष्कर के निर्देश पर तीन जुलाई को चलाए गए एंटी क्राइम चेकिंग एवं अड्डेबाजी विरोधी अभियान के दौरान पालाजोरी थाना पुलिस ने अनारकली हाई स्कूल के समीप छापेमारी की। कार्रवाई के दौरान चोरी की एक सुपर स्प्लेंडर मोटरसाइकिल के साथ संजय चार (32) को गिरफ्तार किया गया।

59 जर्जर विद्यालयों का युद्ध स्तर पर जीर्णोद्धार जारी : उपायुक्त

सीएम एसओई की तर्ज पर विकसित होंगे धनबाद के 464 स्कूल : डीसी

देश प्राण संवाददाता

धनबाद, 05 जुलाई : धनबाद जिले में बीते एक वर्ष के भीतर स्कूली शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए अभूतपूर्व सुधारों, क्रांतिकारी बदलावों और ढांचागत परिवर्तनों के बारे में उपायुक्त आदित्य रंजन ने विस्तार से जानकारी दी।

समाहरणालय सभागार में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान उपायुक्त श्री रंजन ने जिले की शैक्षणिक व्यवस्था को सुदृढ़, आधुनिक और परिणामोन्मुखी बनाने के लिए उठाए गए कदमों पर विस्तृत वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने आंकड़ों और धरातलीय उपलब्धियों के जरिए यह रेखांकित किया कि कैसे पिछले एक वर्ष में सरकारी स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक की तस्वीर बदली गई है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में जिला स्तरीय टीम द्वारा विद्यालय में किए गए विभिन्न नवाचारों एवं प्रयासों के आधार पर नो कॉस्ट, लो कॉस्ट पर आधारित 200 अंकों का मूल्यांकन किया गया। इसमें जिन विद्यालयों ने 180 या उससे अधिक अंक प्राप्त किया उनका हाई कास्ट में मूल्यांकन कर विद्यालयों को आवश्यकता के अनुसार सिविल कार्यों से लेकर विभिन्न आपूर्ति सामग्री तक उपलब्ध कराई गई।

जबकि जिन विद्यालयों को मानकों के अनुसार अंक नहीं मिले उन्हें आवश्यक सुझाव देकर सुधारात्मक प्रयास के लिए प्रेरित किया गया। इस प्रयोग से विद्यालय के प्रति बच्चों एवं शिक्षकों के आत्मीय लगाव, छात्रों की उपस्थिति, हाउस एवं बाल संसद के प्रतिनिधियों की सक्रियता तथा उनके बीच सामूहिक सकारात्मक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई। उपायुक्त ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में धनबाद जिले को अव्वल बनाने के लिए जिले के 464 स्कूल को सीएम स्कूल आफ एक्सीलेंस की तर्ज पर विकसित करने की प्रक्रिया जारी है।

इसके अंतर्गत स्कूल में अतिरिक्त क्लास रूम, गर्ल्स-बॉयज के लिए अलग-अलग शौचालय, बाउंड्री वॉल, स्पोर्ट्स ग्राउंड, पार्किंग, भोजनालय, डायनिंग एरिया, मल्टीपरपज हॉल, बेंच-डेस्क, हेल्थ किट, स्पोर्ट्स किट सहित उच्च व्यवस्था बच्चों के लिए उपलब्ध कराई जाएगी।

खबरकोना

एमएनसीयू आए परिजनों से डीसी ने लिया फीडबैक

धनबाद, 05 जुलाई : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी आदित्य रंजन ने एमटीसी सभागार में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले एमएनसीयू वार्ड में भर्ती बच्चों को मिल रही स्वास्थ्य सुविधाओं और चिकित्सा व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान उपायुक्त ने विशेष रूप से तोपचांची प्रखंड से इलाज के लिए आए एक नवजात शिशु के परिजनों से मुलाकात की। उन्होंने परिजनों से सीधे बातचीत कर अस्पताल द्वारा दिए जा रहे इलाज, दवाओं की उपलब्धता और चिकित्सा कर्मियों के व्यवहार के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। परिजनों ने उपायुक्त को बताया कि बच्चे को समय पर चिकित्सा सुविधा मिल रही है और डॉक्टर लगातार उसकी निगरानी कर रहे हैं। उपायुक्त ने कहा कि एमएनसीयू में आने वाले हर बच्चे को उच्च स्तरीय चिकित्सा देने का निर्देश दिया गया है। साफ-सफाई, जीवन रक्षक दवाओं की उपलब्धता और अन्य व्यवस्था में कोई कमी नहीं होने देने का भी निर्देश दिया है।

केरल में मिलीं धनबाद की कबली देवी, परिजनों को सुपुर्द

धनबाद, 05 जुलाई : जिला समाज कल्याण विभाग और वन स्टॉप सेंटर के संयुक्त प्रयास से 20 वर्षों से लापता श्रीमती कबली देवी को आज पूर्वी टुंडी प्रखंड के अंतर्गत ग्राम दलदली (पंचायत चुरुरिया) में उनके परिजनों को सुपुर्द किया गया। मौके पर कबली देवी के पति, बेटा-बेटी, पोता-पोती के साथ गांव के अनेक लोग मौजूद थे। दरअसल, 65 वर्षीय श्रीमती कबली देवी लगभग 20 साल पहले अचानक अपने गांव से कहीं चली गई थीं। लंबे समय तक खोजबीन के बाद भी जब उनका कोई सुराग नहीं मिला, तो परिजनों ने उन्हें मृत मान लिया था और उनके पति ने दूसरी शादी भी कर ली थी। वहीं उनके 20 साल बाद वापस गांव लौटने से परिवार सहित पूरे गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। उल्लेखनीय है कि श्रीमती कबली देवी केरल के कालीकट (कोझिकोड) में मिलीं, जिसके बाद उन्हें वहां के सरकारी आशा भवन (महिला) में रखा गया था। इस पूरे मामले में केरल के स्थानीय पुलिस इंस्पेक्टर शिवनमुनाथिल ने बेहद मानवीय और सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने कड़ी मेहनत कर महिला के धनबाद स्थित घर का पता लगाया और फोन के माध्यम से धनबाद के अधिकारियों को इसकी जानकारी दी। तत्पश्चात जिला समाज कल्याण पदाधिकारी स्नेह कश्यप के निर्देशानुसार एक विशेष टीम का गठन किया गया। जिसमें जिला बाल संरक्षण इकाई के परामर्शदाता मदन मोहन महथा एवं चौकीदार आरती कुमारी को शामिल किया गया।

धनबाद में 5 लाख 45 हजार 869 ईएफ का हुआ वितरण

जिले के सभी 6 विधानसभा क्षेत्रों में मतदाताओं को ईएफ वितरण का कार्य जारी है

देश प्राण संवाददाता

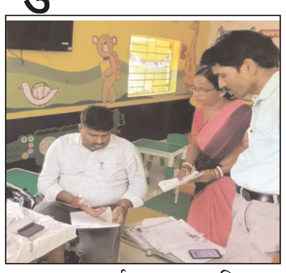

धनबाद, 05 जुलाई : धनबाद जिले में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर 2026) के लिए एन्यूमरेशन फॉर्म (ईएफ) का वितरण जारी है। इसकी जानकारी देते हुए उपायुक्त आदित्य रंजन ने बताया कि जिले के सभी 6 विधानसभा क्षेत्रों में मतदाताओं को ईएफ वितरण का कार्य जारी है। उन्होंने बताया कि अब तक 5 लाख 45 हजार 869 मतदाताओं को ईएफ वितरित किया जा चुका है।

ईएफ वितरण की विधानसभा वार जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि ईएफ वितरण में टुंडी सबसे आगे है। जहाँ 1,29,734 ईएफ बांटे जा चुके हैं। वहीं दूसरे स्थान पर निरसा है। निरसा में 1,02,067 ईएफ का वितरण किया गया है। जबकि सिंदरी में 1,00,025 ईएफ का वितरण पूरा हो चुका है। वहीं धनबाद विधानसभा में 78,687, झरिया में 71,400 तथा बाघमारा में 63,956 ईएफ का वितरण किया गया है।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि ईएफ वितरण के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी तथा सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी अपने-अपने विधानसभा में मतदान केंद्रों का भ्रमण कर रहे हैं, उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से समय पर पूरा किया जा सके।

आकाश योग केंद्र एवं शांति भवन में योग गुरु देव महाराज का प्रेरणादायी प्रवचन

देश प्राण संवाददाता

कोडरमा, 05 जुलाई : झुमरी तिलैया स्थित आकाश योग केंद्र एवं गुरु कृपा शांति भवन पूर्णिमा टॉकीज गली में हरिद्वार से पधारे परम पूज्य योग गुरु एवं आयुर्वेद आचार्य योग देव महाराज के सान्निध्य में आध्यात्मिक, योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार एवं गुरुदेव के सम्मान के साथ हुआ।

शांति भवन परिवार एवं आकाश योग केंद्र के सदस्यों ने पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर उनका आत्मीय स्वागत किया। प्रेरणादायी प्रवचन में गुरुदेव ने कहा कि योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास का संपूर्ण विज्ञान है। उन्होंने कहा कि नियमित योगाभ्यास, सात्विक जीवनशैली एवं सकारात्मक विचार व्यक्ति को निरोग, आत्मविश्वासी और सफल बनाते हैं। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों से प्रतिदिन कम से कम एक घंटा योग एवं प्राणायाम के लिए निकालने का आग्रह किया। गुरुदेव ने नाम-जप साधना का महत्व बताते हुए कहा कि राम नाम का जाप गिनती से नहीं, बल्कि एक लय, श्रद्धा और निरंतर भाव से करना चाहिए।

उन्होंने बताया कि निरंतर नाम-स्मरण मन को स्थिर करता है और जीवन में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करता है। कार्यक्रम के उपरांत कोडरमा जिला योगासन खेल संघ के अध्यक्ष आकाश कुमार सेठ, कोषाध्यक्ष ईशा कुमारी एवं संयुक्त सचिव मनोज कुमार यादव को लगभग दो घंटे तक गुरुदेव के साथ योग, आयुर्वेद, खेल विज्ञान एवं योगासन प्रतियोगिताओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। गुरुदेव ने खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता बढ़ाने, मानसिक एकाग्रता विकसित करने तथा प्रतियोगिता के दबाव में स्वयं को संतुलित रखने के प्रभावी उपाय बताए। उन्होंने खिलाड़ियों को सलाह दी कि नियमित अभ्यास के साथ पर्याप्त नींद, समय पर भोजन, सात्विक एवं पौष्टिक आहार, मौसमी फल, हरी सब्जियां, अंकुरित अनाज, दूध, दही तथा पर्याप्त जल का सेवन करें। साथ ही जंक फूड, शीतल पेय एवं नशीले पदार्थों से पूर्ण दूरी बनाए रखें। गुरुदेव ने झारखंड राज्य स्तरीय योगासन खेल प्रतियोगिता में कोडरमा जिले द्वारा तृतीय स्थान प्राप्त करने पर योग शिक्षक आकाश कुमार सेठ, ईशा कुमारी एवं मनोज कुमार यादव सहित संपूर्ण टीम को बधाई एवं आशीर्वाद दिया।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि खिलाड़ी इसी समर्पण और अनुशासन के साथ तैयारी करेंगे तो आगामी राष्ट्रीय योगासन खेल प्रतियोगिता में भी कोडरमा एवं झारखंड का नाम पूरे देश में गौरवान्वित करेंगे।

निजी अस्पतालों की मनमानी पर रोक लगाए सरकार : बटेश्वर

देश प्राण संवाददाता

कोडरमा, 05 जुलाई : झारखंड स्वतंत्रता सेनानी विचार मंच के केंद्रीय अध्यक्ष बटेश्वर प्रसाद मेहता ने राज्य में निजी अस्पतालों द्वारा इलाज के नाम पर कथित मनमानी और अत्यधिक शुल्क वसूले जाने पर गहरी चिंता जताई है।

उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी से इस पर तत्काल हस्तक्षेप कर प्रभावी कार्रवाई करने की मांग की है। प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बटेश्वर प्रसाद मेहता ने कहा कि झारखंड में कई निजी अस्पताल इलाज, जांच, ऑपरेशन और अन्य चिकित्सा सेवाओं के नाम पर मरीजों एवं उनके परिजनों से मनमाने तरीके से पैसे वसूल रहे हैं। स्वास्थ्य सेवा एक मानवीय सेवा है और इसे केवल कमाई का साधन बनाना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि हाल ही में रांची के राज हॉस्पिटल से जुड़ा मामला भी इस बात का संकेत है कि राज्य के निजी अस्पतालों पर प्रभावी निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता है। ऐसे मामलों की निष्पक्ष एवं उच्चस्तरीय जांच कर दोषी पाए जाने वाले अस्पतालों के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

बटेश्वर ने मांग की कि राज्य सरकार सभी निजी अस्पतालों में इलाज, जांच, ऑपरेशन तथा अस्पताल के कमरों के शुल्क की एक समान एवं पारदर्शी मानक दर निर्धारित करे। इससे मरीजों का आर्थिक शोषण रुकेगा और स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता आएगी। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार को निजी अस्पतालों की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखने के लिए एक सशक्त मॉनिटरिंग तंत्र विकसित करना चाहिए।

जन्मशताब्दी वर्ष पर डोमचांच में प्रज्ञा पुराण कथा का शुभारंभ

कोडरमा, 05 जुलाई : वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में गायत्री चेतना केन्द्र, डोमचांच में आयोजित पांच दिवसीय प्रज्ञा पुराण कथा का शुभारंभ रविवार को भव्य कलश एवं चेतना शोभायात्रा के साथ हुआ। शोभायात्रा में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सिर पर कलश धारण कर तथा हाथों में धर्मध्वज, मशाल, वेद, पौधे और प्रेरक संदेशों की तख्तियां लेकर नगर भ्रमण किया। गायत्री महामंत्र, जयघोष और प्रेरक गीतों से पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा।कार्यक्रम का शुभारंभ नगर अध्यक्ष उमेश वर्मा ने देवकन्याओं के सिर पर कलश एवं वेद स्थापित कर किया। उन्होंने कहा कि वंदनीया माताजी का जीवन सेवा, साधना, संस्कार और नारी जागरण का प्रेरणास्रोत रहा है। इस आयोजन का उद्देश्य समाज में नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का विस्तार करना है।

बाबा बैद्यनाथ मंदिर में पूर्व की भांति जारी रहेगी स्पर्श पूजा : धर्मरक्षिणी

देवघर, 05 जुलाई : बाबा बैद्यनाथ मंदिर में स्पर्श पूजा को लेकर चल रही चचाओं के बीच पंडा धर्मरक्षिणी सभा ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा है कि मंदिर में पूर्व की भांति ही स्पर्श पूजा जारी रहेगी और पूजा-पद्धति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया गया है।

पंडा धर्मरक्षिणी सभा के वरीय उपाध्यक्ष चंद्र शेखर खबाड़े ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि हाल ही में पंडा धर्मरक्षिणी सभा और जिला प्रशासन के बीच हुई बैठक में श्रावणी मेला की व्यवस्थाओं सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। इनमें बाबा मंदिर में जलार्पण के लिए बाह्य अर्घा की व्यवस्था प्रमुख मुद्दा रही।

उन्होंने स्पष्ट किया कि बाह्य अर्घा की व्यवस्था केवल उन श्रद्धालुओं के लिए की जा रही है, जो शारीरिक रूप से असमर्थ हैं, शीघ्र दर्शनम कूपन का खर्च वहन करने में सक्षम नहीं हैं या फिर बुजुर्ग, बीमार, महिलाएं और बच्चे हैं, जिनका उद्देश्य केवल बाबा पर जल अर्पित करना है। ऐसे श्रद्धालुओं के लिए यह एक वैकल्पिक सुविधा होगी।

खबाड़े ने कहा कि मंदिर की पारंपरिक पूजा-पद्धति, स्पर्श पूजा या अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन, छेड़छाड़ या प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। श्रद्धालु पहले की तरह गर्भगृह में स्पर्श कर पूजा-अर्चना कर सकेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि आगामी 15 जुलाई 2026 को श्रावण मास की पूजा व्यवस्था को लेकर एक और बैठक प्रस्तावित है।

पीएम स्वनिधि योजना के छह वर्ष पूरे, झुमरीतिलैया में 'स्वनिधि महोत्सव'

देश प्राण संवाददाता

कोडरमा, 05 जुलाई : प्रधानमंत्री स्वनिधि (पीएम स्वनिधि) योजना के सफलतापूर्वक छह वर्ष पूरे होने के अवसर पर झुमरी तिलैया नगर परिषद द्वारा 'स्वनिधि महोत्सव' का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य स्ट्रीट वेंडर्स को योजना से जोड़ते हुए उन्हें स्वरोजगार के लिए आर्थिक रूप से सशक्त बनाना तथा सरकार की विभिन्नजनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना था। महोत्सव के दौरान 35 लाभुकों की ऑनलाइन क्रेडिट प्रक्रिया पूरी कराई गई। वहीं विभिन्न बैंकों के माध्यम से कुल 94 स्ट्रीट वेंडर्स के ऋण आवेदनों को स्वीकृति के लिए अग्रसारित किया गया। इनमें 54 वेंडर्स के 15-15 हजार रुपये, 28 वेंडर्स के 25-25 हजार रुपये तथा 12 वेंडर्स के 50-50 हजार रुपये के ऋण आवेदन शामिल हैं। नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी अंकित गुप्ता ने बताया कि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का मुख्य उद्देश्य स्ट्रीट वेंडर्स को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना तथा उनके व्यवसाय के विस्तार को प्रोत्साहित करना है।

उन्होंने कहा कि नगर परिषद द्वारा पात्र लाभुकों को योजना का लाभ दिलाने के साथ-साथ अन्य सरकारी योजनाओं से भी जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। सिटी मिशन मैनेजर नीलम कुमारी ने बताया कि योजना के अंतर्गत तीन चरणों में ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। समय पर ऋण चुकाने वाले लाभुकों को ब्याज सब्सिडी का लाभ मिलता है, वहीं डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन भी दिया जाता है। उन्होंने स्ट्रीट वेंडर्स से डिजिटल भुगतान अपनाने और समय पर ऋण अदायगी करने की अपील की।

कार्यक्रम में जल जीवन मिशन, सड़क सुरक्षा बीमा योजना, कन्या योजना सहित कुल आठ विभिन्न सरकारी योजनाओं की भी जानकारी स्ट्रीट वेंडर्स को दी गई, ताकि वे इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। अधिकारियों ने बताया कि वर्ष 2020 में शुरू हुई प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत नगर परिषद क्षेत्र से अब तक 2,041 आवेदन प्राप्त हुए।

धूमधाम से मनाया गया राजद का 30 वां स्थापना दिवस, कार्यकर्ताओं में उत्साह

देवघर, 05 जुलाई : राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के 30 वें स्थापना दिवस के अवसर पर शनिवार को देवघर के एक स्थानीय होटल के सभागार में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम उत्साह और जोश के माहौल में संपन्न हुआ।

जिसमें बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता और समर्थक शामिल हुए। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय विधायक और राजद विधायक दल के नेता सुरेश पासवान उपस्थित रहे। उनके साथ जिला अध्यक्ष फणी भूषण यादव, जिला प्रवक्ता प्रमोद यादव, भूतनाथ यादव सहित सैकड़ों कार्यकर्ता और समर्थक मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने केक काटकर किया। सभा को संबोधित करते हुए विधायक सुरेश पासवान ने कहा कि लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी ने अपने संघर्ष और मेहनत से राष्ट्रीय जनता दल को मजबूत बनाया है। उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद यादव ने गरीबों, वंचितों और दबे-कुचले लोगों को आवाज देने का काम किया। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में राजद और अधिक मजबूत होकर राज्य की राजनीति में प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराएगा। कर्यक्रम में मनोरंजन कुमार, रामकृष्ण कुमार, हैदर खान, लाल मोहन मांझी, विनोद यादव, मुहम्मद जमील खां, रीता सिंह, नेहा सिंह सहित बड़ी संख्या समर्थक उपस्थित थे।

देवघर में जुलाई मध्य से शुरू होगी होमगार्ड भर्ती की आवेदन प्रक्रिया

देवघर, 05 जुलाई : जिले में होमगार्ड भर्ती की तैयारी तेज हो गई है। उपायुक्त सौरभ कुमार भुवानिया की अध्यक्षता में आयोजित जिला स्तरीय समिति की बैठक में गृह रक्षा वाहिनी की नियुक्ति प्रक्रिया को मंजूरी दे दी गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि जुलाई माह के मध्य से आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी, जबकि राजकीय श्रावणी मेला-2026 के समापन के बाद भर्ती की आगे की प्रक्रिया शुरू होगी। बैठक में उपायुक्त ने भर्ती प्रक्रिया से जुड़े सभी चरणों को समयबद्ध ढंग से पूरा करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। उन्होंने आवेदन प्राप्त करने की व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाने, प्राप्त आवेदनों की स्क्रूटनी और भौतिक सत्यापन की तैयारियां समय पर सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया। इसके साथ ही उपायुक्त ने शारीरिक दक्षता परीक्षा और लिखित परीक्षा को पूरी तरह निष्पक्ष, पारदर्शी और व्यवस्थित वातावरण में संपन्न कराने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरी करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया।

विशेष गहन पुनरीक्षण का अनुमंडल पदाधिकारी ने लिया जायजा

कोडरमा, 05 जुलाई : भारत निर्वाचन आयोग के निदेशानुसार जिले में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में अनुमंडल पदाधिकारी निर्मल सोरेन ने सतगावां प्रखंड के सुदूरवर्ती मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के तहत बूथ स्तरीय पदाधिकारियों (बीएलओ) द्वारा किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी ने बीएलओ से घर-घर भ्रमण, गणना प्रपत्रों के वितरण एवं संग्रहण, पात्र मतदाताओं के नाम जोड़ने, अपात्र एवं मृत मतदाताओं के नाम विलोपित करने तथा मतदाता सूची को त्रुटिरहित एवं अद्यतन बनाने हेतु किए जा रहे कार्यों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने सभी बीएलओ को निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का पूर्ण अनुपालन करते हुए निर्धारित समय-सीमा के भीतर पुनरीक्षण कार्य संपन्न करने के निर्देश दिए।

भाजपा कोडरमा नगर मंडल की बैठक, प्रदेश अध्यक्ष के आगमन पर चर्चा की

बूथ स्तर तक पार्टी की मजबूती सुनिश्चित करने तथा आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा

देश प्राण संवाददाता

कोडरमा, 05 जुलाई : भारतीय जनता पार्टी कोडरमा नगर मंडल की मासिक संगठनात्मक बैठक रविवार को जिला उपाध्यक्ष के आवासीय कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता नगर मंडल अध्यक्ष संजय कुमार पासवान ने की, जबकि संचालन नगर महामंत्री उत्तम कुमार ने किया।

बैठक में मंडल प्रभारी प्रभाकर लाल रावत भी मौजूद रहे। बैठक में संगठन को और अधिक सशक्त बनाने, बूथ स्तर तक पार्टी की मजबूती सुनिश्चित करने तथा आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई। नगर अध्यक्ष संजय कुमार पासवान ने कहा कि मजबूत संगठन ही भाजपा की सबसे बड़ी ताकत है।

उन्होंने कार्यकताओं से संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत बनाने और जनसंपर्क बढ़ाने का आह्वान किया। मंडल प्रभारी प्रभाकर लाल रावत ने कहा कि भाजपा की वास्तविक शक्ति उसके समर्पित कार्यकर्ता और सुदृढ़ संगठन हैं। उन्होंने पार्टी की नीतियों एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रमों को घर-घर तक पहुंचाने का आह्वान करते हुए कार्यकताओं से सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की। बैठक में 6 जुलाई को डोमचांच में प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद आदित्य साहू के प्रस्तावित आगमन को लेकर तैयारियों की भी समीक्षा की गई तथा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी गईं।

इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष गोपाल कुमार गुतूल, राजकुमार यादव, जिला महामंत्री नरेंद्र पाल, नगर उपाध्यक्ष चंदन सिन्हा, पंकज सिंह, सीताराम, नगर महामंत्री संदीप गुप्ता, नगर मंत्री सचिंद्र शर्मा, मुकेश यादव, नगर कोषाध्यक्ष संजय सिंह, संदीप सिन्हा, राहुल राणा, नवीन लाल, मनीष कुमार, महेश नाथ सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

कोटालपोखर पुलिस ने किया अज्ञात शव बरामद

साहिबगंज, 05 जुलाई : कोटालपोखर थाना पुलिस ने रविवार को संध्या कोटाल पोखर पत्थर डिपो के समीप से अज्ञात तकरीबन 30 वर्षीय युवक का शव बरामद किया है। पंचनामा के दौरान उक्त युवक की पहचान नहीं की जा सकी, वहीं स्थानीय लोगों की माने तो वह विक्षिप्त बताए जाते हैं, जो आसपास क्षेत्र में घूमते देखे गए थे। अचानक रविवार की संध्या कोटाल पोखर डिपो के समीप रोड पर उक्त व्यक्ति का शव देख स्थानीय लोगों के द्वारा इसकी जानकारी कोटाल पोखर थाना पुलिस को दी गई। जानकारी मिलते ही थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया है। इसमें बाबत कोटालपोखर पवन कुमार ने बताया कि प्रथम दृष्टिया उक्त व्यक्ति विक्षिप्त मालूम जान पड़ता है, पोस्टमार्टम के उपरांत ही इसकी मौत से पर्दा हट पाएगा। उन्होंने बताया यूडी केश दर्जकर पोस्टमार्टम के उपरांत शीत गृह में शव रखे जाएंगे।

एसडीओ ने बीएलओ समेत सुपरवाइजर को कराया कर्तव्य बोध

साहिबगंज : सदर प्रखंड सभागार मे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)-2026 को लेकर रविवार को राजमहल एसडीओ सदानंद महतो ने नेतृत्व मे बैठक किया गया।बैठक मे राजमहल एसडीओ सदानंद महतो ने बीएलए, बीएलओ, सुपरवाइजर एवं वालंटियरों की जिम्मेदारियां स्पष्ट कीं। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध एवं त्रुटिरहित बनाने के लिए सभी संबंधित कर्मी भारत निर्वाचन आयोग के दिशा- निदेर्शों के अनुरूप निष्पक्षता और समयबद्धता के साथ कार्य करें। एसडीओ ने बताया कि बीएलओ घर-घर जाकर सत्यापन करेंगे,बीएलए पुनरीक्षण प्रक्रिया में निर्धारित नियमों के तहत सहयोग करेंगे, सुपरवाइजर कार्यों की निगरानी करेंगे, तथा वालंटियर मतदाताओं को जागरूक करने और प्रपत्र भरने में सहायता करेंगे।

नाबालिग से छेड़खानी, थाने में शिकायत दर्ज

गोड्डा : प्रखंड थाना क्षेत्र में एक नाबालिक के साथ एक अन्य धर्म के युवक द्वारा छेड़खानी किए जाने और बाद में आपत्ति जनक फोटो वायरल किए जाने की धमकी देते हुए धर्म परिवर्तन के लिए दवाब बनाए जाने से संबंधित ठाकुर गंगटी थाना में आवेदन दिए जाने का मामला प्रकाश में आया है। ठाकुरगंगटी थाने को दिए गए आवेदन में नाबालिक की मां ने आवेदन में लिखा है कि वह लड़का मेरे बच्ची के साथ पढ़ता था। मैट्रिक पास करने के बाद मेरी बच्ची गोड्डा पढ़ने चली गई। जहां वह मेरी नाबालिक पुत्री से फोन पर बात किया करता था एक दिन बहुत आग्रह करके फोन पर उसने मेरी नाबालिक बेटी को गोड्डा के ही एक कैफे में बुलाया जहां मेरी बच्ची को कॉफी के साथ कुछ नशीली पदार्थ खिलाकर उसके साथ छेड़खानी किया और कुछ तस्वीरें खींच ली बाद में वह युवक अक्सर मेरी बच्ची को फोन करता था।

उपायुक्त ने मतदान केंद्रवार प्रगति की समीक्षा बैठक आयोजित

✦विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक मतदान केंद्र पर गणना प्रपत्रों के वितरण, प्राप्ति एवं उसकी प्रविष्टि की मतदान केंद्रवार समीक्षा की

देश प्राण संवाददाता

गोड्डा, 05 जुलाई : उपायुक्त-सह-जिला निर्वाचन पदाधिकारी लोकेश मिश्रा के निर्देश पर आज अनुमंडल कार्यालय, महागामा के सभा कक्ष में विशेष गहन पुनरीक्षण के सफल एवं समयबद्ध क्रियान्वयन को लेकर समीक्षा बैठक आयोजित की गई।बैठक की अध्यक्षता निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी, महागामा द्वारा की गई। बैठक में सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी एवं बीएलओ सुपरवाइजर उपस्थित थे। इस दौरान विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक मतदान केंद्र पर गणना प्रपत्रों के वितरण, प्राप्ति एवं उसकी प्रविष्टि की मतदान केंद्रवार समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान जिन मतदान केंद्रों पर प्रगति अपेक्षाकृत कम पाई गई।

वहां विशेष अभियान चलाकर घर-घर संपर्क स्थापित करते हुए शत-प्रतिशत गणना प्रपत्रों का वितरण एवं समय पर संग्रहण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। साथ ही प्राप्त प्रपत्रों की त्रुटिरहित एवं समयबद्ध प्रविष्टि करने तथा निर्धारित समय सीमा के भीतर सभी कार्य पूर्ण करने पर विशेष बल दिया गया।

निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सह-अनुमंडल पदाधिकारी ने कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम निर्वाचन आयोग का अत्यंत महत्वपूर्ण अभियान है। इसमें सभी बीएलओ, बीएलओ सुपरवाइजर एवं संबंधित पदाधिकारी पूरी जिम्मेदारी, पारदर्शिता एवं गंभीरता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। प्रत्येक पात्र मतदाता तक गणना प्रपत्र पहुंचाना तथा किसी भी पात्र मतदाता का नाम छूटने न पाए, यह सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।बैठक में मतदान केंद्रवार प्रगति की नियमित मॉनिटरिंग करने, क्षेत्र भ्रमण बढ़ाने, लंबित प्रपत्रों का शीघ्र निष्पादन करने तथा प्राप्त प्रपत्रों की गुणवत्ता एवं शुद्धता बनाए रखने के निर्देश भी दिए गए।

बैठक में उपस्थित बीएलओ सुपरवाइजर एवं एईआरओ को निर्देशित किया गया कि वह अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखते हुए एसआईआर सभी कार्यों को निर्वाचन आयोग के दिशा-निदेर्शों एवं जिला निर्वाचन पदाधिकारी के निदेर्शानुसार निर्धारित समय सीमा के भीतर सफलतापूर्वक संपन्न कराना सुनिश्चित करें।

मुक्तेश्वर धाम गंगा घाट पर चला स्वच्छता एवं श्रमदान अभियान

देश प्राण संवाददाता

साहिबगंज, 05 जुलाई : गंगा मिशन, कोलकाता के सौजन्य से तथा नगर परिषद साहिबगंज के सहयोग से रविवार प्रातः साहिबगंज मुक्तेश्वर धाम गंगा घाट पर विशेष गंगा स्वच्छता अभियान एवं श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अभियान में शिक्षा केंद्र के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, नगर परिषद के कर्मियों, गंगा समिति के सदस्यों तथा स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए गंगा घाट की साफ-सफाई की और स्वच्छता का संदेश दिया।कार्यक्रम के दौरान घाट परिसर से प्लास्टिक, पॉलीथिन एवं अन्य अपशिष्ट पदार्थों को एकत्रित कर उनका समुचित निस्तारण किया गया। सभी प्रतिभागियों ने प्लास्टिक मुक्त गंगा, स्वच्छ गंगा का संकल्प लिया तथा लोगों से गंगा तटों पर कचरा एवं प्लास्टिक नहीं फेंकने की अपील की । इस अवसर पर मॉडल कॉलेज राजमहल के प्राचार्य एवं जिला गंगा समिति, साहिबगंज के सदस्य डॉ. रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि गंगा हमारी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत है। इसकी स्वच्छता प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है।

उन्होंने वन महोत्सव सप्ताह के अवसर पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने का आह्वान करते हुए कहा कि वृक्ष पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण तथा जलवायु संतुलन के आधार हैं। उन्होंने प्लास्टिक का उपयोग कम करने तथा लगाए गए पौधों की देखभाल करने की बात कही। उन्होंने कहा, श्रमदान गंगा के प्रति सम्मान और हमारी ज़िम्मेदारी का सशक्त संदेश बन सकता है।

डॉ. श्यामा मुखर्जी जी की 125वीं स्मरण पर भाजपा का सम्मेलन संपन्न

साहिबगंज, 05 जुलाई : भाजपा पार्टी साहिबगंज जिला द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की 125वीं स्मरण पखवाड़ा के तहत बरहरवा स्थित कृष्णा होटल में जिला कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष गौतम कुमार यादव ने की,जबकि मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री राज पलिवार उपस्थित रहे।कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी,पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।इस दौरान उपस्थित कार्यकताओं ने राष्ट्र निर्माण में उनके अतुलनीय योगदान का स्मरण करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। सम्मेलन के दौरान पाकुड़ विधानसभा के पूर्व विधायक स्वर्गीय बेनी प्रसाद गुप्ता के हाल ही में हुए निधन पर दो मिनट का मौन रखकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकाकुल परिजनों को इस दुःख की घड़ी में संबल प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

खुले सेप्टिक टैंक में मिला 8 वर्षीय मासूम का शव

देश प्राण संवाददाता

गोड्डा, 05 जुलाई : पथरगामा प्रखंड अंतर्गत गांधीग्राम में एक आठ वर्षीय मासूम की संदिग्ध परिस्थिति में हुई मौत से पूरे गांव में शोक और आक्रोश का माहौल है। शुक्रवार दोपहर से लापता बच्चे का शव शनिवार सुबह फोरलेन निर्माण के दौरान डीबीएल कंपनी द्वारा बनाए गए कैंप परिसर के खुले सेप्टिक टैंक से बरामद हुआ। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल गोड्डा भेज दिया है। परिजनों ने इस मामले में हत्या की आशंका जताते हुए निष्पक्ष जांच और दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

मृतक की पहचान गांधीग्राम निवासी करण कुमार यादव के आठ वर्षीय के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार शुक्रवार दोपहर करीब तीन बजे राजकुमार स्कूल से घर लौटा था। भोजन करने के बाद वह घर के पिछे नानी के घर जाने की बात कहकर निकला लेकिन देर शाम तक वापस नहीं लौटा। इसके बाद परिजनों और ग्रामीणों ने रातभर उसकी तलाश की पर उसका कोई पता नहीं चल सका।शनिवार सुबह गांव के कुछ लोग डीबीएल कंपनी के पूर्व कैंप परिसर की ओर गए तो उनकी नजर खुले सेप्टिक टैंक में तैर रहे एक बच्चे के शव पर पड़ी। सूचना मिलते ही परिजन और ग्रामीण मौके पर पहुंचे, जहां शव की पहचान राजकुमार यादव के रूप में हुई। बेटे का शव देखते ही परिवार में कोहराम मच गया और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

ग्रामीणों ने बताया कि फोरलेन सड़क निर्माण के दौरान डीबीएल कंपनी ने गांधीग्राम मुख्य चौक के समीप कैंप बनाया था। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद कंपनी वहां से चली गई लेकिन परिसर में बना बड़ा सेप्टिक टैंक वहीं छोड़ दिया गया। आरोप है कि टैंक का ढक्कन और उस पर लगा लोहे का सरिया निकाल लिए जाने के कारण वह लंबे समय से खुला पड़ा था और उसमें पानी भर गया था, जिससे यह हादसा हुआ। परिजनों का कहना है, बच्चे की हत्या कर शव टैंक में फेंके जाने की आशंका जताई है और मामले की गहन जांच की मांग की है।

महागामा नप अध्यक्ष सुनील ने लोगों की सुनी समस्याएं, कार्यों का किया निरीक्षण

देश प्राण संवाददाता

गोड्डा, 05 जुलाई : महागामा नगर पंचायत अध्यक्ष प्रबोध सोरेन ने रविवार को वार्ड संख्या-07 का दौरा कर क्षेत्र में लगी स्ट्रीट लाइट का निरीक्षण किया।

इस दौरान उन्होंने स्ट्रीट लाइटों की कार्य स्थिति का बारीकी से जायजा लिया तथा स्थानीय लोगों से सीधे संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं, सुझावों एवं आवश्यकताओं को सुना। निरीक्षण के दौरान स्थानीय ग्रामीणों ने सड़क प्रकाश व्यवस्था, साफ-सफाई, पेयजल, नाली एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं से संबंधित अपनी समस्याएं नगर पंचायत अध्यक्ष के समक्ष रखीं। उन्होंने सभी समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों एवं कर्मियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा भरोसा दिलाया कि जनहित से जुड़े प्रत्येक मुद्दे का प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि नगर पंचायत क्षेत्र के प्रत्येक वार्ड में विकास कार्यों की नियमित निगरानी की जा रही है, ताकि आम नागरिकों को बेहतर नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

साथ ही उन्होंने कहा नगर पंचायत की विकास योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे यही हमारी प्राथमिकता है। कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान केवल कार्यालयों में बैठकर नहीं, बल्कि क्षेत्र में पहुँचकर वास्तविक स्थिति का आकलन करने से ही संभव है। इसी उद्देश्य से नगर पंचायत के विभिन्न वार्डों का लगातार निरीक्षण किया जाएगा।

स्थानीय लोगों ने अध्यक्ष द्वारा स्वयं क्षेत्र में पहुँचकर समस्याओं का जायजा लेने एवं त्वरित समाधान के प्रति दिखाई गई प्रतिबद्धता की सराहना की। मौके पर जेई राहुल कुमार,भाजपा नगर अध्यक्ष अशोक यादव, राजाराम राउत,मुन्ना झा, अभिषेक मंडल,अजय भगत सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

हिंदू धर्म रक्षा मंच का सितंबर से सदस्यता अभियान प्रारंभ

देश प्राण संवाददाता

साहिबगंज, 05 जुलाई : हिंदू धर्म रक्षा मंच के केंद्रीय कार्यालय, कासिम बाजार में रविवार को मंच की बैठक वरिष्ठ एवं सम्मानित सदस्य प्रमोद जैन की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

बैठक में मुख्य रूप से सदस्यता अभियान चलाने पर चर्चा हुई।मंच के प्रदेश महासचिव बजरंगी महतो ने सदस्यता अभियान की टीम की घोषणा करते हुए राजेश अग्रवाल को प्रभारी तथा मिथुन राजवंशी, नकुल बर्मन, विनोद सिंह, राम कुमार साहा, श्रीदाम बसु, सचिन घोष एवं सुमित अग्रवाल को सह-प्रभारी बनाया। बैठक मे निर्णय लिया गया कि सदस्यता अभियान सितंबर माह में चलाया जाएगा। इसके पूर्व मंच के कार्यकर्ता व्यापक प्रचार-प्रसार करेंगे।

मंच के केंद्रीय अध्यक्ष संत कुमार घोष ने राजमहल के शवदाह गृह की समस्या पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि राजमहल की उत्तरवाहिनी गंगा के किनारे बिजली चालित शवदाह गृह के निर्माण की मांग को लेकर शीघ्र ही मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री एवं स्थानीय प्रशासन को पत्र भेजा जाएगा तथा आवश्यकता पड़ने पर आंदोलन भी किया जाएगा।

खबरकोना

दस बजे अपने पूर्वज के नाम कार्यक्रम आयोजित

गोड्डा, 05 जुलाई : प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के स्मृति एवं सम्मान में उनके परिजनों तथा स्वजनों द्वारा आयोजित देशव्यापी श्रद्धांजलि कार्यक्रम दस बजे दस मिनट अपने पूर्वज के नामड़ के तहत गोड्डा जिला मुख्यालय में भी उक्त कार्यक्रम का आयोजन होता रहा है। इसी कड़ी में रविवार को नियत समय पर स्थानीय शहीद स्मारक परिसर में अंग क्षेत्र के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद एवं समाज सुधारक स्व. पण्डित रणजीत झा के पुत्र सह लोक मंच सचिव सर्वजीत झा अन्तेवासी की अध्यक्षता तथा अखिल भारतीय शहीद एवं स्वतंत्रता सेनानी परिवार कल्याण महापरिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष झारखंड सह ग्राम जमनी पहाड़पुर के स्वतंत्रता सेनानी स्व. छेदी प्रसाद झा के पुत्र दिवाकांत वत्स के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में शामिल स्व. पंडित रणजीत झा के पंचम पुत्र सह विभिन्न खेल संघ सचिव सुरजीत झा, डोन बोस्को स्कूल निदेशक अमित राय, कवि शैलेन्द्र प्रसाद, ग्राम हिलाबै के स्वतंत्रता सेनानी नंदकिशोर मांझी के पुत्र ओमप्रकाश मांझी, ग्राम महेशपुर के स्वतंत्रता सेनानी स्व. रत्नेश्वर झा के पौत्र प्रियव्रत परमेश, ग्राम पक्सो के स्वतंत्रता सेनानी नीलकंठ ठाकुर जी के पौत्र गौरव वत्स के अलावा देववंधा के सूरज कुमार, लीलातरी के दीनबंधु, मसी सोरेन एवं दिनेश मुर्मू ने बापू एवं लोक नायक जय प्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि के पश्चात देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों एवं भारत माता के जोरदार जयकारे लगाए। कार्यक्रम का समापन परंपरानुसार राष्ट्रगान से हुआ।

गोड्डा में अवैध महुआ शराब बरामद

गोड्डा, 05 जुलाई : पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार के निर्देश पर अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस ने आज अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी आकाश भारद्वाज की नेतृत्व में गोड्डा प्रखंड के धमदाहा गांव से छापेमारी कर लगभग 100 लीटर महुआ शराब, शॉप पैकेट टैबलेट, 200 किलोग्राम जावा महुआ एवं 10 किलोग्राम बखर बरामद किया है। बताया गया कि पुलिस ने मौके से बरामद अवैध शराब एवं जावा महुआ को नष्ट कर दिया है। जानकारी के छापेमारी के दौरान घर के सभी सदस्य फरार बताए गए हैं जिस किसी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। बताया गया है कि पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर संलिप्त लोगों की गिरफ्तारी में जुट गई है।

घरेलू विवाद में एसिड पीने से किशोरी की मौत, इलाज के दौरान तोड़ा दम

गोड्डा, 05 जुलाई : जिले के मेहरमा थाना क्षेत्र के सुखाड़ी पंचायत अंतर्गत शोभापुर गांव में घरेलू विवाद के बाद कथित रूप से एसिड पी लेने वाली 16 वर्षीय किशोरी की इलाज के दौरान मौत हो गई। इस दर्दनाक घटना से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई है, जबकि परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। मृतका की पहचान 16 वर्षीय पायल कुमारी के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार शनिवार को किसी घरेलू विवाद के बाद पायल ने कथित रूप से एसिड पी लिया। इसके बाद उसकी तबीयत अचानक बिगड़ने लगी। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन उसे तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मेहरमा लेकर पहुंचे। वहां डॉ. प्रणव राज ने प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल, गोड्डा रेफर कर दिया। सदर अस्पताल में भी स्थिति गंभीर रहने के कारण चिकित्सकों ने उसे मायागंज अस्पताल, भागलपुर भेज दिया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक मृतक के पिता संजय पासवान ग्रामीण पुलिस में कार्यरत हैं।

चंडी झोपड़ियां में तीसरा बार लगा ट्रांसफॉर्मर

साहिबगंज, 05 जुलाई : बरहरवा प्रखंड क्षेत्र के बटाईल पंचायत अंतर्गत चंडी झोपड़ियां के स्कूल टोला ग्राम में रविवार को विद्युत विभाग के द्वारा नया ट्रांसफार्मर पुनः लगाया गया। वही पुनः ट्रांसफार्मर लगने से जहां स्थानीय लोगों में हर्ष का माहौल देखा गया, वहीं लोगों में संशय की भी स्थिति देखी गई ।ग्रामीण बताते हैं कि बीते तकरीबन 15 दिन पूर्व गांव में स्थित 16 केवीए का ट्रांसफर जल गया था, जिसकी लिखित शिकायत विभाग से ग्रामीणों के द्वारा किया गया ।तदुपरांत विभाग ने नया ट्रांसफार्मर लगाया, वह भी ट्रांसफार्मर दो-तीन दिन के अंदर जल गया, पुनः विभाग के द्वारा एक और ट्रांसफार्मर 25 केभीए का लगाया गया, वह भी ट्रांसफार्मर दो-तीन दिनों में ही जल गया। हालांकि इस बार विभाग के द्वारा यह ग्रामीणों को भरोसा दिलाया गया है कि यह नहीं जलेगा। साथ ही मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने विद्युत विभाग से गांव में जर्जर तार को अति शीघ्र दुरुस्त करने का मांग किया है, उन्होंने बताया कि संबंधित गांव के करीब जहां विद्यालय सहित स्वास्थ्य केंद्र मौजूद है, वहीं जर्जर तार के कारण आए दिन लोगों में भय का माहौल बना रहता है।इस मौके पर भाजपा युवा मोर्चा के समाजसेवी संजीत कुमार यादव, समाजसेवी श्रीकांत घोष, नंदलाल रजवाड़, विवेक राय, मंटू रजवार तथा ग्राम के सम्मानित नागरिक उपस्थित रहे।

राजद ने साहिबगंज में मनाया पार्टी का 30 वां स्थापना दिवस

✦राजद जिलाध्यक्ष सत्यनारायण यादव व प्रदेश सचिव मुन्ना यादव ने पार्टी कार्यकताओं के साथ राजद पार्टी का झंडोतोलन किया

देश प्राण संवाददाता

साहिबगंज, 05 जुलाई : शहर के कॉलेज रोड स्थित मछुआ सोसाइटी परिसर में रविवार को राष्ट्रीय जनता दल का 30 वां स्थापना दिवस समारोह बड़े ही धूमधाम तरीके से मनाया गया।

जहां इस खास मौके पर राजद जिलाध्यक्ष सत्यनारायण यादव व प्रदेश सचिव मुन्ना यादव ने पार्टी कार्यकताओं के साथ राजद पार्टी का झंडोतोलन किया। मौके पर राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, पुर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, तेजस्वी यादव समेत अन्य वरीय नेताओं के नारे लगाए। राजद जिलाध्यक्ष सत्यनारायण यादव ने कहा कि लालू प्रसाद यादव शुरू से ही पिछड़ा वर्ग,अल्पसंख्यक वर्ग,दलित वर्ग, गरीब असहाय लोगों के लिए लगातार कार्य करते आ रहे हैं जो आगे भी चलता रहेगा। वही राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के विचारधारा से प्रेरित होकर शहर के बड़तल्ला निवासी अधिवक्ता लालबाबू यादव व सामाजिक कार्यकर्ता दिनेश पासवान ने रविवार को राजद पार्टी की सदस्यता ग्रहण किया। मौके पर राजद जिलाध्यक्ष सत्य नारायण यादव ने अधिवक्ता लालबाबू यादव को जिला महासचिव एवं दिनेश पासवान को नगर अध्यक्ष की घोषणा करते हुए उन्हें राजद पार्टी में शामिल कराते हुए माला पहनाकर स्वागत किया।

मौके पर मुख्य रूप से जिला महासचिव लालबाबू यादव,युवा राजद जिलाध्यक्ष सद्दाम हुसैन, सदर प्रखंड अध्यक्ष रामवतार सिंह,उधवा प्रखंड अध्यक्ष मामलोत शेख,राजमहल प्रखंड अध्यक्ष रैमाफुल शेख,बरहरवा प्रखंड अध्यक्ष पंचानन साहा, समेत राजद कार्यकर्ता मौजूद थे।

14 दिवसीय उद्यमी कॉस्ट्यूम ज्वेलरी प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन

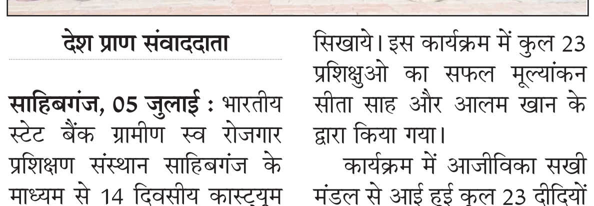

देश प्राण संवाददाता

साहिबगंज, 05 जुलाई : भारतीय स्टेट बैंक ग्रामीण स्व रोजगार प्रशिक्षण संस्थान साहिबगंज के माध्यम से 14 दिवसीय कास्ट्यूम ज्वेलरी उद्यमी प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन रविवार को किया।

जहाँ समापन समारोह मे आसेर्टी निदेशक प्रदीप कुमार झा दीपक, आजीविका सखी मंडल के प्रखंड प्रबंधक प्रियज्योति सेन आरसेटी के वरीय संकाय राजहंस कुमार ने सभी प्रशिक्षुओ को प्रमाण पत्र देकर उनके उज्जवल भविष्य का कामना किए। मौके पर आसेर्टी प्रशिक्षक बनपलासी सरकार ने प्रशिक्षुओं को ज्वेलेरी के विभिन्न आईटम्स जैसे चूरी, लहठी, इयरिंग, ब्रेसलेट इत्यादि बनाने को सिखाये। इस कार्यक्रम में कुल 23 प्रशिक्षुओ का सफल मूल्यांकन सीता साह और आलम खान के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में आजीविका सखी मंडल से आई हुई कुल 23 दीदियों ने कॉस्ट्यूम ज्वैलरी उद्यमी प्रशिक्षण प्राप्त की। आरसेटी निदेशक ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा कि महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन कर समाज वार देश के आर्थिक विकाश में सहयोग कर सकती है और अपने परिवार को आर्थिक कमजोरी को मजबूत कर सकती। कहा कि जेएसपीएलस और आसेर्टी आज समाज के लिए बहुत अच्छा काम कर रही है और उनके उज्जवल भविष्य का रास्ता दिखा रहे है।

जिले में गणना प्रपत्रों का वितरण, डिजिटाइजेशन का कार्य जारी

देश प्राण संवाददाता

गोड्डा, 05 जुलाई : भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निदेर्शानुसार संचालित विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत गोड्डा जिले में मतदाता सूची के अद्यतन एवं शुद्धिकरण के उद्देश्य से गणना प्रपत्र के वितरण, संग्रहण एवं डिजिटाइजेशन का कार्य पूरी गंभीरता एवं गति के साथ संचालित किया जा रहा है।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त लोकेश मिश्रा के निदेर्शानुसार जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों में बूथ लेवल ऑफिसर बीएलओ, सुपरवाइजर, सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी एवं निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी (एफ्ड) द्वारा प्रतिदिन क्षेत्र भ्रमण कर अभियान की प्रगति की निगरानी की जा रही है। सभी मतदान केंद्रों पर गणना प्रपत्रों के वितरण, संग्रहण एवं डिजिटाइजेशन कार्य को निर्धारित समयसीमा के भीतर पूर्ण करने के लिए विशेष कार्ययोजना के अनुरूप कार्य किया जा रहा है। इस दौरान उपायुक्त ने निर्देश दिया है कि सभी बीएलओ प्रतिदिन प्रातःकाल से ही अपने-अपने मतदान क्षेत्रों में घर-घर जाकर अधिकाधिक मतदाताओं तक पहुंच सुनिश्चित करें।

सुबह के समय अधिकांश मतदाता अपने घरों पर उपलब्ध रहते हैं, जिससे गणना प्रपत्रों का वितरण एवं संग्रहण अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जा रहा है कि कोई भी पात्र मतदाता इस अभियान से वंचित न रहे। बीएलओ द्वारा मतदाताओं को गणना प्रपत्र उपलब्ध कराने के साथ-साथ उन्हें प्रपत्र भरने की प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेजों एवं समय पर प्रपत्र जमा करने के संबंध में भी विस्तार से जानकारी दी जा रही है। विशेष रूप से वृद्धजनों, दिव्यांग मतदाताओं एवं दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले मतदाताओं तक पहुंचकर उन्हें आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जा रहा है। ताकि सभी पात्र नागरिक इस महत्वपूर्ण अभियान में सहजता से भाग ले सकें।

उपायुक्त ने सभी निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों, सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों बीएलओ सुपरवाइजर को निर्वाचन आयोग के दिशा-निदेर्शों का अनुपालन करें।

देशभर के 438 खिलाड़ी दिखाएंगे अपनी प्रतिभा

रांची में अंडर 9 ओपन और गर्ल्स शतरंज चैंपियनशिप की शुरुआत

रांची, 05 जुलाई : झारखंड की राजधानी रांची एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिता की मेजबानी करने जा रही है. 39वीं राष्ट्रीय अंडर-9 ओपन एवं गर्ल्स शतरंज चैंपियनशिप-2026 का आयोजन 6 से 12 जुलाई तक सरला बिरला विश्वविद्यालय, महिलौंग परिसर में होगा।

सात दिनों तक चलने वाली इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 438 बाल शतरंज खिलाड़ी हिस्सा लेंगे और अपनी रणनीति, एकाग्रता तथा बौद्धिक कौशल का प्रदर्शन करेंगे। पांच लाख रुपये की पुरस्कार राशि निर्धारित प्रतियोगिता का आयोजन ऑल झारखंड चेस एसोसिएशन द्वारा रांची जिला चेस एसोसिएशन के सहयोग से तथा ऑल इंडिया चेस फेडरेशन के तत्वावधान में किया जा रहा है. इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता को विश्व शतरंज

महासंघ की मान्यता भी प्राप्त है. खास बात यह है कि करीब आठ वर्षों के अंतराल के बाद रांची को फिर से इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय प्रतियोगिता की मेजबानी का अवसर मिला है. प्रतियोगिता में कुल पांच लाख रुपये की पुरस्कार राशि निर्धारित की गई है।

सरला बिरला विश्वविद्यालय में सभी तैयारियां पूरी आयोजन स्थल सरला बिरला विश्वविद्यालय में खिलाड़ियों और उनके साथ आने वाले प्रशिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए व्यापक तैयारियां की गई हैं. विश्वविद्यालय प्रशासन ने आवास, भोजन, प्रतियोगिता हॉल, चिकित्सा सुविधा, सुरक्षा और अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं पूरी कर ली हैं, ताकि प्रतिभागियों को राष्ट्रीय स्तर के अनुरूप बेहतर वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

खिलाड़ियों के लिए प्रतिभा दिखाने का अवसर आयोजकों का मानना है कि इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले कई खिलाड़ी भविष्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। ऐसे में यह आयोजन खिलाड़ियों के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने का महत्वपूर्ण मंच साबित होगा. साथ ही झारखंड में शतरंज सहित बौद्धिक खेलों के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ाने में भी यह प्रतियोगिता अहम भूमिका निभाएगी.इस आयोजन से रांची को राष्ट्रीय खेल मानचित्र पर नई पहचान मिलने की उम्मीद है।

देशभर से आने वाले खिलाड़ी, कोच, अभिभावक और अधिकारी झारखंड की संस्कृति, प्राकृतिक सौंदर्य और आतिथ्य से भी रूबरू होंगे. प्रतियोगिता को सीसीएल, एनटीपीसी और बीसीसीएल का सहयोग प्राप्त है। ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी नवजोत अलंग ने कहा कि रांची के लिए यह बेहद गौरव का अवसर है। प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। हमारा प्रयास है कि खिलाड़ियों को बेहतरीन सुविधाएं दी जाये।

पाकिस्तान टीम का ऐलान, बाबर आजम होंगे कप्तान

नई दिल्ली, 05 जुलाई : पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने वेस्टइंडीज और इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली टेस्ट सीरीज के लिए टीम का ऐलान करते हुए वरिष्ठ बल्लेबाज बाबर आजम को फिर से टेस्ट टीम की कप्तानी सौंप दी है।

इस भूमिका में शान मसूद की जगह लेंगे। पाकिस्तान 25 जुलाई से 6 अगस्त तक वेस्टइंडीज के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगा और उसके बाद 19 अगस्त से 13 सितंबर के बीच इंग्लैंड में तीन मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगा। टीम में चार अनकैप्ड खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें बाएं हाथ के स्पिनर अली उस्मान, बल्लेबाज मुहम्मद अवैस जफर, तेज गेंदबाज उबैद शाह और विकेट-कीपर बल्लेबाज मुहम्मद गाजी घोरी के नाम हैं। सऊद शकील को इंग्लैंड दौरे की टीम में जगह मिली है, लेकिन उनका चयन फिटनेस पर निर्भर रहेगा।

वेस्टइंडीज के लिए पाकिस्तान टीमः बाबर आजम (कप्तान), आमिर जमाल, अब्दुल्ला फजल, अली उस्मान, अजान अवैस, इमाम उल हक, खुर्रम शहजाद, मोहम्मद अब्बास, मोहम्मद अली, मोहम्मद रिजवान, मोहम्मद अवैस जफर, मुहम्मद गाजी घोरी, साजिद खान, सलमान अली आगा, शान मसूद, उबैद शाह। इंग्लैंड के लिए पाकिस्तान टीमः बाबर आजम (कप्तान), आमिर मुहम्मद गाजी घोरी, साजिद खान, शान मसूद, उबैद शाह।

खबरकोना

महिला टी-20 विश्व कप ने हासिल की रिकॉर्ड तोड़ सफलता, लक्ष्य पूरी तरह हासिल : आईसीसी

लंदन (इंग्लैंड), 5 जुलाई : अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के चेयरमैन जय शाह ने बताया कि महिला टी-20 विश्व कप 2026 ने रिकॉर्डतोड़ सफलता प्राप्त की है। उन्होंने बताया कि 2026 विश्वकप को अब तक का सबसे बड़ा टी-20 विश्व कप बनाने का लक्ष्य पूरी तरह हासिल हुआ है। रिकॉर्ड दर्शक उपस्थिति और डिजिटल व्यूअरशिप इसकी सफलता का प्रमाण हैं। जय शाह ने रविवार को सोशल मीडिया 'एक्स' पर लिखा कि हमारा लक्ष्य था कि यह अब तक का सबसे बड़ा टी-20 विश्व कप हो। रिकॉर्ड तोड़ उपस्थिति और दुनिया भर में टीवी और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बड़ी दर्शक संख्या के साथ, हमने इसे हासिल कर लिया है। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया को शुभकामनाएं, जो लॉर्ड्स में फाइनल में निश्चित रूप से एक शानदार मुकाबला पेश करेंगे। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच महिला टी-20 विश्व कप 2026 का खिताबी मुकाबला रविवार को लॉर्ड्स के मैदान पर होगा। ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को हराकर फाइनल में जगह बनाई है। वहीं, मेजबान इंग्लैंड ने सेमीफाइनल में साउथ अफ्रीका को हराया था। फाइनल मुकाबले की शुरूआत भारतीय समय अनुसार रात आठ बजे से होगी। ऑस्ट्रेलिया महिला टी-20 विश्व कप की सबसे सफल टीम है। उसने 6 बार खिताब हासिल किया है जबकि, इंग्लैंड की टीम एक बार चैंपियन रही है। टी-20 विश्व कप के फाइनल में ऑस्टेलिया और इंग्लैंड की यह चौथी भिड़ंत होगी। इससे पहले तीनों ही बार फाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने जीत दर्ज की।

वैभव सूर्यवंशी ने डेब्यू के बाद मिले प्यार पर जताया आभार

नई दिल्ली, 05 जुलाई : इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टी-20 मुकाबले में भारत के लिए सबसे कम उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने अपने पहले मैच के बाद मिले प्यार और समर्थन के लिए सभी शुभचिंतकों का आभार जताया है। उन्होंने कहा कि देश का प्रतिनिधित्व करना उनके लिए गर्व की बात है और वह हर मैच में टीम के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करेंगे। सूर्यवंशी ने डेब्यू मैच के बाद सोशल मीडिया पर संदेश साझा किया। इंस्टाग्राम स्टोरी में युवा खिलाड़ी ने लिखा, इतने सारे संदेश पाकर मैं अभिभूत हूं। मेरे सभी शुभचिंतकों और वरिष्ठों का उनके लगातार प्यार और सहयोग के लिए धन्यवाद। अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका पाकर मैं सचमुच आभारी हूं और हमेशा अपनी टीम के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करूंगा। आप सभी का हर चीज के लिए धन्यवाद। सूर्यवंशी 15 साल और 99 दिन की उम्र में भारतीय टीम के लिए सबसे कम उम्र में अंतरराष्ट्रीय डेब्यू करने वाले खिलाड़ी बने हैं। उन्होंने महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का वर्षों पुराना रिकॉर्ड तोड़ा। सचिन ने 1989 में पाकिस्तान के खिलाफ 16 वर्ष और 205 दिन की उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था। मैच की बात करें, तो मैनचेस्टर (इंग्लैंड) में खेले गए दूसरे टी-20 में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 190 रन बनाए। अपने डेब्यू मुकाबले में वैभव ने 10 गेंदों पर दो छक्कों की मदद से 14 रन बनाए। इसके अलावा ईशान किशन ने 40 गेंदों पर 49, अभिषेक शर्मा ने 24 गेंदों पर 43, श्रेयस अय्यर ने 22 गेंदों पर 37 और तिलक वर्मा ने 11 गेंदों पर नाबाद 24 रन की उपयोगी पारियां खेलीं। 191 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की शुरूआत बेहद खराब रही और फिल साल्ट तथा जोस बटलर बिना खाता खोले पवेलियन लौट गए। इसके बाद कप्तान हैरी ब्रूक ने 15 गेंदों में 39 रन बनाकर पारी को संभाला। फिर टॉम बैंटन 32 गेंदों में 39 रन और जैकब बेथेल 46 गेंदों में नाबाद 76 रन की शानदार पारियों की बदौलत इंग्लैंड ने 19 ओवर में मुकाबला जीत लिया।

जिला फुटबाल संघ की बैठक संपन्न, 17 जुलाई से लीग प्रतियोगिता होगा आरंभ

लोहरदगा, 05 जुलाई : जिला फुटबाल संघ के तत्वाधान में नदिया स्थित माननीय सांसद सुखदेव भगत के आवासीय कार्यालय में जिला फुटबाल संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक अभिनव सिद्धार्थ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें लोहरदगा जिला लिग प्रतियोगिता आरंभ करने के साथ-साथ अन्य विषयों पर चर्चा कर निर्णय लिया गया । बैठक में निर्णय लिया गया कि वर्ष 2026 जिला फुटबॉल लीग प्रतियोगिता सम्भवतः17 जुलाई से नदिया स्कूल मिनी स्टेडियम में शुरू किया जाएगा जिसमें पूर्व मे जो टीम 2025 में जिला लीग में भाग ले चुकी है उनको सीधा प्रवेश दिया जाएगा अगर उनमें से कोई टीम नही आती है तो कमिटि अपने स्तर से निर्णय लेगी साथ ही साथ जो भी नया टीम प्रतियोगिता में भाग लेना चाहता है इस वर्ष बी डिवीजन लीग भी खेला जाएगा जिसमें उन्हें इ डिविजन में प्रवेश दिया जाएगा । इ डिजाइन में चैंपियन होने वाली टीम को अगले वर्ष अ डिवीजन में सीधा प्रवेश मिलेगा ।सभी टीमों को दिनाक 8.7.2026 तक फार्म उपलब्ध करा दिया जाएगा जिसे 12 7.2026 तक जिला फुटबाल संघ मे जमा करना अनिवार्य होगा । प्रतियोगिता का मैच नदिया स्कूल के मिनी स्टेडियम में खेला जाएगा। प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए जिम्मेदारी दिया जाएगा। बैठक में मुख्य रूप से अभिनव सिद्धार्थ साजिद अहमद मनोज भगत मनोज सोन तिर्की सुकरा उरांव लाल विकास नाथ शाहदेव वीरेंद्र यादव सोनू कुमार नंदकिशोर शुक्ला सोनू कुरैशी राजेंद्र रफीक अंसारी तारीख अनवर गुलाम जिलानी संदीप उरांव जोय तबारक अंसारी विनय उराव अमित मिज हफीजुल हरि उराव जयपाल उराव फैयाज सुहेल आदि उपस्थित थे ।

आईसीसी ने जारी की प्लेयर ऑफ द टूनार्मेंट के नामित खिलाड़ियों की लिस्ट

दुबई, 05 जुलाई : आईसीसी महिला टी20 विश्वकप 2026 में शानदार प्रदर्शन करने वाली ऑस्ट्रेलिया की स्टार ऑलराउंडर एलिस पेरी, इंग्लैंड की सलामी बल्लेबाज डैनी व्याट-हॉज, भारत की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और दक्षिण अफ्रीका की मारिजान कैप को प्लेयर ऑफ द टूनार्मेंट पुरस्कार के लिए नामित किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने रविवार को इन चारों के नाम की लिस्ट जारी की। अपनी-अपनी टीम की ओर से खेलते हुए इन चारों खिलाड़ियों का प्रदर्शन टूनार्मेंट में शानदार रहा है। पेरी और डैनी ने अपनी टीमों को फाइनल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई, जबकि मंधाना के शानदार प्रदर्शन के बावजूद भारतीय टीम ग्रुप चरण से आगे नहीं बढ़ सकी। दूसरी ओर, मारिजान कैप ने दक्षिण अफ्रीका को सेमीफाइनल तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एलिस पेरी (ऑस्ट्रेलिया)185 रन (औसत 46.25)4 विकेट

ऑस्ट्रेलिया के अपराजित अभियान में एलिस पेरी सबसे भरोसेमंद खिलाड़ियों में से एक रहीं। उन्होंने 46.25 की औसत से 185 रन बनाए और चार विकेट भी हासिल किए।

टूनार्मेंट के दौरान उन्हें तीन बार 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया। पेरी ने बांग्लादेश के खिलाफ दो विकेट लेने के साथ नाबाद 19 रन बनाए। इसके बाद पाकिस्तान और भारत के खिलाफ लगातार दो अर्धशतक जड़कर टीम को फाइनल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। डैनी व्याट-हॉज (इंग्लैंड)294 रन (औसत 73.50)स्ट्राइक रेट 152.33 इंग्लैंड की सलामी बल्लेबाज डैनी व्याट-हॉज फाइनल से पहले टूनार्मेंट की सर्वाधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज हैं। उन्होंने 73.5 की औसत से 294 रन बनाए हैं। श्रीलंका के खिलाफ शतक और उसके बाद दो अर्धशतकों की मदद से उन्होंने इंग्लैंड के फाइनल में पहुंचने की राह आसान की। स्मृति मंधाना (भारत)205 रन (औसत 41.00) भारतीय टीम की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने टूनार्मेंट की शानदार शुरूआत की। उन्होंने पाकिस्तान और नीदरलैंड के खिलाफ लगातार दो अर्धशतक लगाकर भारत को जीत दिलाई।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत के आखिरी ग्रुप मैच में उन्होंने 38 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली, लेकिन यह टीम को सेमीफाइनल में पहुंचाने के लिए पर्याप्त साबित नहीं हुई। मारिजान कैप (दक्षिण अफ्रीका)124 रन (औसत 31.00)8 विकेट (औसत 14.37) दक्षिण अफ्रीका की अनुभवी ऑलराउंडर मारिजान कैप ने बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन किया।

श्रेयस अय्यर को पहली जीत का इंतजार, लगातार तीसरी बार हार

✦ श्रेयस अय्यर की टीम को पिछले चार टी 20 मैचों में से तीन में हार का सामना करना पड़ा है

दिल्ली, 05 जुलाईः टी 20 क्रिकेट में भारत का अजेय रहने का सिलसिला अचानक डगमगाने लगा है। टी 20 वर्ल्ड कप जीतने और बिना कोई बाइलेटरल सीरीज हारे वर्ल्ड कप साइकल पूरा करने के कुछ ही महीनों बाद, भारत एक ऐसी स्थिति में आ गया है जिसका उसे पहले अनुभव नहीं था।

श्रेयस अय्यर की टीम को पिछले चार टी 20 मैचों में से तीन में हार का सामना करना पड़ा है, जबकि एक मैच बारिश के कारण रद्द हो गया। आयरलैंड के खिलाफ उसे दो मैचों की सीरीज में 2-0 से हार का सामना करना पड़ा. अब शनिवार, 4 जुलाई को

मैनचेस्टर में इंग्लैंड के हाथों उन्हें चार विकेट से हार का सामना करना पड़ा. लगभग 5 साल में पहली बार भारत लगातार 4 टी 20 मैचों में कोई जीत हासिल नहीं कर पाया है। इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज का पहला टी 20 मैच बारिश की वजह से रद्द हो गया था, लेकिन दूसरे मैच में जैकब बेथेल की नाबाद 76 रनों की पारी की बदौलत मेजबान टीम ने 191 रनों का लक्ष्य एक ओवर पहले ही हासिल कर लिया। हार का कारण 17वां ओवर इस हार के बाद कप्तान श्रेयस अय्यर ने कहा, 'मुझे पता है कि मैच हमारे हाथ से कब निकला, लेकिन मैं किसी एक खिलाड़ी की ओर उंगली नहीं उठाना चाहता।

15वें ओवर के बाद मैच का रुख बदल गया और 17वें ओवर में मुकाबला पूरी तरह उनसे (इंग्लैंड) की तरफ चला गया। इंग्लैंड को आखिरी चार ओवर में 49 रन की जरूरत थी लेकिन बिश्नोई ने 17वें ओवर में दो नॉ बॉल के साथ 29 रन लुटा दिये और मैच पूरी तरह से भारत के हाथ से निकल गया। बिश्नोई के महंगे ओवर पर कप्तान ने कहा, 'उन्होंने नो-बॉल फेंकी, लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि वह इससे सीखेंगे और पहले से ज्यादा मजबूत होकर वापसी करेंगे।

मेजबान कनाडा को हराकर मोरक्को क्वार्टरफाइनल में पहुंचा

ह्यूस्टन, 05 जुलाई : सह मेजबान कनाडा FIFA वर्ल्ड कप 2026 से बाहर होने वाला पहला मेजबान देश बन गया है। म्टूनार्मेंट के राउंड ऑफ 16 के पहले मैच में मोरक्को ने दूसरे हाफ में शानदार खेल दिखाते हुए 3-0 से जीत हासिल की और क्वार्टरफाइनल में अपनी जगह पक्की की।

कनाडा ने मैच की शुरूआत में बेहतर खेल दिखाया, लेकिन वे गोल करने में असफल रहे। जैसे-जैसे पहला हाफ आगे बढ़ा, रेफरी ने सात खिलाड़ियों को येलो कार्ड दिखाया। 40वें मिनट में खेल का माहौल काफी गरमा गया, जब कप्तान अशरफ हकीमी ने रिची लारिया को धक्का दे दिया. दोनों खिलाड़ी एक लंबी बॉल का पीछा कर रहे थे। दूसरे हाफ में मोरक्को

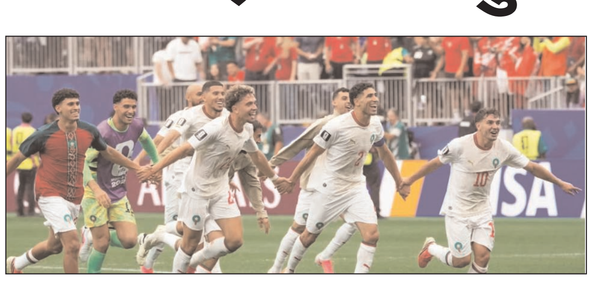

की टीम बदली हुई रणनीति के साथ मैदान पर उतरी और ब्रेक के पांच मिनट बाद ही गोल कर दिया। हकीमी ने फ्री-किक से गेंद को खूबसूरती से अजेदीन ओनाही की तरफ बढ़ाया।

ओनाही को बॉक्स के किनारे पर काफी जगह मिली और उन्होंने गोलकीपर मैक्सिम क्रेपो को छकाते हुए गेंद को नेट में डाल दिया. जिससे अफ्रीकी टीम को बढ़त मिल गई। उम्मीद के मुताबिक, कनाडा बराबरी का गोल करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मोरक्को का डिफेंस मजबूत था। उसके बाद ओनाही ने 82वें मिनट में अपना दूसरा गोल करके जीत पक्की कर दी. इसके बाद स्टॉपेज-टाइम में सूफियान रहीमी ने तीसरा गोल करके जीत पर मुहर लगा दी।अब क्वार्टरफाइनल में मोरक्को का साम फ्रांस से होगा। जिन्होंने पैराग्वे को 1-0 से मात देकर क्वार्टरफाइनल में अपनी जगह पक्की की है।

ताइक्वांडो चैंपियनशिप में हजारीबाग का जलवा, 2 स्वर्ण सहित 8 पदकों पर कब्जा

देश प्राण संवाददाता

हजारीबाग, 05 जुलाई : 2 से 4 जुलाई 2026 तक लोहरदगा में आयोजित 26वीं झारखंड राज्य सब-जूनियर एवं जूनियर ताइक्वांडो चैंपियनशिप-2026 में हजारीबाग ताइक्वांडो संघ के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 2 स्वर्ण, 2 रजत एवं 4 कांस्य पदक सहित कुल 8 पदक जीतकर जिले का नाम पूरे राज्य में गौरवान्वित किया।

बालिका वर्ग में अंशिका राय एवं आराध्या राय ने अपने-अपने भार वर्ग में शानदार मुकाबले जीतते हुए स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। वहीं आराध्या केसरी, रिया गोस्वामी एवं अंतरा कुमारी ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किए। अलंग यशराज ने भी प्रतियोगिता में

सराहनीय प्रदर्शन करते हुए सहभागिता निभाई। बालक वर्ग में आदित्य कुमार एवं चिराग कुमार ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीता, जबकि कार्तिक कुमार ने कांस्य पदक अपने नाम किया।

निशांत कुमार, विवेक चौधरी एवं शिवांश राज ने भी कड़े मुकाबलों में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। हजारीबाग टीम का नेतृत्व कोच आलोक रंजन एवं राजशेखर सिन्हा ने किया, जबकि पंकज यादव ने टीम मैनेजर के रूप में अपनी जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। प्रतियोगिता में हजारीबाग ताइक्वांडो संघ के दिलीप कुमार ने नेशनल रेफरी के रूप में अपनी सेवाएँ देकर जिले का सम्मान बढ़ाया।

खिलाड़ियों की इस शानदार उपलब्धि पर हजारीबाग ताइक्वांडो संघ के अध्यक्ष सुमन कुमार तिवारी, सचिव हेमंत कुमार, एवं संघ के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने विजेता खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों एवं अभिभावकों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों की यह सफलता उनकी कड़ी मेहनत, समर्पण का परिणाम है।

'फिट इंडिया संडेज ऑन साइकिल' में खेल मंत्री मांडविया का आह्वान, रोज एक घंटा खेल-कूद को दें

नई दिल्ली, 05 जुलाई : केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने रविवार को नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम से 'फिट इंडिया संडेज ऑन साइकिल' के 80वें संस्करण का नेतृत्व किया। इस दौरान उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने मोबाइल स्क्रीन से कम से कम एक घंटा निकालकर उस समय को खेल-कूद जैसी गतिविधियों के जरिए अपनी सेहत के लिए समर्पित करें।

इस कार्यक्रम का आयोजन आध्यात्मिक गुरु श्री सत्य साईं के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर श्री सत्य साईं सेवा संगठनों के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस दौरान राष्ट्रीय राजधानी में 9000 से ज्यादा लोगों ने जुम्बा और योग सत्रों के अलावा कम्युनिटी रन और राइड में पूरे

जोश के साथ हिस्सा लिया। इसके अलावा आर्ट ऑफ लिविंग, हार्टफुलनेस और ईशा फाउंडेशन के सहयोग से भी साइकिलिंग ड्राइव आयोजित की गई।

केंद्रीय खेल मंत्री ने कहा कि सभी नागरिकों के लिए फिटनेस जरूरी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2047 तक 'विकसित भारत' का लक्ष्य रखा है। किसी भी देश के विकसित राष्ट्र बनने के लिए वहां के नागरिकों का स्वास्थ्य जरूरी है और स्वस्थ रहने के लिए नागरिकों का फिट होना भी जरूरी है। 'संडेज ऑन साइकिल' प्रधानमंत्री के 'फिट इंडिया' अभियान का ही एक हिस्सा है। सभी लोगों को अपने दिल और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दौड़ना या साइकिलिंग करनी चाहिए। कम्युनिटी फिटनेस राइड की शुरूआत डॉ. मांडविया ने वैदिक मंत्रोच्चार और दीप प्रज्वलन के साथ की। उनके साथ सत्य साईं सेवा संगठन के अखिल भारतीय अध्यक्ष निमिश गुलाबराय पांड्या, सचिव (खेल) हरि रंजन राव, कॉर्पोरेट मामलों की सचिव दीप्ति मुखर्जी और अन्य मौजूद थे। कम्युनिटी फिटनेस राइड शुरू होने से पहले 'नशा मुक्त भारत' की सार्वजनिक शपथ भी ली गई।

इस इवेंट के बारे में बात करते हुए निमिश पांड्या ने कहा कि फिट इंडिया का मकसद हर भारतीय नागरिक को फिट और सेहतमंद बनाना है, जबकि ' सत्य साई सेवा संगठन' का मकसद है- सबसे प्यार करो, सबकी सेवा करो।

इसलिए, 'संडेज ऑन साइकिल' के इस 80वें संस्करण के लिए दोनों संस्थाओं का एक साथ आना एक बेहतरीन मेल है। उन्होंने कहा कि युवाओं को अच्छी आदतें अपनानी चाहिए।

गुरनूर के 10 विकेट और सुदर्शन के शतक से इंडिया ए ने जीती सीरीज

गाले (श्रीलंका), 05 जुलाई : गुरनूर बरार की घातक गेंदबाजी और साई सुदर्शन के शानदार शतक की बदौलत इंडिया ए ने श्रीलंका ए को दूसरे अनधिकृत टेस्ट में 10 विकेट से हराकर दो मैचों की सीरीज 1-0 से अपने नाम कर ली। पहला अनाधिकारिक टेस्ट मैच ड्रॉ पर समाप्त हुआ था। बरार ने मैच में कुल 10 विकेट झटके, जबकि सुदर्शन ने पहली पारी में 168 रन बनाए थे। श्रीलंका के गाले में खेले गए दूसरे अनधिकृत टेस्ट के चौथे दिन रविवार को श्रीलंका ए की दूसरी पारी 209 रन पर सिमट गई। इस तरह इंडिया ए को जीत के लिए केवल 33 रन का लक्ष्य मिला, जिसे साई सुदर्शन और अमन मोखाड़े की सलामी जोड़ी ने महज 6.2 ओवर में बिना कोई विकेट गंवाए हासिल कर लिया।

फ्रांस ने पैराग्वे को हराकर क्वार्टरफाइनल में बनाई जगह, एम्बाप्पे ने रचा इतिहास

फ्रांस, 05 जुलाई : दो बार की वर्ल्ड चैंपियन फ्रांस ने फीफा वर्ल्ड कप 2026 के राउंड ऑफ 16 मैच में पैराग्वे को 1-0 से हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई है।

जहां उनका मुकाबला मोरक्को से होगा। काइलियन एम्बाप्पे ने फिलाडेल्फिया स्टेडियम में खेले गए इस कड़े मुकाबले के दूसरे हाफ में पेनल्टी से एकमात्र गोल किया. इस गोल के साथ वे गोल्डन बूट की रेस में गोल के मामले में लियोनेल मेसी के 7 गोल के बराबर पहुंच गए हैं।

लेकिन असिस्ट के मामले में उनसे आगे हैं। इसके अलावा एम्बाप्पे अब मेसी के वर्ल्ड कप में कुल 20 गोल के रिकॉर्ड से सिर्फ एक गोल पीछे हैं. यह एम्बाप्पे का वर्ल्ड कप नॉकआउट स्टेज में 11वां गोल था, जो एक रिकॉर्ड है. साथ ही वे लगातार तीन टूनार्मेंट के राउंड ऑफ 16 में गोल करने वाले पहले खिलाड़ी बन गए। यह

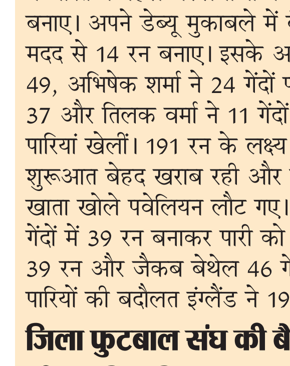

मुकाबला आसान नहीं था फ्रांस के लिए यह मुकाबला आसान नहीं था, जैसा कि उम्मीद की जा रही थी, क्योंकि उनके प्रतिद्वंद्वियों ने काफी आक्रामक खेल दिखाया।

पेनल्टी शूटआउट में जर्मनी को हराकर राउंड ऑफ 16 में पहुंचने वाली पैराग्वे टीम ने फ्रांस के लिए निराशाजनक रहे पहले हाफ में डिफेंस को बहुत मजबूत रखा. फ्रांस के खिलाड़ियों को शरीर पर कुछ चोटें भी आईं। मैच में फ्रांस का बॉल पर कब्जा ज्यादा रहा, लेकिन वे पैराग्वे के अनुशासित डिफेंस को तोड़ने में संघर्ष करते रहे. दूसरे हॉफ में फ्रांस ने हमले तेज किए. आखिरकार 69वें मिनट में पैराग्वे का डिफेंस टूटा, जब श्अफ रिव्यू के बाद डेजायर डौए को पेनल्टी एरिया में गिराए जाने का फैसला दिया गया. एम्बाप्पे ने शांति से पेनल्टी किक ली और गिल को गलत दिशा में छकाते हुए अपनी टीम को अंतिम आठ (क्वार्टर फाइनल) में पहुंचा दिया।

अब हमें मोरक्को पर ध्यान देना है। मैच के बाद एम्बाप्पे ने कहा, 'हमें पता था कि किस तरह का मैच होने वाला है। मुझे लगता है कि हमारे लिए ऐसे गेम का अनुभव करना और यह देखना बहुत अच्छा रहा कि हमने इसे कैसे संभाला. हमने दिखाया कि हम सिर्फ अटैकिंग फुटबॉल खेलने वाली टीम नहीं हैं. हर टीम अपनी ताकत का इस्तेमाल करती है।

मुख्यमंत्री ने किया पटना एम्स का किया निरीक्षण, हरसंभव मदद का दिया भरोसा

✦एम्स, पटना से नाथूपुर तक 4 लेन सड़क का निर्माण कार्य जल्द पूर्ण करने के निर्देश

देश प्राण संवाददाता

पटना 05 जुलाई 2026 : मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने आज एम्स, पटना का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने संस्थान में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं, अधोसंरचना तथा भविष्य की विकास योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार एम्स, पटना के विस्तार एवं विकास के लिए हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी।

उन्होंने एम्स के विस्तार हेतु 24 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने में राज्य सरकार की ओर से आवश्यक सहयोग देने का आश्वासन दिया। अतिरिक्त भूमि मिलने के बाद पटना एम्स में लगभग 200 नये बेड उपलब्ध होंगे, जिससे संस्थान की रोगी सेवा क्षमता में वृद्धि होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एम्स, पटना से नाथूपुर तक 4 लेन सड़क के निर्माण के लिए राज्य सरकार आवश्यक सहयोग एवं समन्वय सुनिश्चित करेगी, ताकि मरीजों, उनके परिजनों तथा आम नागरिकों को बेहतर और सुगम आवागमन की सुविधा उपलब्ध हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि बर्न मरीजों के उपचार के लिए स्किन स्टोरेज (त्वचा भंडारण) की व्यवस्था विकसित करने में भी राज्य सरकार पूर्ण सहयोग करेगी। उन्होंने कहा कि इससे गंभीर रूप से झुलसे मरीजों को बेहतर एवं समयबद्ध उपचार उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। मुख्यमंत्री ने बर्न वार्ड जाकर वहां इलाज करा रहे मरीजों से मुलाकात की और उनसे उपलब्ध चिकित्सकीय सुविधाओं की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने मरीजों एवं परिजनों का मनोबल बढ़ाया और शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। मुख्यमंत्री ने डिपार्टमेंट ऑफ न्यूक्लियर मेडिसिन में पेट-सिटी रूम, स्पेक्ट सिटी रूम, रेडियो फामेर्सी लैब का निरीक्षण किया। साथ ही डिविजन ऑफ ऑन्कोलॉजी, डिपार्टमेंट ऑफ एनॉटोमी सहित ओ०पी०डी० का भी निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं की विस्तृत जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने एम्स परिसर स्थित तालाब का भी अवलोकन किया। उन्होंने निर्देश दिया कि तालाब का जीर्णोद्धार कर उसे पर्यटन एवं आकर्षण का केंद्र बनाने की दिशा में कार्य किया जाए, ताकि यह स्थान पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ लोगों के लिए एक सुंदर एवं उपयोगी स्थल के रूप में विकसित हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और चिकित्सा अधोसंरचना को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तथा एम्स, पटना के विकास से जुड़े सभी आवश्यक कार्यों में राज्य सरकार सक्रिय सहयोग प्रदान करेगी। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव लोकेश कुमार सिंह, स्वास्थ्य विभाग के सचिव कुमार रवि, स्वास्थ्य विभाग के विशेष सचिव अरविंद कुमार चौधरी, बिहार मेडिकल सर्विसेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के प्रबंधक निदेशक सुब्रत कुमार सेन आदि उपस्थित थे।

कटिहार में 12 सितंबर को लगेगी राष्ट्रीय लोक अदालत

कटिहार, 05 जुलाई : बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, पटना के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कटिहार के अवर न्यायाधीश-सह-सचिव कमलेश सिंह देबू के नेतृत्व में रविवार को प्रखंड कार्यालय स्थित कृषि विभाग के सभागार में नालसा के तत्वावधान में एक विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बाल विवाह की रोकथाम, पीड़ितों के पुनर्वास, मुफ्त कानूनी सहायता और आगामी 12 सितंबर को होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के प्रति लोगों को जागरूक करना था। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर अवर न्यायाधीश-सह-सचिव कमलेश सिंह देबू ने कहा कि विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा संचालित योजनाएं समाज के कमजोर और जरूरतमंद लोगों को न्याय दिलाने का एक सशक्त माध्यम हैं।

उन्होंने आम लोगों से इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की ताकि बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रभावी रोक लगाई जा सके। साथ ही उन्होंने 12 सितंबर को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत की विस्तृत जानकारी देते हुए सभी से अपने सुलहनीय लंबित मामलों के निष्पादन और लोक अदालत का लाभ उठाने की अपील की।

कार्यक्रम में प्रतिनियुक्त पैनल अधिवक्ता गुंजन कुमार सिंह ने विधिक सेवा प्राधिकार अधिनियम, बाल विवाह निषेध कानून, पीड़ितों के संरक्षण, भरण-पोषण और पुनर्वास से संबंधित कानूनी प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित सेविका-सहायिकाओं और प्रखंड कर्मियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। वहीं, एलएडीसी विजय कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि समाज में कानूनी जागरूकता का विस्तार ही बाल विवाह जैसी कुप्रथा को समाप्त करने का सबसे प्रभावी माध्यम है।

उन्होंने स्थायी लोक अदालत की कार्यप्रणाली और इसके माध्यम से मिलने वाले त्वरित एवं सुलभ न्याय की भी जानकारी दी। तटवासी समाज के सदस्य अमरेश कुमार सिन्हा और प्रदीप कुमार ने इस तरह के जागरूकता कार्यक्रमों को पंचायत स्तर तक पहुंचाने पर जोर देते हुए लोगों से बाल विवाह के विरुद्ध आगे आने और समाज को कुरीतियों से मुक्त बनाने का आह्वान किया। पारा विधिक स्वयंसेवकों ने विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सहायता के बारे में बताया।

लोक कलाकार डॉ. तीजन बाई के निधन पर बिहार विस अध्यक्ष ने शोक व्यक्त किया

देश प्राण संवाददाता

पटना, 05 जुलाई : बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार ने पंडवानी गायन की विश्वविख्यात लोक कलाकार तीजन बाई के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि तीजन बाई का निधन भारतीय लोककला और सांस्कृतिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

उन्होंने अपने अद्वितीय गायन, ओजपूर्ण प्रस्तुति और असाधारण कला-साधना के माध्यम से छत्तीसगढ़ की लोक नाट्य परंपरा 'पंडवानी' को विश्व मंच पर विशिष्ट पहचान दिलाई। उनका संपूर्ण जीवन भारतीय लोककला के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित रहा। उन्हें कला के क्षेत्र में योगदान के लिए

भारत सरकार द्वारा देश के द्वितीय नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। उनकी साधना आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। कला और संस्कृति के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान को देश सदैव श्रद्धापूर्वक स्मरण करेगा। डॉ प्रेम कुमार ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते परिजनों ने शक्ति प्रदान करने की कामना की।

गुमशुदा युवक को लेकर सियासत तेज, विधायक ने कहा, राजनीति नहीं, तलाश में सहयोग करें

दरभंगा, 05 जुलाई (हि.स.) : जिला अंतर्गत तारडीह प्रखंड की नदियामी पंचायत का एक युवक 26 जून से रहस्यमय परिस्थितियों में लापता है। परिजनों के अनुसार युवक हैदराबाद से ट्रेन के जरिए अपने गांव लौट रहा था, लेकिन रास्ते में ही उसका संपर्क टूट गया।

घटना के बाद परिजनों ने संबंधित थाने में गुमशुदगी की सूचना दी, किंतु कथित रूप से इसे रेलवे क्षेत्राधिकार का मामला बताकर स्थानीय स्तर पर अपेक्षित कार्रवाई नहीं की गई। दस दिन से अधिक समय बीत जाने के बावजूद युवक का अब तक कोई सुराग नहीं मिलने से परिवार की चिंता लगातार बढ़ती जा रही है।

इस बीच मामले ने राजनीतिक रंग भी ले लिया है। नदियामी पंचायत निवासी गौतम झा ने फेसबुक लाइव के माध्यम से पीड़ित मां और स्थानीय ग्रामीणों के साथ बातचीत करते हुए अलीनगर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों पर अब तक पर्याप्त पहल नहीं करने का आरोप लगाया। उन्होंने जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर सवाल उठाते हुए गुमशुदा युवक की बरामदगी के लिए प्रभावी प्रयास किए जाने की मांग की।

उधर, अलीनगर की विधायक मैथिली ठाकुर ने स्वतंत्र लेखक मनीष कुमार से फोन पर हुई बातचीत में गौतम झा की टिप्पणी पर कड़ी आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि ऐसे संवेदनशील मामले में सोशल मीडिया पर आरोप-प्रत्यारोप करने के बजाय सभी लोगों को गुमशुदा युवक की तलाश में सहयोग करना चाहिए। विधायक ने कहा कि पीड़ित मां की भावनाओं को सोशल मीडिया का माध्यम बनाना उचित नहीं है।

नहीं रहे कॉमरेड आरएन ठाकुर

भागलपुर, 05 जुलाई : ऐक्टू के राज्य महासचिव और भाकपा (माले) बिहार के संस्थापक नेतृत्वकारियों में से एक कॉमरेड आरएन ठाकुर (84 वर्ष) का रविवार को सुबह करीब 9 बजे इलाज के दौरान पीएमसीएच में निधन हो गया। बीते 25 जून को ब्रेन स्ट्रोक के बाद बेहोशी की स्थिति में उन्हें पीएमसीएच में भर्ती कराया गया था। वे ऐक्टू के राष्ट्रीय सचिव व दर्जनों सम्बद्ध यूनियनों के संस्थापक भी थे। कॉमरेड आरएन ठाकुर की अंतिम यात्रा में शामिल होने के लिए पटना प्रस्थान करते हुए ऐक्टू के राज्य सचिव व भाकपा (माले) के राज्य कमिटी सदस्य मुकेश मुक्त ने अत्यंत ही भारी मन से उनके निधन को मजदूर आन्दोलन के साथ ही वामझ्रजनवादी आन्दोलन की

अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि उनके साथ ढेर सारी स्मृतियां जुड़ी हुई है। पूरा मजदूर आंदोलन हमेशा उनका शुक्रगुजार रहेगा। गरीबों झ्र मजदूरों के हक - अधिकार और सम्मान की हर लड़ाई में वे हमेशा जीवित रहेंगे। आज के दौर में जब मजदूर वर्ग सबसे गहरे संकट का सामना कर रहा है, मेहनतकशों पर सबसे ज्यादा तीखे और सुनियोजित शासकीय हमले हो रहे हैं, ऐसे में आपकी कमी बहुत खलेगी। अलविदा प्रिय कॉमरेड। अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि। उनके निधन की खबर मिलते ही ट्रेड यूनियन और वामझ्रजनवादी कतारों में शोक की लहर दौड़ गयी। ऐक्टू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एसके शर्मा, राज्य सचिव व भाकपा (माले) के राज्य कमिटी सदस्य मुकेश मुक्त, नगर सचिव विष्णु कुमार मंडल, पूर्व नगर सचिव सुरेश प्रसाद साह, जिला उपाध्यक्ष अरुणाभ शेखर व मनोज कृष्ण सहाय, जिला संयुक्त संयुक्त सचिव अमर कुमार व राजेश कुमार, असंगठित कामगार महासंघ के राज्य सचिव सुभाष कुमार आदि भागलपुर नेताओं कार्यकताओं सहित राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय नेतृत्वकारियों ने विभिन्न माध्यमों से गहरा शोक व्यक्त किया।

पटना : स्वास्थ्य सेवाओं में प्रभावी संवाद से मरीजों का भरोसा बढ़ता है : विजय चौधरी

पटना, 05 जुलाई (हि.स.) : अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) पटना में रविवार को राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान परीक्षा बोर्ड (एनबीईएमएस) की ओर से ₹स्वास्थ्य सेवाओं में संवाद विषय पर राष्ट्रीय शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस दौरान चिकित्सा सेवाओं में प्रभावी संवाद, मरीज-केंद्रित उपचार और चिकित्सकों की संवाद क्षमता को सुदृढ़ बनाने पर विशेष जोर दिया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि प्रभावी संवाद मरीज और चिकित्सक के बीच विश्वास का सबसे मजबूत आधार होता है। आज संवाद कौशल हर पेशे के लिए आवश्यक है, लेकिन चिकित्सा क्षेत्र में इसका महत्व सबसे अधिक है। यदि चिकित्सक मरीज की बात ध्यानपूर्वक सुनें और उसे सरल एवं स्पष्ट भाषा में बीमारी तथा उपचार की जानकारी दें, तो मरीज का भरोसा बढ़ता है और उपचार भी अधिक प्रभावी बनता है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ संवाद वही है, जिसमें व्यक्ति अपनी बात स्पष्ट रूप से सामने रख सके और दूसरे की बात को भी संवेदनशीलता के साथ समझ सके। चिकित्सा पेशे की सफलता भी इसी पर निर्भर करती है कि मरीज चिकित्सक के व्यवहार, संवाद और उपचार से संतुष्ट होकर स्वस्थ महसूस करे। उपमुख्यमंत्री ने इस विषय पर राष्ट्रीय शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए पटना एम्स और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान परीक्षा बोर्ड की सराहना की। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में स्वास्थ्य सेवाओं में संवाद कौशल का महत्व और बढ़ेगा तथा चिकित्सा शिक्षा में भी इस विषय पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने संत कबीर का प्रसिद्ध दोहा, ₹ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए। औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए।₹ उद्धृत करते हुए कहा कि मधुर और संवेदनशील व्यवहार मरीज का मनोबल बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान परीक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. अभिजात सेठ ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कहा कि चिकित्सा शिक्षा में मरीज-केंद्रित दृष्टिकोण और संवाद कौशल को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था में तकनीकी दक्षता के साथ-साथ मानवीय संवेदनाएं और प्रभावी संवाद भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने मरीज-केंद्रित संवाद, चिकित्सकीय व्यवहार में सहानुभूति, कठिन परिस्थितियों में प्रभावी संवाद तथा आधुनिक संवाद प्रशिक्षण जैसे विषयों पर अपने विचार साझा किए।

मकेर में पुलिस ने की कार्रवाई, दो शराब भट्ठियां ध्वस्त

सारण, 05 जुलाई : जिले भर में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत मकेर थाना क्षेत्र में पुलिस टीम ने अवैध शराब माफियाओं के खिलाफ छापामारी की है। वरीय पुलिस अधीक्षक कार्यालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने अवैध शराब निर्माण के दो बड़े अड्डों भट्ठियों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। मौके से अवैध शराब बनाने के लिए रखी गई लगभग 5000 लीटर अर्धनिर्मित शराब को तुरंत नष्ट कर दिया गया, जबकि 500 लीटर तैयार अवैध देशी शराब को जप्त किया गया है। पुलिस प्रशासन ने साफ कर दिया है कि जिले में शराब के परिवहन, भंडारण और कारोबार को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और आने वाले दिनों में यह अभियान और तेज होगा। पुलिस ने आम जनता से भी अपील की है कि वे जागरूक नागरिक की भूमिका निभाएं। यदि उनके पास अवैध शराब से जुड़ी कोई भी जानकारी है, तो वे तुरंत जिला नियंत्रण कक्ष के हेल्पलाइन नंबर 9031036406 या स्थानीय पुलिस को सूचित करें।

खबरकोना

डाक हरिपुर में सीएम के प्रस्तावित सहयोग शिविर की तैयारियों का सांसद ने लिया जायजा

अररिया 05 जुलाई(हि.स.) : मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के 7 जुलाई को फारबिसगंज के डाक हरिपुर प्रस्तावित सहयोग शिविर की तैयारियों का सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने रविवार को जायजा लिया।उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर चल रही व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा संबंधित अधिकारियों एवं कार्यकताओं से तैयारियों की जानकारी प्राप्त की। सांसद ने कहा कि सहयोग शिविर के माध्यम से आमजन को विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ एक ही स्थान पर उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने निर्देश दिया कि कार्यक्रम में आने वाले लोगों की सुविधा, सुरक्षा, पेयजल, बैठक व्यवस्था, स्वच्छता, यातायात एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएँ समय पर और सुव्यवस्थित ढंग से सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के आगमन को लेकर सभी तैयारियां अंतिम चरण में हैं। यह कार्यक्रम क्षेत्र के विकास, जनकल्याण एवं आम नागरिकों की समस्याओं के त्वरित समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा । निरीक्षण के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हिन्दू साम्राज्य दिवस पर आरएसएस का पथ संचलन

अररिया 05 जुलाई : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जिला इकाई की ओर से रविवार को हिन्दू साम्राज्य दिवस के मौके पर भव्य पथ संचलन किया गया। जिला संघचालक सच्चिदानंद मेहता की अगुवाई में यह पथ संचलन फारबिसगंज प्लस टू स्तरीय ली अकादमी उच्च विद्यालय के खेल के मैदान से निकलकर राजेन्द्र चौक, छुआपट्टी, दीनदयाल चौक, सदर रोड,स्टेशन चौक होते हुए एलएन पथ होते हुए पुनः ली अकादमी के खेल के मैदान में संपन्न हुआ। स्वयंसेवक अपने पारंपरिक गणवेश में ढोल-नगाड़ों और शौर्य प्रदर्शन के साथ नगर में निकले पथ संचलन में आरएसएस के सैकड़ों स्वयंसेवक मौजूद रहे।जगह जगह स्वयंसेवकों पर फूल की बारिश कर स्वागत किया गया। मौके पर जिला संघचालक सच्चिदानंद मेहता ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हरेक साल छह उत्सव मनाती है।जिसमें से छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक को हर साल हिंदू साम्राज्य दिवस के रूप में मनाती है।यह उत्सव हिन्दू पंचांग के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन पूरे देश में आयोजित किया जाता है।मौके पर विद्वानों और वक्ताओं द्वारा शिवाजी महाराज के जीवन, उनके हिंदवी स्वराज्य के निर्माण और विदेशी आक्रांताओं के खिलाफ उनके संघर्ष पर विशेष चर्चा की गई।

सारण में पुलिस ने चलाया विशेष अभियान, 31 अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

सारण, 05 जुलाई : वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अपराधियों और शराब माफियाओं के खिलाफ विशेष अभियान चलाकर बीते 24 घंटे में सफलता हासिल की है। इस कार्रवाई के तहत जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों से कुल 31 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपियों में सात वारंटी, तीन शराब कारोबारी, नौ पियक्कड़, हत्या के प्रयास के तीन, दहेज हत्या का एक, अपहरण के दो और चोरी के तीन आरोपी शामिल हैं। अभियान के दौरान पुलिस ने एक अपहता को बरामद किया और एक ट्रक, एक स्कार्पियो व एक बाइक समेत 10 हजार रुपये नकद जब्त किए। इसके अलावा पुलिस ने 69.280 लीटर अवैध शराब देशी व विदेशी बरामद की है। वहीं, यातायात सुरक्षा और अपराध नियंत्रण के तहत सघन वाहन जांच चलाकर 67 वाहनों से कुल 88,000 रुपये का अर्थदण्ड वसूला। सारण पुलिस ने स्पष्ट किया है कि अपराधियों के खिलाफ यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

संघ के शताब्दी वर्ष पर छपरा में पथ संचलन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सारण, 05 जुलाई : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर छपरा में एक पथ संचलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की शुरूआत शहर के एक निजी विवाह भवन में ध्वज प्रणाम के साथ हुई। इसके बाद पूर्ण गणवेश में सजे स्वयंसेवकों ने घोष की धुनों पर कदम से कदम मिलाकर पथसंचलन शुरू किया। यह संचलन शहर के प्रमुख मार्गों, जैसे अस्पताल चौक, राम राज्य चौक, नारायण चौक, थाना चौक और नगरपालिका चौक सहित विभिन्न चौक-चौराहों से गुजरा। नगर भ्रमण के दौरान जगह-जगह स्थानीय नागरिकों द्वारा स्वयंसेवकों पर पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया गया। विभिन्न मार्गों से होते हुए यह पथ संचलन पुनः विवाह भवन पहुंचकर समाप्त हो गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित विभिन्न अनुषांगिक संगठनों के कार्यकर्ता, स्वयंसेवक उपस्थित थे, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया।

सुपौल में हाईवे किनारे मिला अज्ञात व्यक्ति का शव, जांच में जुटी पुलिस

सुपौल, 05 जुलाई (हि.स.) : जिले के किशनपुर थाना क्षेत्र में रविवार दोपहर उस समय सनसनी फैल गई, जब एनएच-27 किनारे बीएसएपी भर्ती प्रशिक्षण केंद्र के सामने एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद हुआ। शव मिलने की सूचना फैलते ही आसपास के लोगों की भीड़ घटनास्थल पर जुट गई। जानकारी के अनुसार, दोपहर करीब 2 बजे राहगीरों ने सड़क किनारे एक व्यक्ति का शव पड़ा देखा। इसकी सूचना तत्काल किशनपुर थाना पुलिस को दी गई।

सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष ज्ञान रंजन पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर आसपास के लोगों से पहचान कराने का प्रयास किया, लेकिन समाचार लिखे जाने तक मृतक की पहचान नहीं हो सकी। इसके बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजने की प्रक्रिया शुरू की गई, ताकि मौत के कारणों का पता लगाया जा सके।फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि व्यक्ति की मौत किन परिस्थितियों में हुई और वह वहां कैसे पहुंचा।

मामले को लेकर क्षेत्र में तरह-तरह की चचाएं हो रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि शव मिलने से इलाके में दहशत और कौतूहल का माहौल बना हुआ है। किशनपुर थानाध्यक्ष ज्ञान रंजन ने बताया कि मृतक की पहचान सुनिश्चित करने के लिए आसपास के थाना क्षेत्रों में दर्ज गुमशुदगी के मामलों का मिलान कराया जा रहा है।

भारत की सबसे बड़ी बुलेट ट्रेन की सुरंग के लिए उतारी गई टीबीएम

मुंबई और अहमदाबाद बुलेट ट्रेन की सुरंग का काम शुरू

मुंबई, 05 जुलाई : मुंबई-अहमदाबाद हाईस्पीड रेलवे (बुलेट ट्रेन) परियोजना के लिए, पहली टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) ने आज विखरोली शाफ़्ट से बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में निमार्णाधीन मुंबई स्टेशन की ओर सुरंग खोदने का काम शुरू कर दिया। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस को इस कार्य का औपचारिक शुभारंभ करना था लेकिन मौसम की प्रतिकूलता और रेड अलर्ट को देखते हुए कार्यक्रम कल देर रात रद्द कर दिया गया लेकिन मशीन ने सामान्य रूप से आज काम शुरू कर दिया।

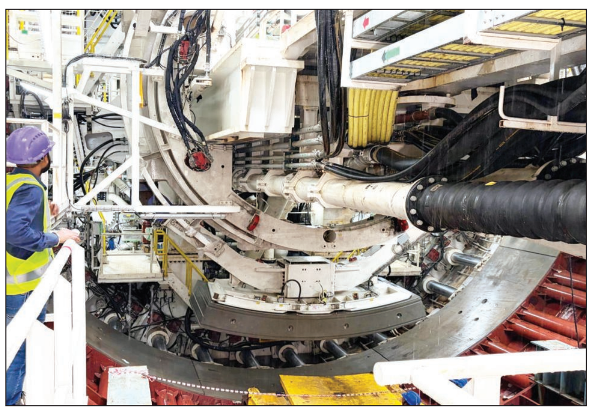

परियोजना को क्रियान्वित कर रहे राष्ट्रीय हाईस्पीड रेलवे निगम ने आज यहां बताया कि कुल 21 किलोमीटर लंबे भूमिगत सुरंग सेक्शन में से मुंबई में सावली (घंसोली) और बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) के बीच 16 किलोमीटर का हिस्सा टनल बोरिंग मशीन द्वारा बनाया जाएगा। बाकी 5 किलोमीटर का हिस्सा न्यू आस्ट्रियन टनलिंग मेथड (एनएटीएम) का इस्तेमाल करके पहले ही पूरा किया जा चुका है। विखरोली से लॉन्च की गई टीबीएम 6 कि.मी. लंबी एकल-ट्यूब सुरंग की खुदाई करेगी, जिसे बुलेट ट्रेन के अप और डाउन दोनों ट्रैकों को समायोजित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह मशीन बहुमंजिला इमारतों, सड़कों, मीठी नदी और अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे सहित घने शहरी क्षेत्रों के नीचे से गुजरेगी।

यह टीबीएम भारत में रेल सुरंग बनाने के लिए इस्तेमाल की गई अब तक की सबसे बड़ी मशीनों में से एक है। इसमें 13.6 मीटर व्यास (4 मंज़िला इमारत की ऊँचाई के बराबर) वाला एक बहुत बड़ा कटरहेड है, इसका वजन 3,100 टन (500 एशियाई हाथियों के बराबर) है और इसकी कुल लंबाई 96 मीटर (एक फुटबॉल मैदान की लंबाई (105 मीटर) के बराबर) है। मशीन में कटर व्हील/हेड, मेन बियरिंग, जॉ क्रशर, इरेक्टर, मेन शील्ड, टेल शील्ड और चार विशेष गैन्ट्री सहित कई प्रमुख घटक शामिल हैं जो सुरंग संचालन में मदद करते हैं। कटर व्हील 4 राउन्ड प्रति मिनट, यानी 4 चक्कर प्रति मिनट की गति से घूमता है।

उपयोग में लाई जा रही मशीन मिक्सशील्ड टीबीएम है, जो एक उन्नत स्लरी-प्रकार की टनलिंग प्रणाली है जिसे विशेष रूप से मिश्रित भूभाग और उच्च भूजल दबाव की स्थितियों में बड़े व्यास की सुरंगों की खुदाई के लिए डिजाइन किया गया है। मिक्सशील्ड तकनीक खुदाई के दौरान सुरंग के अग्रभाग को स्थिर करने के लिए दबावयुक्त बेंटोनाइट घोल का उपयोग करती है।

तीसरी बार शादी के बंधन में बंधे आमिर खान-गौरी स्प्रैट

मुंबई, 05 जुलाई : बॉलीवुड के 'मिस्टर परफेक्शनिस्ट' आमिर खान ने अपनी गर्लफ्रेंड गौरी स्प्रैट के साथ शादी रचा ली है। 5 जुलाई को मुंबई के पाली हिल स्थित अपने आवास पर दोनों ने बेहद निजी माहौल में स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत कोर्ट मैरिज की। मूसलाधार बारिश के बीच आयोजित इस समारोह में केवल परिवार के सदस्य और करीबी दोस्त शामिल हुए।

शादी के बाद दोनों परिवारों ने इस खास मौके का सादगी के साथ जश्न मनाया। शादी के दौरान आमिर के घर के बाहर सुबह से ही हलचल देखने को मिली। बारिश के बावजूद पैपराजी बड़ी संख्या में वहां मौजूद रहे। समारोह में निर्देशक आशुतोष गोवारिकर समेत कुछ करीबी मेहमान पहुंचे, जबकि रिपोर्ट्स के अनुसार अंबानी परिवार के सदस्य भी नवविवाहित जोड़े को शुभकामनाएं देने पहुंचे। आमिर और गौरी ने शुरूआत से ही इस शादी को पूरी तरह निजी रखने का फैसला किया था। सूत्रों के मुताबिक, शादी में केवल 100 से 150 चुनिंदा मेहमानों को ही आमंत्रित किया गया था। किसी भव्य होटल या आलीशान आयोजन के बजाय आमिर ने अपने घर को ही इस खास मौके के लिए चुना। शादी के हर इंतजाम, मेहमानों की सूची से लेकर लंच मेन्यू तक, आमिर और गौरी ने खुद तय किया। अभिनेता पहले ही स्पष्ट कर चुके थे कि वे इस अवसर को बिना किसी तामझाम के पारिवारिक समारोह के रूप में मनाना चाहते हैं।

राजस्थान के श्रीगंगानगर में सेना के ट्रक और एम्बुलेंस में टक्कर, तीन की मौत

श्रीगंगानगर(राजस्थान), 05 जुलाई : श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ क्षेत्र में आज सुबह नेशनल हाइवे-62 पर सेना के ट्रक और एक निजी एम्बुलेंस के बीच भिड़ंत हो गई। हादसे में एम्बुलेंस के परखच्चे उड़ गए। दुर्घटना में एम्बुलेंस में सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद हाइवे पर अफरा-तफरी मच गई और कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित रहा। यह हादसा सूरतगढ़ सदर थाना क्षेत्र में 22 एलजीडब्लयू के पास हुआ।

हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सदर थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से राहत एवं बचाव अभियान शुरू कराया। गंभीर रूप से घायल दोनों लोगों को तत्काल सूरतगढ़ के राजकीय अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस की प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, तीनों मृतक हिंदुमलकोट थाना क्षेत्र के 5 बी कोनी गांव के निवासी बताए जा रहे हैं। रक्षा जनसंपर्क अधिकारी, राजस्थान, लेफ्टिनेंट कर्नल निखिल धवन के अनुसार, तड़के करीब 5:30 बजे सूरतगढ़झश्रीगंगानगर मार्ग पर केंचियां कस्बे के निकट एक सिविल एम्बुलेंस ट्रक को ओवरटेक करने के दौरान सामने से आ रहे सेना के एएलएस (एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट) वाहन से टकरा गई। हादसे में तीन नागरिकों की मृत्यु हो गई, जबकि घायलों को तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराकर अस्पताल पहुंचाया गया। उन्होंने बताया कि पुलिस घटनास्थल पर मौजूद है और आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है। भारतीय सेना ने मृतकों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए जांच में नागरिक प्रशासन को पूर्ण सहयोग देने की बात कही है।

आज विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह जाएंगे जेनेवा

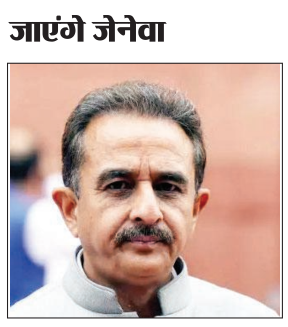

नई दिल्ली, 05 जुलाई : केंद्रीय विदेश और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह सोमवार को जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर होने वाले दो दिवसीय वैश्विक संवाद (ग्लोबल डॉयलाग) में भाग लेने स्विट्ज़रलैंड जाएंगे। उनके साथ भारतीय प्रतिनिधिमंडल भी जाएगा। विदेश मंत्रालय ने रविवार को बताया कि केंद्रीय मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह 06 से 07 जुलाई तक इस वैश्विक संवाद में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे।

स्कूली बच्चों के लिए 'अनुचित' कंटेंट वाली दो विवादित किताबें खरीदने पर दो अधिकारी सस्पेंड

श्रीनगर, 05 जुलाई : उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के आदेश पर स्कूल शिक्षा विभाग (एसईडी) के आठ अधिकारियों को स्कूल के बच्चों के लिए 'अनुचित' कंटेंट वाली दो किताबें खरीदने और उन्हें मंजूरी देने के आरोप में सस्पेंड कर दिया गया है। आतंकियों व अलगाववादियों का महिमा मंडन करने वाली इन दो किताबों का बीजेपी ने भी विरोध किया था।

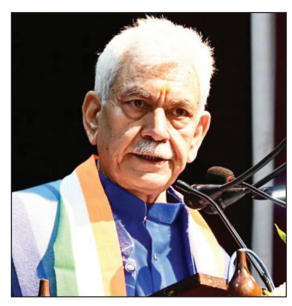

स्कूल शिक्षा विभाग के कमिश्नर सेक्रेटरी राम निवास शर्मा ने आदेश में कहा कि समग्र शिक्षा को 18,328 सरकारी स्कूलों और 394 पीएम श्री स्कूलों के लिए'उम्र के हिसाब से सही किताबें खरीदने के लिए लाइब्रेरी ग्रांट मिली थी और इसके लिए ईओई (रुचि की अभिव्यक्ति) जारी की गई थी। आदेश में कहा गया है कि उम्र के हिसाब से सही किताबों को चुनने के लिए जम्मू और कश्मीर दोनों डिवीजनों के एक्सपर्ट्स और एकेडेमिशियन्स की 4 सब-कमेटी बनाई गई थीं। आदेश में यह भी कहा गया है कि ये सब-कमेटी प्राइमरी क्लास सीरीज (1) अपर प्राइमरी क्लास सीरीज (2), सेकेंडरी क्लास सीरीज (3) और हायर सेकेंडरी क्लास सीरीज (4) के लिए थीं। आदेश में कहा गया है, इन चार सब-कमेटी ने 364 पब्लिशर्स की तरफ से भेजी गई 463 किताबों को चुना। इनमें से दो किताबों में अनुचित कंटेंट पाया गया।

कमिश्नर सेक्रेटरी ने आगे कहा कि इसके बाद इन किताबों को वापस ले लिया गया। इन दो किताबों में शामिल हैं 'पर्सनैलिटीज एंड लेजेंड्स ऑफ जे एंड के' (लेखकः हिलाल अहमद और संतोष मीणा, पब्लिशरः ओबेरॉय बुक सर्विस, जम्मू) और 'ग्रेट पर्सनैलिटीज ऑफ जम्मू एंड कश्मीर' (लेखकः डॉ. सुशांत गिरी, पब्लिशरः अनुराग प्रकाशन, दिल्ली)।

आदेश में कहा गया है यह देखा गया है कि सीरियल-क में बताई गई 123 किताबें जम्मू, रामबन और उधमपुर जिलों में सप्लाई की गई थीं और सीरियल-क्क में बताई गई 128 किताबें जम्मू और बारामूला जिलों में सप्लाई की गई थीं। शर्मा ने यह भी कहा कि विभाग के ध्यान में यह बात आई है कि इन किताबों में बहुत ही आपत्तिजनक कंटेंट है।

टनकपुर से कैलाश मानसरोवर यात्रा का पहला दल रवाना, धामी ने दिखाई हरी झंडी

चम्पावत, 05 जुलाई : उत्तराखंड से संचालित कैलाश मानसरोवर यात्रा का रविवार को टनकपुर से 'हर-हर महादेव' और 'बम-बम भोले' के जयघोष के बीच विधिवत शुभारंभ हो गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शारदा पर्यटक आवास गृह से 49 तीर्थयात्रियों के पहले जत्थे को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और सभी यात्रियों की सुरक्षित एवं सफल यात्रा की कामना की।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि कैलाश मानसरोवर यात्रा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना, सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय समरसता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भगवान शिव की कृपा से ही श्रद्धालुओं को इस पवित्र यात्रा का अवसर मिलता है तथा यात्रा के दौरान श्रद्धा और धैर्य बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कैलाश मानसरोवर यात्रा सीमांत क्षेत्रों के विकास का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। इससे स्थानीय पर्यटन, व्यापार, परिवहन और रोजगार को बढ़ावा मिलता है। मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं से स्थानीय हस्तशिल्प एवं उत्पादों की खरीद कर सीमांत क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का भी आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में सनातन संस्कृति के संरक्षण और प्राचीन मंदिरों के पुनरुद्धार के लिए व्यापक कार्य किए जा रहे हैं, जिससे भारत की आध्यात्मिक विरासत को नई पहचान मिल रही है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री का पारंपरिक छोलिया नृत्य के साथ स्वागत किया गया और पुलिस ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया। उन्होंने सभी तीर्थयात्रियों का रुद्राक्ष की माला और भगवान शिव का पटका पहनाकर अभिनंदन किया तथा उनसे संवाद भी किया।

मुंबई में भारी बारिश को लेकर मौसम विभाग ने जारी किया रेड अलर्ट

मुंबई, 05 जुलाई : मौसम विभाग ने आज रविवार को ग्रेटर मुंबई इलाके में भारी बारिश के लिए 'रेड अलर्ट' जारी किया है। पूरे दिन मुंबई में मूसलाधार बारिश होने की उम्मीद है। पिछले दो दिनों से हो रही तेज बारिश आज भी जारी रहेगी। लोगों से कहा गया है कि जब तक बहुत जरूरी न हो, बाहर न निकलें। वहीं भारी बारिश और तेज हवाओं के बीच एक दुकान पर पेड़ गिरने से 63 साल के व्यक्ति की मौत हो गई। मरने वाले की पहचान यूनुस कुंडावाला के तौर पर हुई है। यह घटना रविवार दोपहर कुर्ला के नवपाड़ा इलाके में गोम्स गाउन बिल्डिंग के पास हुई। आईएमडी के मुताबिक पूरे दिन भारी बारिश का अनुमान है। मुंबई शहर और आस-पास के इलाकों में काफी बारिश होने की उम्मीद है। मुंबई लोकल ट्रेन नेटवर्क अपने तय समय से पीछे चल रही है।

मप्र के शिवपुरी में डिफेंस प्लांट का हुआ शिलान्यास

शिवपुरी, 05 जुलाई : मध्य प्रदेश का शिवपुरी भी देश के उभरते रक्षा उत्पादन केंद्रों में शामिल होने जा रहा है।

रविवार को यहां केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकासमंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अदाणी समूह के लगभग 2,500 करोड़ रुपये के निवेश से बनने वाली अत्याधुनिक डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग प्लांट का शिलान्यास किया।

केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आज शिवपुरी के इतिहास में नई इबारत लिखी जा रही है। यह सिर्फ एक डिफेंस फैक्टरी का शिलान्यास नहीं, बल्कि जिले को औद्योगिक विकास, रक्षा उत्पादन और आत्मनिर्भर भारत के विजन से जोड़ने वाला ऐतिहासिक क्षण है। उन्होंने कहा कि जब भी देश की रक्षा के लिए युद्ध होगा, तब शिवपुरी में बने हथियार और गोला-बारूद देश की सीमाओं तक पहुंचेंगे और युद्ध में दुश्मन का सीना चीरेंगे।

यहां के युवाओं की मेहनत से तैयार होने वाले हथियार और मिशन-रेडी मिसाइलें दुश्मन का मुकाबला करेंगी और भारतीय सेना की ताकत बढ़ाएंगी। यह परियोजना देश की रक्षा क्षमता को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाएगी। इस अवसर पर सिंधिया ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से जिले के लिए करीब 100 करोड़ रुपये की सड़क परियोजना स्वीकृत करने की मांग की। उन्होंने कहा कि शिवपुरी भगवान शिव की नगरी है, इसलिए यहां 108 फीट ऊंची भगवान शिव की भव्य प्रतिमा स्थापित की जानी चाहिए।

खबरकोना

मुंबई एयरपोर्ट पर 4 किलोग्राम सोना के साथ महिला यात्री गिरफ्तार

मुंबई, 05 जुलाई : राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) की टीम ने मुंबई एयरपोर्ट पर 4 किलोग्राम सोने के साथ दुबई से आई महिला को गिरफ्तार किया है। बरामद सोने की कीमत घरेलू बाजार में कीमत लगभग 6 करोड़ रुपये आंकी गई है। इस मामले की गहन छानबीन डीआरआई टीम कर रही है। मामले की जांच कर रहे डीआरआई अधिकारी ने रविवार को बताया कि उनकी टीम को मुंबई एयरपोर्ट पर तस्करी के सोने सहित महिला के आने की पूर्व सूचना मिली थी। इसी के आधार पर उनकी टीम ने मुंबई एयरपोर्ट पर निगरानी रखी थी। सूचना के मुताबिक जैसे ही महिला यात्री दुबई से आई फ्लाईट से मुंबई एयरपोर्ट पर उतरी। डीआरआई टीम ने महिला की तलाशी ली तो उसके पैंट के अंदर तस्करी का सोना मिला, जिसे जब्त कर लिया गया और महिला को कस्टम एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। अब तक की छानबीन में पता चला है कि महिला यात्री कूरियर के रुप में काम कर रही थी, इस मामले में संभावित तस्करी नेटवर्क की जांच की जा रही है।

कल दक्षिण कोरिया अमेरिका से चौथा अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट लॉन्च करेगा

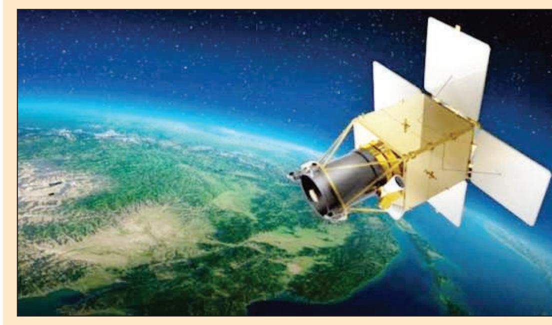

सियोल, 05 जुलाई : दक्षिण कोरिया मंगलवार को अपने चौथे मध्यम आकार के अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट (पृथ्वी पर नजर रखने वाला उपग्रह) को अमेरिका के कैलिफोर्निया स्थित वैंडेनबर्ग स्पेस फोर्स बेस से लॉन्च करने जा रहा है। यह उपग्रह स्पेसएक्स के फाल्कन 9 रॉकेट के माध्यम से अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। दक्षिण कोरिया की सरकारी समाचार एजेंसी योनहाप न्यूज और तुर्किए की सरकारी समाचार अनाडोलू एजेंसी ने कोरिया एयरोस्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (कासा) के हवाले से बताया कि, लगभग 500 किलो वजनी यह सैटेलाइट मंगलवार शाम 4:10 बजे (कोरिया समयानुसार) लॉन्च किया जाएगा। सभी तकनीकी जांच और ईंधन भरने की प्रक्रिया पिछले महीने पूरी कर ली गई है, जिसके बाद इसे लॉन्च के लिए तैयार घोषित किया गया। एजेंसी ने बताया कि लॉन्च के करीब 2 घंटे 22 मिनट बाद यह सैटेलाइट रॉकेट से अलग होगा और लगभग 31 मिनट बाद नॉर्वे के स्वालबार्ड ग्राउंड स्टेशन के जरिए अपना पहला सिग्नल प्राप्त करेगा। इस उपग्रह में दक्षिण कोरिया में विकसित पेलोड लगाए गए हैं, जिनमें एक हाई-रिजॉल्यूशन ऑब्जर्वेशन कैमरा शामिल है, जो हर तीन दिन में पूरे कोरियाई प्रायद्वीप की तस्वीरें लेने में सक्षम है। सरकारी योजना के अनुसार, इस सैटेलाइट का उपयोग कृषि, वन प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन अध्ययन और सार्वजनिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में किया जाएगा। उपग्रह लगभग 888 किलोमीटर की ऊंचाई पर अपनी कक्षा में स्थापित होने के बाद चार महीने के प्रारंभिक परीक्षण चरण से गुजरेगा और अगले वर्ष की पहली छमाही तक पूरी तरह से संचालन में आ जाएगा।

प्रख्यात लोक कलाकार डॉ. तीजन बाई पंचतत्व में विलीन

रायपुर/दुर्ग, 05 जुलाई : पद्म विभूषण और पद्मश्री से सम्मानित प्रख्यात लोक कलाकार और पंडवानी गायिका डॉ. तीजन बाई रविवार दोपहर को पंचतत्व में विलीन हो गई। डॉ. तीजन बाई का उनके पैतृक गृह दुर्ग जिले के ग्राम गनियारी स्थित मुक्तिधाम में पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान हजारों की संख्या में पहुंचे लोगों ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। अंतिम संस्कार के दौरान लोक कलाकारों, शिष्यों और उपस्थित जनसमूह ने ह्लचोला माटी के हे राम, एकर का भरोसाङ्गह्व गीत गाकर अपनी प्रिय लोकगायिका को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पूरा वातावरण गमगीन था और हर आंख नम थी। डॉ. तीजन बाई को उनके मंझले बेटे दिलहरण पारधी ने मुखाग्नि दी। इस दौरान उनके पति तुलसी राम देशमुख भी मौजूद रहे। बताया गया कि तीजन बाई की अंतिम इच्छा थी कि वे सुहागिन के रूप में ही इस दुनिया से विदा लें। अंतिम दर्शन के लिए राजनीति और कला जगत की कई हस्तियां पहुंचीं। इनमें पद्मश्री उषा बारले, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल समेत अनेक जनप्रतिनिधि, कलाकार और उनके शिष्य शामिल रहे। सभी ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर छत्तीसगढ़ की इस महान लोक कलाकार को अंतिम प्रणाम किया।

गुवाहाटी में ब्रिक्स देशों की मादक पदार्थ निरोधक एजेंसियों के प्रमुखों की 6-7 जुलाई को बैठक

गुवाहाटी, 05 जुलाई : भारत अपनी ब्रिक्स अध्यक्षता के तहत 6-7 जुलाई को गुवाहाटी में ब्रिक्स देशों की मादक पदार्थ निरोधक एजेंसियों के प्रमुखों की बैठक की मेजबानी करेगा। इसमें ब्रिक्स सदस्य देशों की मादक पदार्थ निरोधक एजेंसियों के प्रमुख तथा वरिष्ठ अधिकारी भाग लेंगे। बैठक का उद्देश्य सदस्य देशों के बीच संस्थागत निरंतरता को सुदृढ़ करना तथा मादक पदार्थ नियंत्रण एजेंसियों के बीच ऑपरेशनल स्तर पर सहयोग को और बढ़ावा देना है। वैश्विक मादक पदार्थ तस्करी का परिदृश्य पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बदला है। सिंथेटिक ड्रग्स, न्यू साइकोएक्टिव सब्सटेंस (एनपीएस), डार्कनेट के माध्यम से होने वाली तस्करी तथा क्रिप्टोकरेंसी आधारित वित्तीय लेन-देन जैसी प्रवृत्तियों ने जटिल अंतरराष्ट्रीय चुनौतियां उत्पन्न की हैं।

अमरनाथ यात्राः उमड़ा आस्था का सैलाब, श्रद्धालुओं से रजिस्ट्रेशन कराने की अपील

6,700 श्रद्धालुओं का नया जत्था जम्मू से रवाना

जम्मू, 05 जुलाई : जम्मू स्थित भगवती नगर आधार शिविर से 6,700 से अधिक श्रद्धालुओं का एक नया जत्था दक्षिण कश्मीर हिमालय में स्थित अमरनाथ गुफा मंदिर के लिए कड़ी सुरक्षा के बीच रविवार तड़के रवाना हुआ।

अधिकारियों बताया कि 1,310 महिलाओं और 22 बच्चों समेत श्रद्धालुओं का यह जत्था दो अलग-अलग काफिलों में तड़के तीन बजे और तीन बजकर 40 मिनट पर जम्मू आधार शिविर से रवाना हुआ।

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने दो जुलाई को जम्मू से यात्रा को हरी झंडी दिखाई थी। उसके बाद जम्मू से कश्मीर के लिए रवाना होने वाला श्रद्धालुओं का यह चौथा जत्था है। इसके साथ ही जम्मू आधार शिविर से अब तक कुल 20,220 श्रद्धालु घाटी के लिए रवाना हो चुके हैं। तीन जुलाई को शुरू हुई 57 दिवसीय वार्षिक अमरनाथ यात्रा के पहले दो दिन में 26,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पवित्र गुफा मंदिर में दर्शन किए।

यह यात्रा अनंतनाग जिले के पारंपरिक 48 किलोमीटर लंबे पहलगाम मार्ग और गांदरबल जिले के 14 किलोमीटर के छोटे बालटाल मार्ग से एक साथ संचालित की जा रही है।

अधिकारियों ने बताया कि 152 वाहनों में सवार 2,590 श्रद्धालुओं का एक काफिला बालटाल आधार शिविर के लिए रवाना हुआ, जबकि 139 वाहनों में सवार 4,131 श्रद्धालुओं का एक अन्य काफिला पहलगाम आधार शिविर की ओर गया। जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने शनिवार को यात्रा पर जाने की योजना बना रहे गैर-पंजीकृत श्रद्धालुओं से अपनी यात्रा कुछ दिन के लिए स्थगित करने का आग्रह किया था। प्रशासन ने कहा कि श्रद्धालुओं की अप्रत्याशित भीड़ के कारण नौ जुलाई तक पंजीकरण के सभी 'स्लॉट' भर चुके हैं।

अधिकारियों ने यह भी घोषणा की कि रविवार से केवल पंजीकृत श्रद्धालुओं को ही कश्मीर की ओर जाने की अनुमति दी जाएगी और नए पंजीकरण के लिए कोटा उपलब्ध होने तक गैर- पंजीकृत श्रद्धालुओं को निर्धारित जांच चौकियों पर रोक दिया जाएगा।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : भारत की एकता और प्रगति के लिए समर्पित जीवन

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

आज, 6 जुलाई का दिन राष्ट्रवाद और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में विश्वास रखने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत ही विशेष है। आज हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जन्म-जयंती मना रहे हैं। उनका जीवन साहस और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व में विद्वता, जनसेवा और उच्च नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम था। आधुनिक भारत के कुछ ही नेताओं में इतने सारे गुण एक साथ देखने को मिलते हैं। श्यामा प्रसाद जी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जहां उन्हें सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन आसानी से मिल सकता था। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी की गिनती अपने समय के महान शिक्षाविदों में होती थी। लेकिन तमाम सुविधाओं के बावजूद श्यामा प्रसाद जी ने त्याग और राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना।

उनका दृढ़ विश्वास था कि चाहे अंग्रेजी शासन का विरोध हो, सांप्रदायिकता से लड़ाई हो या मानवीय संकटों का सामना, वे अपने समय की इन चुनौतियों के सामने मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते।

इस सफर में उन्हें कई गहरे व्यक्तिगत दुख भी झेलने पड़े। पहले उन्होंने अपने छोटे बच्चे को खोया और बाद में पत्नी का भी निधन हो गया। लेकिन इन दुखद परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने हौसले को कमजोर नहीं पड़ने दिया। उनका संकल्प और सशक्त हुआ, राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण और गहरा होता गया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना था।

देश के विभाजन के समय उन्होंने पश्चिम बंगाल को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ वर्षों बाद इसी उद्देश्य से उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर भी संघर्ष किया। जेल और नजरबंदी भी उन्हें रास्ते से डिगा नहीं सकी। जब नजरबंदी के दौरान उनका निधन हुआ, तब वे उन अनगिनत लोगों से बहुत दूर थे, जिनके लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे।

इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी व्यक्ति का सर्वोच्च बलिदान राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्मृति का हिस्सा बन जाता है। डॉ. मुखर्जी का बलिदान भी ऐसा ही था। आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि डॉ. मुखर्जी ने उस उद्देश्य के लिए अपना बलिदान दिया, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था। दशकों बाद, साल 2019 में आर्टिकल 370 और 35(अ) को हटाया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि थी।

डॉ. मुखर्जी ने हमेशा राष्ट्रहित और भारतीय मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसके लिए उन्होंने मजबूत संस्थानों का निर्माण किया और ऐसी व्यवस्थाएं बनाईं, जो उस समय की सोच से काफी आगे थीं। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने।